

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186422

UNIVERSAL
LIBRARY

गो-पालन



प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

मूल्य बारह आना ।

~~Published by~~
K. Mittra,
at The Indian Press, Ltd.,
Allahabad.

Printed by
A. Bose,
at The Indian Press, Ltd.,
Benares-Branch.

भूमिका

ईंग्लिस्तान आदि पाश्चात्य देशों में गौएँ बड़ी उन्नत दशा में हैं। वहाँ पर सभी गौएँ हृष्ट-पुष्ट, दुधार तथा निरोग हैं। दुधार गौओं से उनके मालिकों को इतना लाभ होता है कि उनका वध करना तो दूर रहा वे उनको तनिक भी दुःख देने का साहस नहीं करते।

पाश्चात्य देशों में गौओं की ऐसी उन्नत दशा होने का एकमात्र कारण यही है कि वहाँ के निवासी उनका पालन नई और वैज्ञानिक रीति से करते हैं। हमारे देश में इस प्रकार के नये और वैज्ञानिक साधन गो-पालकों को बिलकुल मालूम ही नहीं हैं। इसी लिए हमारे यहाँ गौओं की ऐसी शोचनीय दशा है।

इस ज्ञान के द्वारा हम गौओं पर उतना ही ध्यान करके जितना अब कर रहे हैं तिगुना और चौगुना दूध प्राप्त कर सकते हैं। हम इसके द्वारा चरागाहों की कमी को भी पूरा कर सकते हैं और बछड़ों को बहुत कम दूध देकर हृष्ट-पुष्ट रख सकते हैं। इसी ज्ञान के द्वारा हम चालीस और पचास सेर दूध देनेवाली गौओं को पैदा कर सकते हैं और इसी के द्वारा हम अपनी गौओं को बहुत से रोगों से बचा सकते हैं और रोगी होने पर उनका तुरन्त इलाज कर सकते हैं।

आजकल हम इन नई और उपयोगी बातों को बिना जाने अपनी गौश्रों की रक्षा नहीं कर सकते हैं और न उनसे लाभ ही उठा सकते हैं ।

इस किताब को हमने हिन्दी में इसी लिए लिखा है कि गो-पालन-सम्बन्धी नया और उपयोगी ज्ञान सर्वसाधारण में विशेष कर हमारे गाँव के किसानों और ग्वालों में फैल जावे ।

हमें आशा है कि पाठक हमारी त्रुटियों पर ध्यान न देकर इस किताब के लिखने में जो हमने धृष्टता की है उसे क्षमा करेंगे ।

अन्त में हम उन सब महानुभावों को धन्यवाद देते हैं जिनकी कृपा से हम ग्रन्थ को समाप्त कर सके ।

—ग्रन्थकार

विषय-सूची

प्रकरण	विषय	पृष्ठ
१	विषय-प्रवेश	१
२	अच्छी गौओं के लक्षण	११
३	गौओं की आयु	१६
४	गौओं की जातियाँ	२१
५	सद्व्यवहार की आवश्यकता	२६
६	गौओं का आहार	३५
७	हरा चारा और गोचरभूमि	४१
८	गौओं का घर	४६
९	गाय की सफाई	५५
१०	दूध और उसके गुण	५८
११	गौओं को दुहना	६४
१२	प्रजनन	७१
१३	गौओं को बर्धाना	८५
१४	बाँझ गौएँ	८१
१५	बच्चे का जन्म तथा पालन	८५
१६	अन्य देशों से शिक्षा	१०४
१७	पशु-चिकित्सा	११०

गो-पालन

पहिला प्रकरण

विषय-प्रवेश

भारत एक कृषिप्रधान देश है। यहाँ के तीन-चौथाई मनुष्य खेती-बारी करके अपना जीवन निर्वाह करते हैं। इस-लिए गोवंश को इस देश में सदा से बड़ा महत्त्व प्राप्त है और वह आदरणीय ही नहीं बल्कि पूजनीय माना जाता है। बात यह है कि खेत जोतने का काम भारत में सदा से बैलों ही ने किया है और वे ही कर सकते हैं। यह सच है कि अरब आदि कुछ देशों में ऊँट से भी हल जोतने का काम लिया जाता है, तथा यूरोप, अमेरिका के कुछ देशों में इस काम को घोड़ा भी कर लेता है। परन्तु हिन्दुस्तान में इस काम को ऊँट व घोड़े नहीं कर सकते, और इसलिए हमारी खेती सदा गोवंश पर ही अवलम्बित रहेगी। इसके अतिरिक्त खेती के लिए खाद की भी परमावश्यकता होती है, और गाय का गोबर बहुत अच्छी खाद होती है। भूमि कितनी ही उपजाऊ हो जब तक उसे काफी और अच्छी खाद न मिलेगी फसल की पैदावार कभी अच्छी न होगी।

बैल किसान का प्रधान सहायक होने के कारण तथा गौ सर्वोत्तम आहार उत्पन्न करने के कारण भारतवर्ष में ही नहीं परन्तु अन्य देशों में भी जगत् के पोषक तथा रक्षक माने जाते थे । एजिप्ट में इसका बहुत आदर होता था । रोम और ग्रीस में तो बैल के मारनेवाले को प्राणदण्ड दिया जाता था ।

हमारे देश में गोवंश का जो विशेष महत्त्व है उसका एक और भी कारण है । भारत में, विशेषकर हिन्दू-धर्मावलम्बियों में, मांसभक्षियों की संख्या अधिक नहीं है । अतएव उनके लिए पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्द्धक पदार्थों में मुख्य वस्तु घी-दूध ही हैं । इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि हमारे देश में स्वस्थ और दुधार गाय अधिक संख्या में हों जिससे लोगों को शुद्ध दूध और घी सस्ते मिल सकें । परन्तु शोक का अवसर है कि यहाँ वे इतने महँगे हैं कि साधारण मनुष्यों को तो उनके दर्शन भी दुर्लभ होते जा रहे हैं ।

हमारे पूर्वज गोवंश की महिमा को ठीक-ठीक समझ गये थे । वे जानते थे कि उसका पालन उचित रीति से करने पर ही देश धनधान्यसम्पन्न हो सकता है । इसी लिए हमारे यहाँ गोरक्षा धर्म का एक मुख्य अङ्ग माना गया था और गोहत्या इतना बड़ा पाप । परन्तु लिखते हुए लज्जा आती है कि इस समय हम लोग अपने गोवंश का पालन ऐसी बुरी तरह करते हैं कि वह गोवध के पाप से भी अधिक भयङ्कर है । हे गोरक्षको, गौमाता पर मर मिटनेवालो, ज़रा अपनी

गौओं की ओर तो देखो । देखो तो तुम जिसे बड़े अभिमान के साथ माता कहते हो वह कितना कष्ट उठा रही है । ज़रा शहरों के ग्वालों के यहाँ जाकर देखो गौओं की क्या दशा है ।

वे लाखों की संख्या में भूखीं मर रही हैं, पर हम उनके भोजन पर कुछ भी ध्यान नहीं देते । हम दोनों समय अपनी गाय का बूँद-बूँद दूध निचोड़ लेते हैं पर उस बछड़े का कुछ भी खयाल नहीं करते जिसके लिए ईश्वर ने गाय के थनों में दूध पैदा किया है । उस लुधापीड़ित बच्चे को हम दोनों समय वैसे ही बाँध देते हैं । ऐसी अवस्था में बच्चे बहुत निर्बल तथा दुबले होते हैं । न जाने कितने तो अकाल ही मृत्यु के शिकार हो जाते हैं । केवल बम्बई में ही १८२४, १८२५ में २१,७३३ गाय और भैंस के बच्चे दुर्व्यवहार के कारण ही मर गये । जो बचते हैं वे भी बड़े होकर किसी काम के नहीं होते । मुश्किल से सेर आध सेर दूध देते हैं जिससे उन्हें रखने का खर्चा भी नहीं निकलता । इसी तरह की गायें भारस्वरूप हो जाती हैं और अन्त में क़साई के हाथ बिक-कर मुक्ति पाती हैं ।

तीन लाख गौएँ तो प्रतिवर्ष रोग के कारण मर जाती हैं । इनकी चिकित्सा का हम कुछ भी प्रबन्ध नहीं करते ।

बङ्गाल में ग्वाले बहुधा दूसरे बियान की गायों को ख़रीदते हैं । फूके की क्रिया से वे उनसे छः सात या आठ महीने तक दूध प्राप्त करते हैं, जिससे उनका खून भी दूध

बनकर उतर आता है और वे दो-तीन साल तक बच्चा जमने के लायक नहीं रहतीं। दूध बन्द हो जाने के बाद वे कृसाई को बेच दी जाती हैं। इस प्रकार हजारों गायों का नित्य नाश हो रहा है।

संयुक्त-प्रान्त में ज़र्मींदार बहुधा बैल पैदा करने ही के लिए गाय रखते हैं। उनकी दृष्टि में गाय का कुछ मूल्य ही नहीं होता। बछिया को वे जन्म ही से बहुत कम दूध देते हैं और बड़ी होने पर गाय को भी भरपेट भोजन नहीं देते। फल यह होता है कि गायों की, और साथ ही साथ बैलों की भी, दशा दिन प्रतिदिन हीन होती जाती है।

गुजरात में ठेलेवाले बैलों को नुकीली लकड़ियों से इतना मारते हैं कि उनके खून निकल आता है। यदि इन बेचारों के ज़बान हो और इनसे पूछा जावे कि वे ऐसी दशा में जीना पसन्द करते हैं या मरना तो ये अवश्य कहेंगे कि मरना। इस प्रकार सैकड़ों गौएँ हमारे दुर्व्यवहार और असावधानी ही के कारण मरती हैं और लाखों हमारी अज्ञानता तथा दुर्व्यवहार के कारण बाँझ बनकर या दूध से हटकर कृसाइयों के हाथ विकती हैं। इन ही गौओं का हावड़ा के स्टेशन पर हिन्दुस्त्नान से बाहर भेजने के लिए सुखाया हुआ मांस पहिली जनवरी सन् १९२० से ३० जून १९२० तक अर्थात् छः महीने में ८५, ३४७ मन आया था और सन् १९१२-१९१३ में संयुक्त-प्रान्त में ब्रह्मा के लिए १,४३,३५८ गौएँ मारी गई थीं।

हम ही अपने हाथों अपने गोवंश का नाश कर रहे हैं। इन ही कारणों से केवल संयुक्त-प्रान्त में ही पाँच वर्ष में अर्थात् सन् १९०४ से १९०६ तक १६,८४,००० या लगभग बीस लाख गौएँ कम हो गईं। इसके साथ-साथ इनकी दूध देने की शक्ति भी बहुत कम हो गई है।

आईने-अकबरी में लिखा है कि मुगल-सम्राट् अकबर के समय में साधारण गाय भी बारह तेरह सेर दूध प्रतिदिन दिया करती थी। पर हमारी ही उपेक्षा के कारण आजकल वे बड़ी कठिनाई से प्रतिदिन सेर दो सेर दूध देती हैं।

भारत में आजकल प्रतिशत मनुष्यों के पीछे २२ गौएँ हैं। यदि हम दूसरे उन्नत देशों से अपने यहाँ की गो-संख्या या उनके दूध देने की शक्ति की तुलना करें तो हमारी आँखें खुल जावेंगी। अमेरिका के संयुक्त-राज्य में प्रतिशत मनुष्यों के पीछे ७६ गौएँ हैं, न्यूज़ीलैंड में १५०, आस्ट्रेलिया में २५६ और उर्गा में ५००।

यदि अच्छी, बुरी, बाँझ, रोगी आदि सब गौओं के दूध का औसत लगाया जावे तो प्रति गौ भारत में १ सेर, इंग्लैंड में १० सेर, डेन्मार्क में १० सेर और अमेरिका के संयुक्त-राज्य में ५ सेर दूध देती है।

इस क्षति का कारण हमारी मूर्खता, उपेक्षा और असावधानी के अतिरिक्त और क्या हो सकता है।

पाश्चात्य देशों के विद्वान् गोमहिमा को यथार्थ रूप में समझ गये हैं और उससे लाभ भी उठा रहे हैं। उन्होंने गोपालन-विधि में इतना सुधार किया है कि आज वहाँ की गौएँ प्रतिदिन तीस-पैंतीस सेर दूध और दो सेर मक्खन दे रही हैं। पाश्चात्य लोग गोभक्तक होते हुए भी अपनी गौओं को बड़ी अच्छी तरह से रखते हैं। वे उनके आराम का बड़ा ध्यान रखते हैं और उनको कभी कष्ट नहीं देते। वे उनके वंश और दूध की वृद्धि के सदा नये-नये साधन ढूँढ़ते रहते हैं। इसलिए वहाँ भारतवर्ष की तरह दुबली और लुधा-पीड़ित गौएँ नहीं दिखाई पड़तीं, वरन् हृष्ट-पुष्ट, निरोगी, सुन्दर और सुखी गौएँ ही दीख पड़ती हैं। यही कारण है कि अमेरिका और डेन्मार्क में दूध भारतवर्ष से कहीं सस्ता है, यद्यपि और चीजें यहाँ से चौगुनी महँगी हैं। पाश्चात्य लोगों से हम धर्मान्ध, धर्म के नाम पर लड़ मरनेवाले, भारत-वासियों को कुछ शिक्का लेनी चाहिए। मेरे ख़याल में गौ को दुःख देना तथा उसके साथ दुर्व्यवहार करना गोहत्या से भी भयानक पाप है। क्योंकि दुर्व्यवहार ही गोवध का कारण है और ऐसा करनेवाले को भी कोई आर्थिक लाभ नहीं होता।

हमें अभी अपने किसानों और ज़मींदारों को समझाना और प्रत्यक्ष दिखा देना है कि यदि वे भी पाश्चात्य देशों के किसानों की तरह अपनी गौओं को सावधानी और वैज्ञानिक रीति से पालेंगे तो वे उनके लिए कहीं अधिक उपयोगी और

लाभदायक होंगी। उनके दूध की आय ही उनके खर्च से कहीं अधिक होगी और वास्तव में वे उनके लिए कामधेनु हो जावेंगी।

पाश्चात्य लोग उन गौओं पर जिनसे उनको ३० या ३५ सेर दूध प्राप्त होता है कठिनाई से एक रुपया रोज़ खर्च करते होंगे। अर्थात् प्रत्येक गौ से उनको केवल दूध ही में चार या पाँच रुपये रोज़ का लाभ होता है। गौ के बच्चे और गोबर अलग रहे।

पृथ्वी भर में कोई भी ऐसा मूर्ख न होगा जो खूब दुधार गौ को मांस के लिए काट डाले। यदि कोई खूब दुधार बहु-मूल्य गौ को काट भी डालेगा तो ऐसी गौ का मांस उसे बहुत महँगा पड़ेगा और बाज़ार में कोई भी इतना महँगा मांस न खरीदेगा। इस प्रकार क़साई को अन्त में नुक़सान उठाकर अपना काम बन्द करना पड़ेगा। सर्वदा रोगी निकम्मी बाँझ गौएँ ही काटी जाती हैं। संसार की कोई भी शक्ति ऐसी गौओं का वध नहीं रोक सकती; ये मारी ही जावेंगी। अतएव यदि हम अपनी गौओं की रक्षा करना और स्वयं भी लाभ उठाना चाहते हैं तो हमें उनका पालन उचित और वैज्ञानिक रीति से करना चाहिए। ऐसा करने से उनकी उपयोगिता बहुत बढ़ जावेगी और उनसे प्राप्त लाभों को देखकर उनके वध का मुसलमान भी साहस नहीं करेंगे और उनके वंश और नसल दोनों की ही वृद्धि होगी।

अब आप अच्छी तरह समझ गये होंगे कि गोवध और गोवंश की अवनति का कारण हम ही लोग हैं, और कोई नहीं। हमारी ही मूर्खता के कारण गौएँ मारी जाती हैं और हम उनसे पर्याप्त लाभ भी नहीं उठा सकते।

जब तक हम गौओं की दशा नहीं सुधारेंगे तब तक गोवध बन्द नहीं हो सकता। आप चाहे कितनी ही गौशालाएँ खोलिए, कितना ही गोवध के विरुद्ध आन्दोलन कीजिए, कितना ही मुसलमानों को समझाइए या उनसे लड़िए-भगड़िए, सरकार से भी कितना ही आवेदन-निवेदन कीजिए कि वह क़ानून बनाकर गोवंश की रक्षा करे, पर कुछ भी नहीं होगा। क्योंकि ईश्वर का यह नियम है कि वह दीन-हीन और अनुपयोगी चीज़ों का नाश कर डालता है।

ऐसे पशु को जिसके रखने में व्यय लाभ की अपेक्षा अधिक होता है संसार में कोई नहीं रखना चाहता। ऐसे पशु से सब छुटकारा ही पाना चाहते हैं। इसी कारण वे गौएँ जिनके रखने का खर्च उनसे प्राप्त दूध के मूल्य से अधिक है अन्त में क़साईख़ाने में पहुँच जाती हैं। और ठीक भी है। इनका खर्च कोई जाति वा मनुष्य कहाँ तक और कब तक उठा सकता है। महात्मा गान्धी के यंग इंडिया नाम के अख़बार में लिखा है कि “भारतवर्ष में ऐसे फ़ालतू गौ व बैलों पर १,७६,४०,००,००० रुपये प्रतिवर्ष व्यय किये जाते हैं”। देखिए इतना व्यय करने पर भी गोवध नहीं रुक सका।

अतएव गोरक्षा का एक-मात्र उपाय हमारे पास यही है कि हम गौ की उपयोगिता को बढ़ा दें। जब उससे हमको अधिक लाभ होगा तब हम उसको कसाई के हाथ बेचने पर कभी भी तय्यार नहीं होंगे और गोवध स्वयं ही बन्द हो जावेगा। फलते-फूलते पेड़ों को लकड़ी के लिए कौन काटता है ? केवल जङ्गली और सूखे ही पेड़ काटे जाते हैं।

अतएव हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम घर-घर किसानों तथा गोपालों को गोपालन की नवीन विधि की शिक्षा दें और जहाँ तक सम्भव हो गोवंश की उन्नति के नये-नये उपाय ढूँढ़ें। इसके केवल दो ही उपाय हो सकते हैं—

(१) हम गोपालन पर देशी भाषाओं में उत्तम-उत्तम और सस्ती पुस्तकें लिखें। इनके द्वारा जनता को गोपालन के नये और उत्तम ढंग मालूम हो जावेंगे। बहुधा प्रत्येक हिन्दू-कुटुम्ब में एक-दो गौएँ पाली जाती हैं। ये लोग बहुधा शिक्षित होते हैं अतएव यदि हम इन पुस्तकों द्वारा शिक्षित कुटुम्बों में गोपालन की नई विधियों का प्रचलन कर दें तो उनसे होनेवाले लाभों को देखकर अशिक्षित किसान और गोपाल भी उन नई विधियों का अनुसरण करने लगेंगे और यथेष्ट लाभ उठावेंगे।

(२) प्रत्येक बड़े कस्बे और शहर में कंपनी कायम करके आदर्श गौशालाएँ एकबारगी व्यवसाय के ढङ्ग पर खोलनी चाहिए। इन गौशालाओं में हृष्ट-पुष्ट तथा उच्च वंश की

गौएँ रखनी चाहिएँ और नये तथा उपयोगी ढङ्गों से उनका पालन करना चाहिए । नवीन प्रजनन-क्रिया से उनके वंश की उन्नति का भी उपाय करना चाहिए । इन कंपनियों के मालिकों का उद्देश्य रुपया कमाना नहीं वरन् गोवंश की उन्नति करना तथा नये ढङ्गों का जनता में प्रचार करना होना चाहिए । इनके मालिकों को आस-पास के किसानों तथा गोपालकों को यदि सम्भव हो, बुलाकर गोपालन की शिक्षा भी देनी चाहिए । इन गौशालाओं से देश को बड़ा लाभ होगा और अशिक्षित लोग भी नये ढङ्गों की उपयोगिता समझ जावेंगे । इन गौशालाओं के संचालकों को इस बात का सर्वदा ध्यान रखना चाहिए कि इन गौशालाओं का प्रबन्ध व्यवसाय के ढङ्ग पर हो ताकि इन कंपनियों के शेयर खरीदनेवालों को यह विश्वास रहे कि उनका रुपया सुरक्षित ही नहीं है वरन् उससे उनको और उनके देश व धर्म को भी सहायता पहुँच रही है । इस प्रकार काम करने से इन गौशालाओं को रुपये की कमी नहीं रहेगी और पाश्चात्य देशों की गौओं की भाँति हमारे देश में भी असंख्य दुधार और उत्तम गौएँ उत्पन्न हो जावेंगी । और साथ ही साथ, गोवध भी बन्द हो जावेगा ।

दूसरा प्रकरण

अच्छी गौओं के लक्षण

भारत में अनेक प्रकार की गौएँ पाई जाती हैं। इनकी भिन्न-भिन्न जातियाँ हैं, जिनमें से कुछ तो बहुत दूध देती हैं और कुछ बहुत कम। मामूली दूध देनेवाली गौएँ हर स्थान में पाई जाती हैं। सर्वदा उत्तम और दुधार गौओं को रखने ही में लाभ है। दुधार गौओं का मूल्य तो अधिक देना पड़ता है पर अन्त में उन्हीं को रखने में लाभ होता है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि उत्तम और दुधार गौएँ बुरी तथा कम दूध देनेवाली गौओं की अपेक्षा बहुत अधिक नहीं खाती हैं। अच्छी या बुरी दोनों प्रकार की गौओं को रहने की जगह का किराया व नौकरों का वेतन व उनको रखने में परिश्रम ये सब भी बराबर ही होते हैं।

हम उपर्युक्त बात की पुष्टि के लिए “फीड्स एंड फीडिंग” (Feeds and Feeding) नाम की पुस्तक में से निम्नलिखित अवतरण उद्धृत करते हैं—

अमेरिका में एक साहब ने बहुत दूध, साधारण दूध और कम दूध देनेवाली ३३ गौओं को एक सा चारा ८८ दिन तक

तोलकर दिया और उनका प्रत्येक दिन का दूध भी तोलकर लिख लिया । ८८ दिन के बाद औसत लगाने पर उनको निम्नलिखित सूची के अनुसार फल प्राप्त हुआ—

गौओं के गुण	प्रतिदिन एक गौ के चारे का खर्च	प्रतिदिन एक गौ से दूध की प्राप्ति	१०० सेर चारे से दूध की प्राप्ति
बहुत दूध देने वाली गौ	सेर छटाँक तोले १२—७—२	सेर छटाँक तोले १३—४—४	सेर छटाँक तोले १०७—४—१ $\frac{१}{२}$
मामूली दूध देनेवाली गौ	१२—५—३	१०—१२—०	८६—१५—२ $\frac{१}{२}$
कम दूध देने वाली गौ	१०—८—४	७—४—४	६६—३—१

ऊपर की सूची से हमको मालूम होता है कि उतने ही खर्च से अधिक दूध देनेवाली गौ कम दूध देनेवाली गौ की अपेक्षा लगभग दूना दूध देती है । इसके अतिरिक्त उत्तम गौ का बच्चा भी अधिक मूल्य का होगा ।

तीन-चार बुरी गाय खरीदने की अपेक्षा एक उत्तम गाय खरीदने में सब प्रकार से लाभ है ।

एक या दो गौश्रों की सेवा भी उत्तम प्रकार से की जा सकती है। बिना सेवा के कोई गौ कभी ठीक तरह दूध नहीं देगी।

उत्तम तथा दुधार गौ के लक्षण—उत्तम गौ का ढीला सुडौल तथा बड़ा शरीर होता है। छोटा सिर, चौड़ा माथा, खाल पतली, बाल नरम व चिकने होते हैं। अन्दरूनी खाल पीले तथा हलके नारंगी रंग की होती है। अच्छी गौ के सींग पीछे की तरफ मुड़े होते हैं। उसकी टाँगें छोटी, पट्टे चौड़े, धड़ लम्बा तथा उसके आगे का भाग पतला, हन चौड़ी तथा बड़ी होती है। उसकी जाँघें दूर-दूर होती हैं मानो ईश्वर ने जाँघों के बीच अधिक स्थान दूध भरे हुए बड़े ऐन के लिए ही बनाया है।

अच्छी गौ का ऐन बड़ा तथा पूर्णता को प्राप्त होता है। ऐन मांसदार, ढीला तथा लटका हुआ नहीं होना चाहिए। उसकी दूध धारण करने की शक्ति अच्छी होनी चाहिए। धार काढ़ने पर ऐन सिकुड़ जाना चाहिए। थन समान, सीधे और समानान्तर पर तथा न बहुत लम्बे और न बहुत छोटे होने चाहिए।

अधिक दूध देनेवाली गौ के दूध की धार मोटी तथा चौड़ी होती है। सम्भवतः ईश्वर ने दुधार गौश्रों की मोटी धार इसी लिए बनाई है कि दूध जल्दी और आसानी से निकल आवे।

यदि खरीदते समय गौ गाभिन होने के कारण कम दूध देती हो तो भी थनों से निकलती हुई धार की मोटाई-चौड़ाई देखकर हम मालूम कर सकते हैं कि गौ बहुत दूध देनेवाली है या नहीं। कम दूध देनेवाली गौओं के थन से धार पतली निकलती है। अधिक दूध देनेवाली गौ शीघ्र और सुविधा से दुही जाती है। ऐन की दुग्धवाहिनी नस (Milk-Vein) जितनी मोटी तथा स्पष्ट होती है उतनी ही गौ दुधार होती है। यह नस ऐन के पास से आगे की टाँगों की ओर जाती है।

उत्तम गौओं का स्वभाव शान्त और सीधा तथा चाल धीमी होती है। चेहरे से मातृप्रेम टपकता है। बहुधा चञ्चल गौएँ कम दूध देती हैं और कठिनाई से दुही जाती हैं। मोटी गौएँ कम दूध देती हैं।

काली, लाल और भूरे रङ्ग की गौएँ बहुधा तन्दुरुस्त और मज़बूत होती हैं। लाल गौ का दूध मीठा होता है। प्रत्येक गौ के दूध में दूसरी गौओं के दूध से रङ्ग में कुछ भेद होता है। दूध जितना पीलापन लिये होता है उतना ही अच्छा होता है। पीला दूध गाढ़ा तथा पीने में स्वादिष्ट होता है। इस दूध में घी भी अधिक होता है। अतएव पोले रङ्ग का दूध देनेवाली गौ अच्छा होती है। जिस दूध में नीलापन होता है वह बहुत अच्छा नहीं होता। आठ-दस सेर दूध देनेवाली गौ भारतवर्ष में अच्छी समझी जाती है।

गौ खरीदने के पहिले हमें यह मालूम कर लेना चाहिए कि वह कितनी बार बिआ चुकी है। यह बात हम गौ को देखकर मालूम कर सकते हैं। हर एक बियान के बाद गौ की कोख पहिले की अपेक्षा स्पष्ट हो जाती है, पेट नीचे को झुक जाता है, खाल लटक जाती है और ऐन ढीले पड़ जाते हैं। अतएव थोड़े से अनुभव के बाद आसानो से मालूम हो सकता है कि गौ कितनी बार बिआ चुकी है।

गौ खरीदने के पहिले उसकी उम्र भी मालूम कर लेनी चाहिए। हमेशा कम उम्र की गौ खरीदनी चाहिए।



तीसरा प्रकरण

गौश्रो की आयु

हाल के पैदा हुए बच्चे के नीचे के जावड़े में बीच में दो दाँत होते हैं, दो सप्ताह में बच्चे के चार दाँत निकल आते हैं। तीन सप्ताह में छः और चार सप्ताह या एक महीने में आठ दाँत निकल आते हैं। इन दाँतों को दूध के दाँत कहते हैं।

ये दाँत बहुत पैसे होते हैं और इन पर क्लर्ई के बर्तनों की तरह ऊपर ही ऊपर जिला व सफ़ेदी होती है। अन्दर केवल हड्डी ही होती है। दाँतों की तेज़ धार के घिस जाने व हड्डी के निकल आने से इनकी आयु का ज्ञान हो सकता है।



एक महीना

किनारे के दाँत निकल ही रहे होते हैं कि बीच के दाँत घिसने लगते हैं।

दो महीने में बीच के चारों दाँतों की धार घिस जाती है। बच्चों के ये दाँत टेढ़े घिसते हैं, इसलिए ये अब भी लगभग वैसे ही पैसे बने रहते हैं। तीसरे महीने में छः और चौथे महीने में आठों दाँत घिसने लगते हैं।

बीच के दाँत सबसे अधिक घिसते हैं और किनारे के सबसे कम । दूसरे या तीसरे महीने में बीच के दाँतों की धार घिसने लगती है ।

दाँतों के धीरे-धीरे घिसने के कारण चार महीने के बाद बीच के दो दाँत छोटे होने लगते हैं और उनके बीच में खाली जगह भी निकलने लगती है । घिसने के कारण बीच के दाँत त्रिभुजाकार दिखाई पड़ने लगते हैं ।



आठ महीने



ग्यारह महीने

घिसकर, जैसा चित्र में दिखाया है, वैसे हो जाते हैं । अब ये दाँत अपने पास के दाँतों की अपेक्षा प्रायः आधे होते हैं ।

ग्यारह महीने की आयु में बीच के चारों दाँत घिसने लगते हैं । जब बछड़ा पन्द्रह महीने का होता है तब छः दाँत घिसने लगते हैं और अठारह महीने की आयु होते-होते आठों दाँत घिसने लगते हैं ।



पन्द्रह महीने



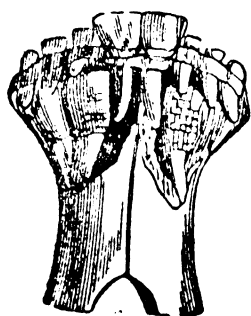
अठारह महीने

ढेढ़ वर्ष के बछड़े के मुँह को देखो तो मालूम होगा कि दायें और बायें दोनों ओर के दाँत घिसकर कोई आधे रह गये हैं; बीच के दाँत और भी अधिक घिस गये हैं, जैसा चित्र से मालूम होता है। एक दाँत की जितनी चौड़ाई है लगभग दो दाँतों के बीच उतनी ही खाली जगह है। बीच के दाँतों का त्रिभुजाकार पहल (face) भी घिसकर लम्बा सा हो जाता है और उसके पास एक नये दाँत का चिह्न स्पष्ट रूप से प्रकट होने लगता है।

इस प्रकार एक ओर तो दूध के दाँत घिसते जाते हैं; उधर दूसरी ओर पक्के दाँत निकलने लगते हैं। मनुष्य के जब पक्के दाँत निकलने शुरू होते हैं तो दूध के दाँतों की जड़ पर उनका जोर पड़ने लगता है, यहाँ तक कि आखिर वे मसूड़े से अलग होकर गिर जाते हैं। परन्तु गाय के दाँतों में ऐसा नहीं होता। गाय के पक्के दाँतों का दबाव दूध के दाँतों की केवल जड़ पर ही नहीं पड़ता बल्कि सारे दाँतों पर पड़ता है, जिसका फल यह होता है कि उनका आकार लगा-तार घटता चला जाता है। जब वे बहुत छोटे रह जाते हैं तब पक्के दाँत उन्हें हटाकर उनका स्थान ग्रहण कर लेते हैं।

जब गाय की अवस्था प्रायः दो वर्ष की होती है तब उसके बीच के दो दूध के दाँत गिर जाते हैं और उनकी जगह पर पक्के दाँत निकल आते हैं। बाकी छः दाँत

अभी दूध के ही होते हैं। पक्के दाँतों का दूसरा जोड़ा भी तैयार हो चुकता है परन्तु अभी दूध के दाँतों को हटा नहीं पाता, तीसरा जोड़ा भी तैयार होता रहता है। चौथे जोड़े के लिए अभी जाबड़े



दो वर्ष



तीन वर्ष

में जगह नहीं होती।

तीन वर्ष की आयु में चार पक्के दाँत निकल आते हैं।

चार वर्ष में छः और पाँच वर्ष की उम्र में आठों नये दाँत निकल आते हैं।

छः वर्ष की आयु से ये दाँत भी घिसने लगते हैं।

परन्तु दाँत कितने घिसते

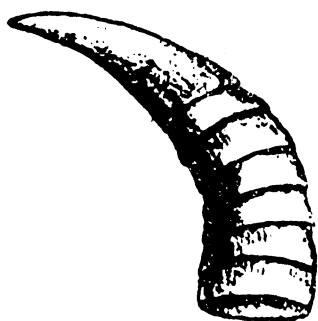


चार वर्ष



पाँच वर्ष

हैं और कितनी तेज़ी से घिसते हैं, यह गाय के आहार पर निर्भर होता है।

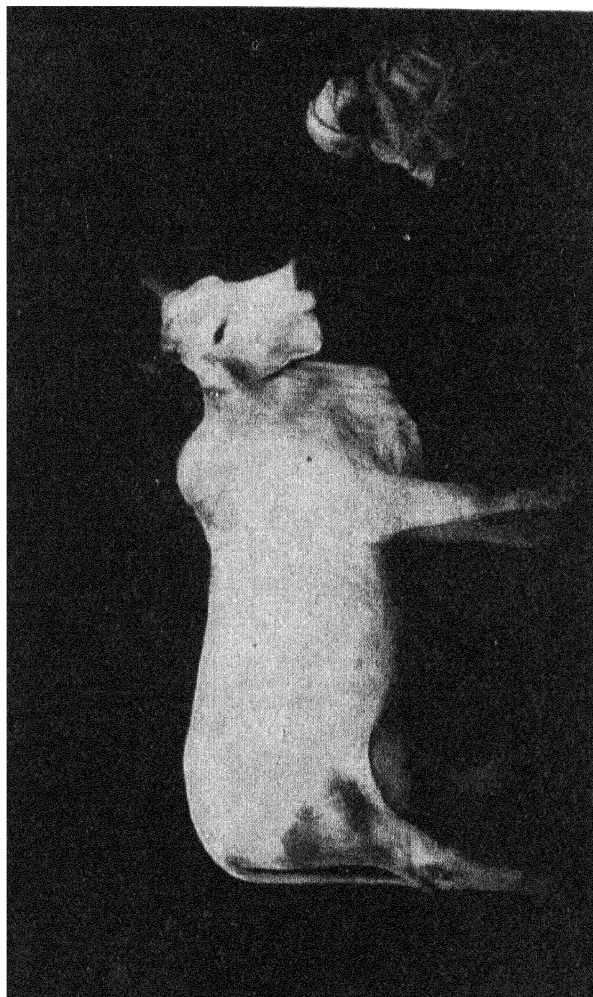


सींगों की परीक्षा करने से भी गोरू की आयु मालूम हो जाती है। तीन वर्ष की आयु में बैल के और कलोर (बिन बिआई गाय) के बिआने के बाद में गोल

छल्ले के सदृश सींग पर एक गढ़ा पड़ जाता है। इसके बाद प्रतिवर्ष एक गढ़ा बढ़ता जाता है। यदि बैल के सींग में चार गढ़े हैं तो उसकी आयु छः वर्ष की होगी। जब सात-आठ गढ़े पड़ जाते हैं तो वे एक दूसरे में मिल जाते हैं और स्पष्ट रूप से उनकी संख्या मालूम करना कठिन हो जाता है। कभी-कभी छली मनुष्य सींगों को घिसकर गढ़े बना या मिटा देते हैं। अतएव पशु की ठीक-ठीक आयु मालूम करने के लिए हम गढ़ों की संख्या पर निर्भर नहीं रह सकते।

यदि गौ, बैल व साँड़ को अच्छी तरह रखा जाता है तो उनकी आयु बढ़ जाती है और वे बहुत काल तक उपयोगी बने रहते हैं।

गौ तीन वर्ष की उम्र से बिआना आरम्भ करती है और बीस-इक्कीस वर्ष तक बिआती तथा दूध देती रहती है। साँड़ तीन साल की उम्र से आठ साल तक अच्छी तरह काम दे सकता है। आठ वर्ष के बाद उसे गौओं से सम्भोग नहीं करने देना चाहिए। इस समय से उसकी शक्ति कम होने लगती है और वह उत्तम सन्तान नहीं पैदा कर सकता। अतएव आठ वर्ष की उम्र के बाद उसे हल जोतने वा गाड़ी खींचने के काम में लाना चाहिए। तीन वर्ष से कम उम्र के साँड़ का गौ से कभी मेल नहीं होने देना चाहिए। इससे बड़ी हानि होती है।



हिसार की गौ ।

चौथा प्रकरण

गौओं की जातियाँ

हाँसी-हिसार की गौएँ—पञ्जाब में हाँसी-हिसार नाम के दो समीप-वर्ती जिले हैं। यहाँ की गौएँ बड़ी प्रसिद्ध हैं। ये डेढ़ पौने दो गज़ ऊँची होती हैं। इनमें उत्तम और दुधार गौओं के सब लक्षण पाये जाते हैं। ये अपना सिर सीधा रखती हैं। मुँह नोकदार और लम्बा होता है और ये बहुत सुन्दर होती हैं। इनका शरीर बड़ा तथा सुडौल होता है। इस जाति के बैल बहुत बोझा खींच सकते हैं। यह गौएँ बहुधा दस-बारह सेर दूध प्रतिदिन देती हैं। इनका दूध गाढ़ा तथा स्वादिष्ट होता है। रङ्ग सफ़ेद होता है।

नागौरी गौएँ—ये गौएँ पूर्व काल में देहली के समीप होती थीं। पर अब पञ्जाब और मध्यप्रदेश में भी बहुत पाई जाती हैं।

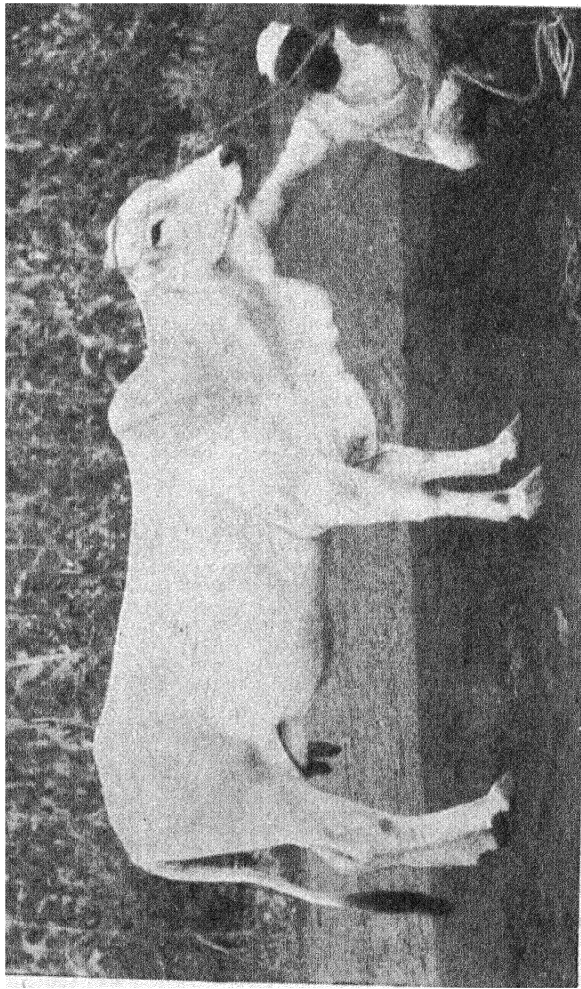
ये गौएँ बहुत सीधी होती हैं और दस से बारह सेर तक दूध देती हैं। पर इनका दूध बहुत गाढ़ा नहीं होता। नागौरी बैल बहुत तेज़ भाग सकते हैं यद्यपि ये बहुत बोझा नहीं खींच सकते। नागौरी गौएँ बहुत लम्बी तथा पतली होती हैं। उनके खुर लम्बे होते हैं। शरीर पर बहुत मांस नहीं

होता है। रङ्ग सफ़ेद होता है। ये बड़ी नाजुक होती हैं। परन्तु दूध बहुत समय तक देती हैं। माथा चौड़ा और आँखें पानीदार होती हैं। गर्दन लम्बी और पतली होती है। कान बड़े और लटकते हुए होते हैं। इस जाति के पशुओं के पैर लम्बे होते हैं इसलिए ये बहुत फुर्तीले होते हैं।

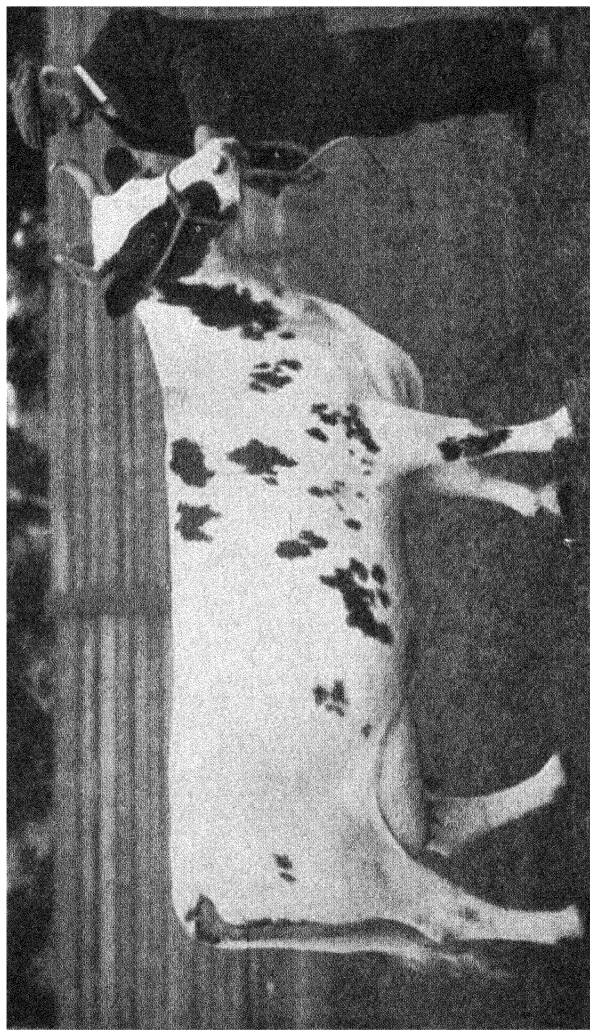
गुजराती गौएँ—गुजरात की गौएँ हिसार की गौओं से क़द, सूरत, शक्ल तथा शरीर की बनावट में बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं। हिसार की गौओं से इनके कान लम्बे तथा सींग छोटे होते हैं और देखने में मोटी तथा भारी मालूम होती हैं। ये गौएँ बहुत दुधार होती हैं, तथा बैल बहुत मज़बूत।

नीलौरी गौएँ—नीलौर मद्रास अहाते में है। यह सारे जगत् में अधिक दूध देने के कारण विख्यात है। नीलौर की अच्छी गौएँ पौने दो गज़ ऊँची होती हैं। इनकी गति मन्द होती है। इनके सींग डेढ़ दो गिरह से अधिक लम्बे नहीं होते तथा बाहर को झुके होते हैं। सूरत भोली होती है। आँखें भारी होती हैं। डील बड़ा और शरीर गठा हुआ होता है। इनकी खाल पतली तथा बाल नरम होते हैं। रङ्ग सफ़ेद होता है।

मुर्लतान के पास की भी गौएँ अच्छी होती हैं। इनमें हिसार की गौ के समान ही सब अच्छे गुण होते हैं। इनका शरीर हिसार की गौओं से छोटा तथा गठा हुआ होता



नागौरी गौ ।



पशुधर की गो ।

है। इनका रङ्ग काला होता है। ये मज़बूत तथा नीरोग होती हैं। इनके सींग बहुत बड़े नहीं होते।

सिन्धी गौएँ—सिन्ध में भी अच्छी गौएँ होती हैं। इनका शरीर छोटा और सुन्दर होता है। इनका रङ्ग लाल और स्याही मायल लाल होता है। मुँह, ऐन और पैरों पर कभी-कभी सफ़ेद चकत्ते होते हैं। गर्दन मोटी और छोटी होती है। इस जाति की गाय ८ से १२ सेर तक दूध देती हैं।

गौर, मोटगुमरी, अमरत महल, मथुरा आदि की गौँ भी उत्तम होती हैं।

संयुक्त-प्रान्त के पूर्वी ज़िलों की तथा बङ्गाल की गौएँ बहुत मामूली तथा दुर्बल होती हैं। वे केवल गज़ सवा गज़ ऊँची होती हैं और पाव भर से लेकर दो सेर तक दूध देती हैं। इनमें से कोई-कोई तो बड़ी बकरी से क़द में बहुत ज्यादा नहीं होतीं। बैल भी बहुत बोझा नहीं ढो सकते। यहाँ के लोग गौओं को बड़ी बुरी तरह से रखते हैं। वे उसको पेटभराऊ चारा तक नहीं देते। बछड़ों को इतना कम दूध देते हैं कि उनमें से बहुत से तो भूख के मारे मर जाते हैं। इन लोगों के यहाँ उत्तम से उत्तम गौ बिगड़ जाती है।

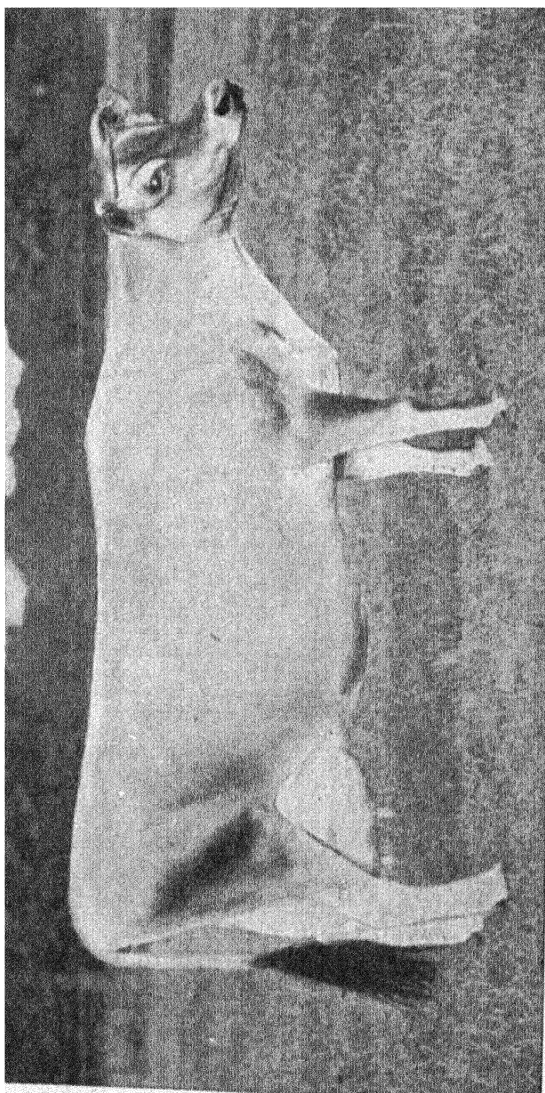
इंग्लैंड में गौओं की बहुत सी अच्छी जातियाँ हैं। उनमें से हम केवल दो ही का यहाँ पर उल्लेख करेंगे।

एशायर की गौ मज़बूत तथा बहुत दूध देनेवाली होती है। इनका रङ्ग बहुधा भूरा या भूरा और सफ़ेद होता

है। इनके ऐन बड़े तथा दूधवाहिनी नस मोटी होती है। पहिली बियान की गौ के थन छोटे-छोटे होते हैं, पर दो-तीन बियान के बाद वे और गौओं की तरह बड़े हो जाते हैं। खाल मुलायम तथा घने, बड़े और नरम बालों से ढकी रहती है। एशायर गौ का सिर छोटा, माथा चौड़ा, गर्दन लम्बी होती है। इनके कँवर या लहर नहीं होती। पीछे का भाग भारी होता जाता है। सींग सुन्दर तथा आगे को झुके होते हैं।

जर्सी गौ—यह बहुत स्वादिष्ट गाढ़ा तथा अधिक दूध देती है। यह प्रतिदिन १ सेर से लेकर १ $\frac{1}{2}$ सेर तक मक्खन तथा २५, २६ सेर दूध देती है। इसका सिर, सींग तथा गाल छोटे होते हैं। आँखें बड़ी तथा शान्त होती हैं। खाल का रङ्ग पीला होता है। टाँगें छोटी, पतली तथा सुन्दर होती हैं। खुर छोटे होते हैं। ऐन बहुत बड़ा, दुग्धवाहिनी नस स्पष्ट, थन न बहुत बड़े न बहुत छोटे और रङ्ग पीला होता है।

एशायर की उत्तम गौओं को या इंग्लैंड तथा और पाश्चात्य देशों की गौओं को भारतवर्ष में रखना लाभदायक नहीं होता। ये यहाँ के जल-वायु में रहने की आदी नहीं होती हैं। इसलिए यहाँ आकर उनका दूध सूख जाता है। गौएँ सर्वदा अपनी जन्मभूमि में ही रहना पसन्द करती हैं और वहीं अधिक दूध देती हैं। जल-वायु का भी इन



जली गो ।

पर बड़ा प्रभाव पड़ता है । जल-वायु में अन्तर आ जाने पर इनका दूध कम हो जाता है । परन्तु कुछ काल के बाद ये नये जल-वायु में रहने की आदी हो जाती हैं ।



पाँचवाँ प्रकरण

सद्व्यवहार की आवश्यकता

प्रत्येक गोपालक यह चाहता है कि जहाँ तक सम्भव हो उसकी गाय पर व्यय तो कम हो परन्तु उससे लाभ यथासम्भव अधिक हो। हम पहिले लिख चुके हैं कि उत्तम और दुधार जाति की गौओं ही से कम व्यय पर अधिक दूध मिल सकता है। परन्तु उत्तम गौ खरीदकर ही यह न समझ लेना चाहिए कि बस हमारा कर्तव्य पूरा हो गया और अब हमारा इष्ट स्वयं ही सिद्ध हो जायगा। गौ पर तथा उसकी दूध देने की शक्ति पर आहार का प्रभाव बहुत पड़ता है। गाय कितनी ही दुधार क्यों न हो, यदि उसे पौष्टिक भोजन यथेष्ट मात्रा में न मिलेगा तो उसकी दूध देने की शक्ति अवश्य कम हो जीवेगी।

हमने एक बार गोरखपुर में एक किसान से एक गाय माल ली थी। वह किसान उसे केवल थोड़ा सा भूसा ही

देता था । उसे अनाज का दलिया या खली आदि कुछ नहीं मिलता था । उसके यहाँ वह गौ कठिनाई से दिन भर में एक सेर दूध देती थी । जब वह हमारे यहाँ आई और उसको भूसे के साथ हरी घास, अन्न तथा खली मिलने लगी तो दूसरी बार बिआने पर वह प्रतिदिन चार सेर दूध देने लगी ।

गौ दूध पैदा करने की एक जीवित मशीन है । जिस प्रकार भाफ़ पैदा करने के लिए एंजिन को कोयले तथा पानी की ज़रूरत होती है उसी प्रकार दूध उत्पन्न करने के लिए गौ को आहार तथा जल की ज़रूरत होती है । यदि एंजिन में काफी कोयला नहीं डाला जावेगा तो काफी भाफ़ नहीं बनेगी और या तो वह चल ही नहीं सकेगा, या चलेगा भी तो बहुत धीमी चाल से । यदि हम एंजिन में कोयला बहुत ही कम डालेंगे तो वह केवल गर्म ही होकर रह जावेगा, उसमें भाफ़ बिलकुल नहीं पैदा होगी । यही हाल गौओं का है । यदि उनको काफी भोजन नहीं दिया जाता है तो उनके कम दूध उत्पन्न होता है और उनको रखने में लाभ कम या बिलकुल ही नहीं होता ।

जैसे कोयला जलाने पर पहिले एंजिन गर्म होता है और फिर भाफ़ बनती है वैसे ही जो चारा गौ खाती है वह पहिले गौ को जीवित और निरोग रखने में खर्च होता

है और फिर जो इससे बचता है दूध उत्पन्न करने में खर्च होता है ।

विज्ञानवेत्ताओं ने मालूम किया है कि गौ को जितने चारे की आवश्यकता होती है उसमें से लगभग दो तिहाई तो गौ को जीवित तथा पुष्ट रखने में खर्च हो जाता है और शेष दूध के उत्पन्न करने में । गौ को जीवित तथा स्वस्थ रखने के लिए जितने आहार की ज़रूरत पड़ती है उससे अधिक आहार देने ही से हमें लाभ हो सकता है । यदि कोई ग्वाला गाय को आहार देने में कमी करता है तो वह अवश्य बड़ा मूर्ख है । यदि कोई गौ को भरपेट आहार नहीं देता तो वह अपनी ही हानि करता है । चारे में जो बचत होती है उससे कहीं अधिक हानि गौ के कम दूध देने के कारण हो जाती है ।

अमेरिका के एक बड़े अनुभवी गोपालक का कहना है कि “लोग बहुधा अपनी गायों को काफी आहार नहीं देते या ऐसा आहार देते हैं जो पौष्टिक नहीं होता । इसका परिणाम यह होता है कि उन्हें अपनी गायों के दूध से जितना लाभ होना चाहिए उसका प्रायः आधा या पौना ही होता है । और फिर यही लोग शिकायत करते हैं कि उन्होंने गायें खरीदने में जो पूँजी लगा दी है उसका ब्याज भी नहीं निकलता । उन्हें अपनी ही ग़लती का फल

उठाना पड़ता है। वास्तव में गौओं को कष्ट पहुँचाकर कोई मनुष्य, धन-धान्य-सम्पन्न होना तो दूर की बात है, थोड़ा लाभ भी नहीं उठा सकता।

जैसे बाज़ एंजिनों में और एंजिनों की अपेक्षा कोयला अधिक जलता है और काम कम होता है वैसे ही बाज़ी गौएँ खाती तो ज़्यादा हैं परन्तु दूध उतना नहीं देती। कुछ गौएँ खाती कम हैं और दूध अधिक देती हैं। वे चारे को खराब नहीं करती। इसलिए हमको सर्वदा उन्हीं गौओं को रखना चाहिए जो कम खायँ और दूध अधिक दें क्योंकि कोई भी ऐसे एंजिन को रखना पसन्द नहीं करता जो व्यर्थ ही कोयला अधिक फूँकता हो। गौ के खाने तथा दूध देने की शक्ति की जाँच आरम्भ में ही कर लेनी चाहिए। यह बहुत सरल है। गौ जितना चारा खाती है व दूध देती है, तोल लेना चाहिए और इनकी तुलना कम खानेवाली और अधिक दूध देनेवाली गौ के आहार तथा दूध से करनी चाहिए। इन परीक्षाओं से गौ रखनेवालों को बहुत लाभ होगा।

हम “फ़ीड्ज़ ऐंड फ़ीडिंग” नाम की पुस्तक में से निम्न-लिखित सूची पाठकों की सूचना के लिए उद्धृत करते हैं। इस सूची में पाँच गौओं का एक-एक वर्ष का खिलाने का व्यय तथा उससे प्राप्त दूध दिया हुआ है।

गाय	वर्ष	आयु	खिलाई का खर्चा	प्राप्त दूध	सौ सेर दूध पर न्यय
पहिली गाय	७	महीना —	रु० आ० पा० १३२-१२-०	सेर छटाक ४,०१४-८	रु० आ० पा० ३-४-७
दूसरी गाय	५	४	१४३-०-०	४,८७०-०	२-१५-०
तीसरी गाय	७	—	११६-४-०	३,१०७-८	३-११-१०
चौथी गाय	३	५	१२६-०-०	२,३७१-८	५-८-०
पंचवीं गाय	६	४	१२६-६-०	४,८८८-८	२-१०-४

हमें मालूम है कि खाने में और परिश्रम करने में बहुत पारस्परिक सम्बन्ध है। आदमी या पशु को काम करने की शक्ति भोजन-द्वारा ही प्राप्त होती है। यदि मनुष्य कुछ दिन नहीं खाता है तो वह बहुत दुर्बल तथा शक्तिहीन हो जाता है। वह भूखा कुछ नहीं कर सकता। जो कुछ वह करता है भोजन से प्राप्त शक्ति ही से करता है। यदि मनुष्य या पशु परिश्रम अधिक करता है तो शक्ति का व्यय होता है और वह दुबला हो जाता है। अधिक परिश्रम करनेवाले मनुष्य या पशु को पौष्टिक भोजन अधिक इसी लिए देते हैं कि उसकी शक्ति कम न हो।

लोगों को परीक्षा द्वारा मालूम हुआ है कि यदि गौएँ घर ही पर रहती हैं तो चरने जाने तथा चरने में परिश्रम करने में जो शक्ति पहिले व्यय होती थी अब वह दूध उत्पन्न करने के काम आती है। इस प्रकार घर पर रहनेवाली गौओं के पहिले की अपेक्षा एक तिहाई से आधे तक अधिक दूध उत्पन्न होने लगता है।

प्रत्येक काम में शक्ति का व्यय होता है, यहाँ तक कि चलने या हाथ हिलाने या साँस लेने तक में शक्ति का व्यय होता है। पौष्टिक भोजन पाते हुए भी मनुष्य क्रोध, शोक, चिन्ता, भय तथा अन्य दुःखों के कारण दुबला व निर्बल हो जाता है। भोजन के पचने से जो शक्ति उत्पन्न होती है वह क्रोध या शोक करने या ढरने में व्यय हो जाती है और शरीर पुष्ट नहीं होने पाता।

भोजन से गाय को जो शक्ति प्राप्त होती है, उसका कुछ भाग तो चलने-फिरने और शरीर को स्वस्थ रखने में खर्च हो जाता है और शेष भाग परिश्रम करने में तथा दूध उत्पन्न करने व गर्भ में बच्चे का पालन करने में। इसी कारण गाभिन गौएँ दूध से हट जाती हैं क्योंकि गर्भस्थ बच्चे को पालने में उनकी इतनी शक्ति व्यय हो जाती है कि दूध उत्पन्न करने के लिए और कुछ शेष नहीं बचती।

इससे प्रत्यक्ष है कि यदि हम गौ से अधिक दूध प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें उसकी शक्ति को पूरा भोजन देकर बढ़ाना चाहिए और जहाँ तक हो उसको दूध उत्पन्न करने के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। गौ को व्यर्थ परिश्रम कराके व कष्ट देकर उसकी शक्ति को नष्ट नहीं करना चाहिए।

यदि गौएँ चरने के लिए दूर ले जाई जाती हैं, दौड़ाई जाती हैं, डराई, धमकाई या पीटी जाती हैं या मक्खियों या आदमियों से सताई जाती हैं तो उनकी शक्ति का हास होता है। इस शक्ति के व्यर्थ नष्ट हो जाने के कारण गौओं का दूध कम हो जाता है व पतला पड़ जाता है।

यह सब जानते हैं कि उन गौओं के दूध में चिकनाई अधिक होती है जो घर पर ही रहती हैं और चरने कहीं नहीं जाती हैं। यदि इनको हरा चारा मिलता रहता है तो इनके दूध भी अधिक उत्पन्न होता है। गर्मियों में जब कि गौओं को

मक्खियाँ बहुत तड़क करती हैं तो उनके दूध में, शाम को सबेरे की अपेक्षा, घृत अधिक मात्रा में होता है।

गौओं के शरीर में जितनी गर्मी होती है वह सब भोजन से प्राप्त शक्ति ही से पैदा होती है। निर्बल गौओं के शरीर में कम गर्मी होती है। यदि गौएँ ठण्ड में रहती हैं या वर्षा के जल में भीगती हैं तो उनके शरीर की गर्मी कम हो जाती है। इस गर्मी को उत्पन्न करने में गौ को अपनी शक्ति का कुछ भाग व्यय करना पड़ता है जो अन्यथा दूध उत्पन्न करने के काम में आता है।

उपर्युक्त बातों की परीक्षा आप स्वयं किसी गौ पर करके देख सकते हैं।

इसलिए गौओं के साथ कभी बुरा बर्ताव नहीं करना चाहिए। उनके साथ हमेशा प्रेम तथा नरमी का बर्ताव करना चाहिए। गौएँ बड़ी समझदार होती हैं। जो उनके साथ प्रेम का बर्ताव करता है उसके सामने वे भी बहुत सीधी हो जाती हैं और उसके आज्ञानुसार काम करने लगती हैं।

गौएँ बड़ी उदार होती हैं। उन पर जो कुछ व्यय व मेहनत की जाती है उसका बदला वे यथेष्ट मात्रा में दे देती हैं। अतएव गौओं को सदा यथेष्ट मात्रा में आहार देना चाहिए और उनकी सेवा बड़े प्रेम तथा यत्न से करनी चाहिए। हम “फीड्ज एंड फीडिंग” नामक पुस्तक का कई बार उल्लेख

कर चुके हैं। उसके लेखक का इस सम्बन्ध में कथन है कि “यदि किसी गाय से पूरा-पूरा लाभ उठाना हो तो सबसे पहिली बात तो यह है कि उसके साथ दयापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। क्रोध, शोक या घबड़ाहट पैदा करनेवाली कोई बात उसके साथ न करनी चाहिए। मेरा विचार है कि यदि गाय से उत्तम दूध यथेष्ट मात्रा में प्राप्त करना है तो तीन बातें ज़रूरी हैं। उसे पौष्टिक भोजन काफ़ी दिया जाय। उसके साथ उत्तम व्यवहार किया जाय। उसको अच्छे स्थान में रखा जाय जहाँ उसका चित्त प्रसन्न रहे।”

छठा प्रकरण

गौश्रों का आहार

अब आपको भले प्रकार मालूम हो गया होगा कि गौएँ बड़ी नाज़ुक होती हैं। उनको बहुत ध्यान और सावधानी से रखने की आवश्यकता है। उनको चारा नित्य नियत समय पर तथा उचित मात्रा में देना चाहिए। उड़द, जौ, गेहूँ, मटर, चना और अरहर गौश्रों के लिए लाभ-दायक अन्न हैं। और दुधार गौश्रों को ये चीज़ें ज़रूर देनी चाहिए। इनके अतिरिक्त और अनाज गौश्रों के लिए हानिकारक होते हैं। चावल रोगी गौश्रों के लिए उपयोगी है। पर इसमें पोषण-शक्ति बहुत कम है। चोकर में पोषण-शक्ति बहुत है। चना और मटर केवल निर्बल या बहुत दुधार गौश्रों को देना चाहिए। परन्तु सेर या आध सेर से अधिक किसी दशा में भी नहीं देना चाहिए क्योंकि यह गोरू को मोटा कर देता है।

चोकर शरीरवर्धक है। इसलिए यह छोटे बच्चों तथा गौश्रों के लिए बहुत लाभदायक है। यह बहुत स्वादिष्ट तथा अँतड़ियों को साफ़ करनेवाला आहार है। इसलिए बिनौले, खली, अनाज तथा भूसे के साथ यह भी देना चाहिए।

चावल का धोवन तथा माँड़ गौओं के लिए बहुत लाभ-दायक होता है। इसको सानी में मिला देना चाहिए। उड़द गौओं के लिए सबसे उत्तम आहार है क्योंकि यह उनका दूध भी बढ़ाता है और शरीर का भी पोषण करता है। उड़द, गेहूँ, जौ, चना और मटर दूध को गाढ़ा करते हैं और गौ को बलिष्ठ बनाते हैं। जाड़े में उड़द कम देना चाहिए और भूसी, मटर और चना अधिक; क्योंकि उड़द ठण्डा होता है। बाज़ी गौओं को ठण्ड बहुत सताती है। चना साँड़, बैल और बछड़ों के लिए सबसे उत्तम आहार है। उड़द साँड़, बैल, दूध न देनेवाली गौओं तथा बछड़ों को नहीं देना चाहिए।

दुबली और कमज़ोर गौओं को चने अधिक मात्रा में देने चाहिए क्योंकि चने शक्तिवर्धक होते हैं। गेहूँ का चोकर गाभिन गौ तथा गौ के बच्चों के लिए बहुत ज़रूरी है। गेहूँ के चोकर से पाचनशक्ति बढ़ती है और दूध अधिक मात्रा में उत्पन्न होता है।

यदि गौ की पाचनशक्ति ठीक नहीं है तो अनाज और खली कम देनी चाहिए, और चोकर अधिक।

यदि गौ की खुराक कम हो तो भूसा कम देना चाहिए और पौष्टिक आहार जैसे अनाज, खली आदि अधिक। इससे गौओं का बल बना रहेगा। हरी घास से उत्तम और गाढ़ा दूध उत्पन्न होता है।

बिनौलों से बहुत गाढ़ा दूध उत्पन्न होता है। पर आध सेर से अधिक बिनौले कभी नहीं देने चाहिएँ क्योंकि वे बहुत गर्म और भारी होते हैं। इनके देने से कभी-कभी थन सूज जाते हैं।

धान का भूसा बिल्कुल पौष्टिक नहीं है। गेहूँ और जौ का भूसा इसकी अपेक्षा बहुत अच्छा होता है।

खली से दूध और मक्खन अधिक पैदा होता है। पर सब तिलहनों की खली दुधार गौ तथा छोटे बच्चों के लिए अच्छी नहीं होती। तिल, अलसी (या तीसी), नारियल की गरी तथा मूँगफली की खली अच्छी होती है। अन्य प्रकार की खलियाँ बहुत गरम होती हैं। इसलिए वे हानिकारक होती हैं। अलसी और तिल की खली तीन साल के अन्दर के बच्चों के लिए अच्छी होती है। सरसों की खली बैलों, साँड़ों तथा बड़े बच्चों को देनी चाहिए। सरसों की खली बहुधा गौओं को दी जाती है पर यह दुधार गौओं के लिए अच्छी नहीं होती और तीन महीने के अन्दर के बच्चों को कभी नहीं देनी चाहिए।

गौओं को सदा हरा चारा देना चाहिए। इसके बिना वे स्वस्थ नहीं रह सकतीं।

हरी दूब सबसे उत्तम घास है। गेहूँ, जौ, मटर, चना, उड़द, समा और धान के हरे पौदे और फलों के पेड़ों के हरे पत्तों बहुत उत्तम होते हैं। फूल व पत्ता गोभी के पत्ते, हरी व

सूखी मूँगफली की बेल, गाजर, शलगम, लूसर्न घास गौओं के लिए बहुत उत्तम होती है। पपीते से गौओं के दूध उतरने लगता है।

एक एकड़ या डेढ़ बीघे भूमि से एक गौ के लिए हरा चारा साल भर के लिए प्राप्त हो सकता है। जुआर की चरी गौ के लिए उत्तम चारा है। यदि इसके पौदे को बराबर पानी न मिले तो यह ज़मीन से शोरे को इतने अधिक परिमाण में खींच लेता है कि यदि इसका डण्ठल चीरा जाय तो शोरे के कण दिखाई देंगे। ऐसी दशा में चरी विषैली हो जाती है।

जब कभी गौ को इसका विष चढ़ जावे तब गुड़ को पानी में घोलकर देना चाहिए। इससे विष उतर जाता है।

भूसा देते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह साफ़ और मीठा हो। बहुधा भूसे में मिट्टी, गोबर, काँटे व सड़ा गला भूसा मिला होता है। धान का भूसा पौष्टिक नहीं होता।

गौओं को नमक तथा थोड़ी सी गन्धक रोज़ अवश्य देनी चाहिए। इनसे उनकी अँतड़ियाँ साफ़ और ठीक रहती हैं और ये उनको बहुत से रोगों से भी बचाती हैं।

गौओं को सदा स्वच्छ आहार तथा जल देना चाहिए। गौओं के लिए स्वच्छ जल का प्रबन्ध रहना चाहिए। उनको प्यास बहुत लगती है। यदि उनको स्वच्छ पानी दिन में कम से कम चार बार नहीं मिलेगा तो वे गन्दा पानी पी लेंगी।

इसका बड़ा दुष्परिणाम होता है। गन्दे चारे व पानी से दूषित दूध उत्पन्न होता है और इससे बहुत सी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं।

हिन्दुस्तान में कहीं-कहीं घोड़ों की लीद, जिनको बहुत दाना मिलता है विशेषकर फौज के घोड़ों की लीद, तथा अन्य गन्दी और सड़ी-गली चीजें खिलाते हैं। इससे उनके स्वास्थ्य पर बड़ा बुरा असर पड़ता है और कभी-कभी वे मर भी जाते हैं।

चारों की मात्रा गौओं के शरीर व उनकी दूध देने की शक्ति पर निर्भर है। गौ जितना अधिक दूध देती है उतने ही अधिक चारे की उसे आवश्यकता होती है। आठ-दस सेर दूध देनेवाली गौ को निम्नलिखित आहार की ज़रूरत होती है:—

अनाज	१ ½ सेर
चोकर	२ „
खली	१ „
बिनौले	½ „
भूसा*	१५ „
नमक	१ छटाँक

यदि गौ के चरने को अच्छी चरागाह न हो तो आठ या दस सेर हरा चारा और देना चाहिए।

* यदि हरी घास मिल जावे तो भूसे की मात्रा और भी कम कर देनी चाहिए।

गौश्री को अनाज दलकर देना चाहिए । साबित अनाज का लगभग चौथाई भाग बिना पचे ही गोबर के साथ बाहर निकल आता है । गोबर में बहुधा गेहूँ, जौ व चने पाये जाते हैं और ये कभी-कभी उग भी आते हैं ।

अनाज को दलने के बाद भिगोकर देना चाहिए । खली के भी छोटे-छोटे टुकड़े करके और भिगोकर देते हैं । चारे के छोटे-छोटे टुकड़े करके अनाज, खली आदि सबको मिला देना चाहिए । ऐसा करने से पशु एक प्रकार के चारे को बीन-बीनकर नहीं खा सकता । हरा और सूखा चारा यदि बिना कुट्टो किये ही उनके सामने डाल दिये जावें तो वे हरे चारे को खा जाते हैं और सूखे को खराब कर देते हैं । चारा फेरफार कर देना चाहिए क्योंकि एक ही चारा सदा देने से अरुचिकर हो जाता है ।

सातवाँ प्रकरण

हरा चारा और गोचरभूमि

गौओं का स्वाभाविक आहार हरा चारा ही है। हरे चारे के सामने वे और कुछ नहीं खाना चाहती। उनको हरी-हरी घासों के सामने अनाज तथा खली कुछ नहीं भाती और न किसी की ज़रूरत ही है। यदि गौओं को हरा चारा न मिले तो वे निरोग तथा स्वस्थ नहीं रह सकतीं। जहाँ पर विस्तृत चरागाह हैं वहाँ गौएँ बड़ी उन्नत अवस्था में पाई जाती हैं और बहुत दूध देती हैं। पर जहाँ पर चरागाह बहुत कम हैं वहाँ गौएँ बहुत दुबली तथा कम दूध देनेवाली होती हैं। ऐसे स्थानों में गौओं की संख्या भी बहुत कम होती है। गर्मियों में जब घास सूख जाती है तो गौओं को बड़ा कष्ट होता है और उनका दूध भी कम हो जाता है।

इसी लिए पहिले लोग गौओं के चरने के लिए प्रत्येक गाँव के पास कुछ भूमि छोड़ देते थे। यहाँ पर गाँव की सब गौएँ आकर चरती थीं। किसान लोग भी अपने-अपने खेतों का कुछ भाग गौओं के चरने के लिए छोड़ देते थे। इसको

परती की ज़मीन कहते हैं। मनु महाराज ने लिखा है कि प्रत्येक गाँव का दसवाँ भाग पशुओं के चरने के लिए छोड़ देना चाहिए।

परन्तु अब निर्धनता तथा भूमि की अधिक माँग होने के कारण मनुष्य गोचरभूमि को भी जोतकर खेती करने लगे हैं। इस कारण अब यहाँ गौओं के चरने के लिए काफी भूमि नहीं रही है।

बङ्गाल में तो अब चरागाह रहे ही नहीं हैं। वहाँ गौओं को या तो सड़कों पर गिरा-पड़ा खाने को या किनारे की घास चरने के लिए छोड़ देते हैं। उनके लिए चारे का कोई प्रबन्ध नहीं करते। परिणाम यह होता है कि बङ्गाल में गोरू बहुत दुर्बल तथा ठिगने होते हैं। उनके शरीर में सिवा हड्डी-पञ्जर के कुछ भी नहीं होता। इसलिए वे अधिक काम के भी नहीं होते हैं।

इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष हजारों गोरू चारे के अभाव के कारण मर जाते हैं। बैलों के मर जाने पर किसान अपने खेत नहीं जोत पाते। इसका फल यह होता है कि किसान न तो लगान दे सकते हैं और न अपने कुटुम्ब के लिए अनाज ही प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार हम गौओं को भूखी मारकर स्वयं भी भूखों मरते हैं। हम हिन्दू कहते तो गौ को माता हैं परन्तु उसे भूखों मारना और उसके साथ निर्दयता का व्यवहार करना बुरा नहीं समझते। मेरी

राय में तो ऐसा करना गोहत्या से भी बढ़कर पाप है । गौत्रों से हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध है । जहाँ वे सुखी रहती हैं वहाँ मनुष्य भी सुखी रहते हैं ।

आजकल जब कि भूमि का मूल्य इतना बढ़ गया है और उसकी माँग दिन प्रतिदिन बढ़ती ही चली जा रही है, इस बात की आशा करना कि पहिले की तरह अब भी विस्तृत चरागाहों के लिए भूमि छोड़ दी जावेगी निरी मूर्खता ही होगी । जिस भूमि में से ३० मन अनाज और ६० मन भूसा प्राप्त हो सकता है उसको १० मन घास उत्पन्न करने के लिए कौन छोड़ सकता है । वर्तमान युग में जब कि कोई एक पैसे को भी खराब नहीं करना चाहता है इतनी बड़ी हानि को कैसे सह सकता है । तो अब उपाय क्या हो सकता है ?

बहुत समय हुआ लोग खेती करना नहीं जानते थे । जो फल-फूल अपने आप ही पैदा हो जाते थे वह ही खाकर मनुष्य अपना जीवन निर्वाह करते थे । जो भूमि उस समय अपनी प्राकृतिक पैदावार के द्वारा केवल एक या दो मनुष्यों का भरण-पोषण कर सकती थी वही भूमि कृषि-विद्या के प्रचार से अब प्रायः सौ कुटुम्बियों के पालन में समर्थ हो गई है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि भूमि को जोतने-बोने व फसल के काटने में मेहनत व रुपया अवश्य लगता है परन्तु खेती से जो लाभ होता है वह रुपया व मेहनत से कहीं अधिक होता है ।

बिना कृषि के अब कोई देश धन-धान्य-सम्पन्न व उन्नत नहीं हो सकता है, न वह इतनी जन-संख्या का भरण-पोषण ही कर सकता है। आजकल यदि कोई कहे कि जब कि हमको भूमि की प्राकृतिक उपज से आहार मिल सकता है तो हम क्यों खेती करके व्यर्थ समय व रुपया खर्च करें तो वह उन्मत्त समझा जावेगा।

यदि अब हम प्राकृतिक चरागाहों पर निर्भर न रहकर अनाज की तरह हरा चारा भी बोने लगे तो चरागाहों की कमी पूरी हो सकती है। हरा चारा पैदा करने में मेहनत व रुपया अवश्य लगेगा, परन्तु उससे आर्थिक लाभ भी अब की अपेक्षा कहीं अधिक होगा। जैसे अब हम अपने खाने के लिए प्राकृतिक उपज पर निर्भर नहीं रह सकते उसी प्रकार गौत्रों के चारे के लिए भी भूमि की प्राकृतिक उपज पर निर्भर नहीं रह सकते। हमको उपज बढ़ाने के लिए प्रकृति की सहायता करनी ही पड़ेगी अन्यथा हमारे गोरू भूखों मर जावेंगे।

उपर्युक्त बात का अनुभव अभी हमको नहीं हुआ है, यद्यपि योरप अमेरिकावालों को हो गया है। योरपवाले १८ रुपये से ५५ रुपये एकड़ लगान की भूमि में हरा चारा बोते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि योरप में यहाँ की अपेक्षा भूमि का मूल्य अधिक है।

चरागाह में गौओं को घास चराने की अपेक्षा हरा चारा काटकर गोशाला में खिलाना कहीं अच्छा है। कारण स्पष्ट है। गोचरभूमि में जो घास उगती है उसका कुछ भाग तो गौओं के चरने के काम आता है और जितना चरने के काम आता है उससे अधिक भाग उनके चलने-फिरने, बैठने-लेटने, गोबर-मूँत करने आदि से खराब हो जाता है। यदि खेत में हरा चारा बोकर और काटकर गौओं को खिलाया जाता है तो चारे का कोई भी भाग नष्ट नहीं होता। इसके अतिरिक्त एक बात और है। गोचरभूमि पशुओं के चलने-फिरने से कड़ी हो जाती है। इसलिए उसमें चारा बहुत कम पैदा होता है। जब भूमि को जोतकर और खाद डालकर हरा चारा पैदा किया जाता है तो एक एकड़ ज़मीन में उतना चारा पैदा होता है जितना कि गोचरभूमि की दो या तीन एकड़ भूमि में। इसलिए आजकल के समय में जब कि भूमि की माँग बहुत बढ़ गई है, गोचरभूमि के लिए परती की ज़मीन छोड़ने की अपेक्षा यही ज्यादा अच्छा है कि खेत में हरा चारा बोया जावे। इसी लिए इंगलिस्तान आदि पश्चिमी देशों में यही रीति प्रचलित हो गई है।

डेढ़ बीघे ज़मीन में एक उत्तम और दुधार गाय के लिए काफी हरा चारा पैदा हो सकता है। गेहूँ, जौ, उड़द, जुआर, बाजरा, समा और मूँगफली के हरे पौदे गायों के लिए बहुत लाभदायक होते हैं और उनसे दूध बहुत गाढ़ा हो जाता

है। दूब तथा और भी कई तरह की घास भी गाय के लिए अच्छी होती है। कई विलायती घासों को गौएँ बड़े चाव से खाती हैं, और उनका बीज एक बार डाल देने पर वे हमेशा उगती तथा बढ़ती रहती हैं। पत्ता-गोभी भी गायों के लिए अच्छी होती है।

हम लिख चुके हैं कि पश्चिमी देशों में यही रीति प्रचलित हो गई है। कहीं-कहीं तो लोग वर्ष भर गायों को गौशाला ही में रखते हैं और खेत से हरा चारा काटकर और गाड़ी में भरकर उनके खाने के लिए पहुँचाते रहते हैं। ऐसी दशा में गौशाला के पास ही एक खुला हुआ बाड़ा या मैदान रखते हैं जिसमें जाड़ों में दोपहरी में और गर्मियों में दूध दुहने के बाद थोड़ी सी खुली हवा तथा कसरत के लिए गौओं को छोड़ देते हैं। जब गौएँ बाड़े में होती हैं तब गौशाला को अच्छी तरह साफ़ कर देना चाहिए। गौओं को इस प्रकार रखने के अनेक लाभ हैं—

(१) गौओं को चरागाह तक आने-जाने व चरने में परिश्रम नहीं करना पड़ता है। जितना गौ को कम परिश्रम करना पड़ता है उतना ही उसके अधिक तथा गाढ़ा दूध उत्पन्न होता है इस प्रकार पहिले की अपेक्षा गौएँ दूध बहुत देने लगती हैं। परीक्षा द्वारा मालूम हुआ है कि यदि गौओं को इस प्रकार रखा जावे तो उनके पहिले की अपेक्षा ड्योढ़ा दूध

उत्पन्न होने लगता है । इसकी परीक्षा हर एक व्यक्ति करके देख सकता है ।

(२) गर्मियों में गर्मी के कारण गौओं का दूध कम हो जाता है । गौशाला में ही गौओं को हरा चारा खिलाने से उनको दिन में चरागाह जाने की आवश्यकता नहीं रहती और वे आराम से अपने ठण्डे घरों में रह सकती हैं । इस प्रकार गर्मियों में भी उनके दूध कम नहीं होने पाता ।

(३) गौशाला में रहने से गौओं का सारा गोबर प्राप्त हो जाता है । उसका वह भाग जो मार्ग में या चरागाह में नष्ट हो जाता था अब खाद के काम में आ सकता है जिससे भूमि की उपज बढ़ जावेगी ।

(४) गौशाला में ही आहार मिल जाने से पशु चरने जाने की अपेक्षा स्वस्थ रहता है ।

(५) गौशाला में रहने से पशुओं को बीमार पशुओं से मिलने का अवसर नहीं मिलता । इस कारण वे उन छूत की बीमारियों से बचे रहते हैं जो चरागाह में बहुधा लग जाती हैं ।

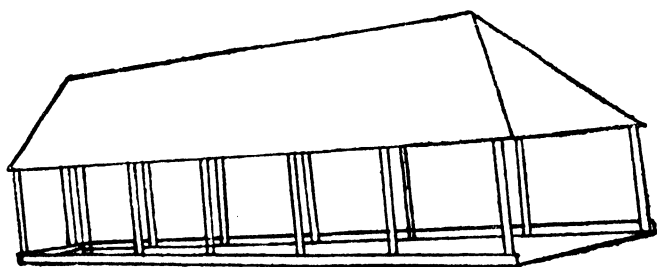
(६) एक-दो गौओं के रखनेवालों को यह विशेष लाभ होता है कि चरागाह में चरवाहे उनकी गौओं का दूध नहीं चुरा सकते व उनके साथ दुर्व्यवहार नहीं कर सकते ।

यह तो सच है कि खेत में हरा चारा बोनो में बीज खरीदने, खाद डालने, हल चलाने और दूसरे कामों के लिए धन तथा परिश्रम दोनों की आवश्यकता होती है परन्तु उसी भूमि में से दुगुने व तिगुने चारे की पैदावार से तथा दूध व गोबर की अधिक प्राप्ति से हरा चारा बोनो तथा काटकर गौशाला तक पहुँचाने का व्यय ही नहीं प्राप्त हो जाता है वरन् पहिले की अपेक्षा अधिक लाभ भी होता है ।

आठवाँ प्रकरण

गौओं का घर

गौ के लिए उसके बाँधने का स्थान भी बहुत महत्त्व का है क्योंकि पशु का स्वस्थ रहना उसी पर बहुत कुछ निर्भर है। दोपहर के समय गाय को धूप से और रात के समय शीत से बचाना दोनों ही ज़रूरी बातें हैं। जाड़े में गौओं के मकान में हवा के झोंके नहीं आने चाहिए। बरसात में मकान में सील भी नहीं रहनी चाहिए। सीली जगहों में रहने से पशु बीमार हो जाता है। और गर्मियों में वह खुला तथा ठण्डा होना चाहिए। मकान हमेशा हवादार तथा रोशनीदार होना चाहिए।

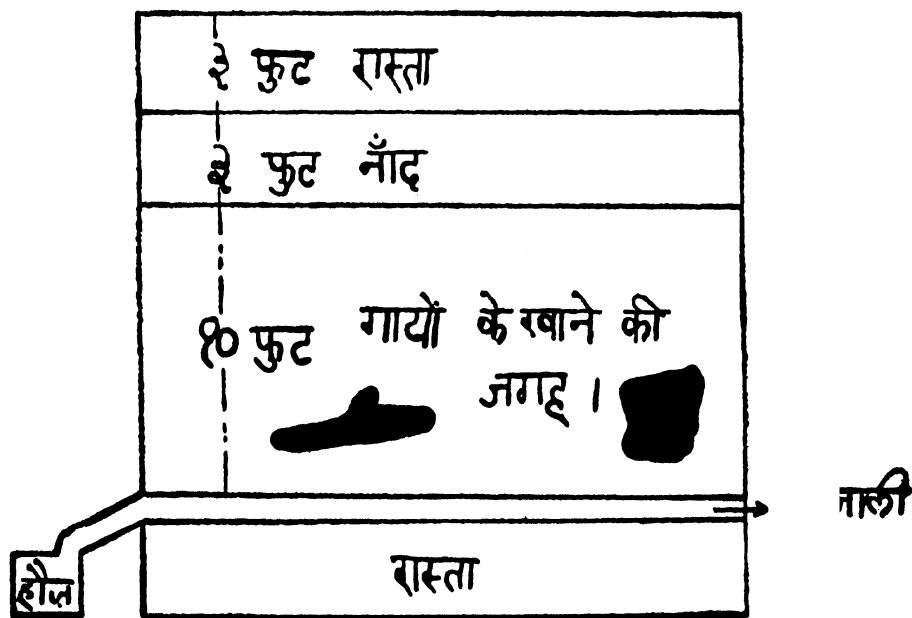


गौ का घर

हमारे देश में गोरूओं के लिए ऐसा मकान बड़ी आसानी तथा कम व्यय से बन सकता है। हम काठ या मिट्टी के खम्भों पर छप्पर या खपरैल की छत छावाकर गौओं के लिए उत्तम

मकान बनवा सकते हैं। मकान चाहे कच्चा हो चाहे पक्का, परन्तु फ़र्श पक्का होना चाहिए। कच्चे फ़र्श में गड्ढे हो जाते हैं और फिर वह आसानी से साफ़ नहीं किया जा सकता। कच्चे घर में दुर्गन्ध आने लगती है। फ़र्श पर ईंटों के टुकड़े और चूने को अच्छी तरह कुटवाकर नम्बरी ईंटों को चूने या सिमेंट से जमवा देना चाहिए। ऐसा फ़र्श बहुत दिन तक चलेगा। सिमेंट का फ़र्श बहुत चिकना होता है। इस पर गौश्री के फिसल जाने की आशङ्का रहती है। इसलिए सिमेंट का फ़र्श अच्छा नहीं होता।

गौ के बाँधने के घर को कुर्सी ज़मीन से लगभग आध गज़ ऊँची होनी चाहिए। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, घर के



आगे पहिले एक गज़ चौड़ा रास्ता होना चाहिए । फिर गज़ भर चौड़ी नाँद और फिर तीन गज़ ६ गिरह चौड़ी गौ के खड़े होने की जगह होनी चाहिए । खड़े होने की जगह के पीछे एक पक्की नाली होनी चाहिए । खड़े होने की जगह का ढाल नाली की तरफ़ होना चाहिए ताकि पेशाब नाली में बह जावे और ज़मीन सूखी रहे । नाली छः या नौ इंच चौड़ी तथा तीन इंच गहरी होनी चाहिए । नाली पक्की और ढलुआँ होनी चाहिए ।

नाँद पक्की होनी चाहिए और उस पर सिमेंट का पल-स्तर होना चाहिए । नाँद अन्दर की तरफ़ १८ इंच से २१ इंच तक चौड़ी और १२ इंच से १५ इंच गहरी होनी चाहिए । नाँद का पेंदा ज़मीन से कम से कम एक फ़ुट ऊँचा होना चाहिए ।

गौ के घर की ऊँचाई दस फ़ीट से कम नहीं होनी चाहिए । ऐसा मकान खूब हवादार होगा और साफ़ व सूखा भी आसानी से रखा जा सकता है । इस मकान के दर्वाज़े और खिड़कियाँ टट्टी व काठ के बना सकते हैं । टाट के परदेन से भी अच्छी तरह काम चल सकता है ।

गर्मियों में खिड़की व दर्वाज़ों को खुला रखना चाहिए । जाड़ों में रात के समय दर्वाज़े खिड़कियाँ बन्द कर देनी चाहिए । बरसात में भी बौछार की तरफ़ के दर्वाज़े खिड़किय बन्द कर देनी चाहिए ।

मकान को साफ़ रखना बड़ा ज़रूरी है। उसे सबेरे-शाम झाड़ना ही काफी नहीं होगा। परन्तु दिन में एक बार उसे रगड़-रगड़कर धो डालना चाहिए। गोबर हटाते रहना चाहिए। फ़नील और पानी से भी घर को धोते रहना चाहिए। जब गौएँ चरने चली जावें उस समय मकान को धो डालना चाहिए। इस प्रकार गौओं के घर को बहुत साफ़-सुथरा रखना चाहिए।

घर के पास एक हैज़ होना चाहिए जिसमें घर के अन्दर का पानी आकर जमा हो जाया करे। इस हैज़ को रोज़ साफ़ करना चाहिए तथा ढककर रखना चाहिए।

यदि एक-दो गौएँ रखनी हों तो घर के किसी कमरे या अस्तबल में रखी जा सकती हैं। परन्तु मकान तथा फ़र्श की सफ़ाई का हर हालत में पूरा-पूरा ख़याल रखना चाहिए।

एक-दो गौओं के लिए जस्ते व क़लई के टब या मिट्टी की नाँद काम में लाई जा सकती हैं। जस्ते व क़लई के टब प्रतिदिन माँज-धोकर साफ़ किये जा सकते हैं। मिट्टी की नाँद को साफ़ रखना बड़ा कठिन है। उसमें से दुर्गन्ध आने लगती है। इसलिए उसे थोड़े दिन के बाद धूप में अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए। टब या नाँद का साफ़ रखना बड़ा ज़रूरी है।

बहुत सी गौएँ हों तो सिमेंट की पक्की तथा लम्बी नाँद ही सबमें अच्छी है। इसमें कोने नहीं होने चाहिए। गोल

नाँदें आसानी से तथा अच्छी तरह साफ़ की जा सकती हैं । इसको साफ़ करने में मेहनत बहुत कम पड़ेगी । बारह-तेरह टवों को साफ़ करने में कई घण्टे लग जावेंगे परन्तु बारह-तेरह गौओं की लम्बी नाँद आधे घंटे ही में साफ़ हो सकती है ।

सबेरे-शाम दोनों समय नाँद को माँज-धोकर साफ़ कर देना चाहिए ।

गौओं को बाँधना—एक-दो गौओं को तो हम साधारण रीति से बाँध सकते हैं । परन्तु जब बहुत सी गौएँ एक ही नाँद में खाती हों तो उनको इस प्रकार बाँधना चाहिए कि वे एक दूसरे के पास न पहुँच सकें और उनके बाँधने में जगह कम लगे ।

हम कई प्रकार से उन्हें उपर्युक्त ढङ्ग से बाँध सकते हैं । परन्तु नीचे लिखी विधि सबसे सरल तथा सस्ती है ।

चार-चार फीट की दूरी पर नाँद के बराबर खम्भे गाड़ देने चाहिए । छः-छः फीट लम्बी रस्सी या लोहे की ज़ंजीरों के दोनों सिरों को पास के दो खम्भों से बाँध देना चाहिए । यह रस्सी उतनी ऊँची बाँधनी चाहिए जितनी ऊँची कि नाँद है । इन रस्सियों के बीच में चार फीट लम्बी रस्सी व ज़ंजीर बाँध देनी चाहिए और उसी से गौ को गर्दन में फन्दा डालकर बाँध देना चाहिए । इस प्रकार गौ को बाँधने से वह अपने

पास की गौओं को सता नहीं सकती यद्यपि वह आराम से उठ-बैठ व लेट सकती है ।

खम्भों में लोहे के कड़े डालकर उनमें रस्सी बाँधने से पशु को और भी सुगमता होगी, क्योंकि उठते-बैठते समय कड़े आसानी से ऊपर-नीचे को सरक जावेंगे जिससे पशु की गर्दन कसने नहीं पावेगी ।

दूध देनेवाली गौओं, बछड़ों, साँड़ों तथा बिआनेवाली गौओं के लिए अलग-अलग मकान होने चाहिएँ ।

नवाँ प्रकरण

गाय की सफ़ाई

गौओं को बिलकुल साफ़ रखना चाहिए। निरोग पशु को सप्ताह में एक-दो बार नहलाना भी चाहिए। जाड़े और बरसात में अधिक नहीं नहलाना चाहिए। जाड़ों में महीने में एक बार और बरसात में दो बार नहलाना काफी होगा। जाड़ों में दोपहरी को और बरसात में खुले दिन नहलाना चाहिए। नहलाने के बाद पशु को विशेषकर उसके ऐन और थनों को कपड़े से अच्छी तरह अँगोछना चाहिए ताकि शरीर सूख जावे। गौओं को ठण्ड बड़ी जल्द लग जाती है और गीले थनों में हवा लगने से उनके फट जाने की सम्भावना रहती है। इसलिए उनकी रक्षा सर्दी से बड़ी सावधानी से करनी चाहिए। छः महीने से कम आयु के बच्चों को न नहलाना चाहिए।

गौओं को नित्य ब्रुश व मोटे कपड़े से झाड़ना व मलना चाहिए। घोड़े का ब्रुश गौओं को झाड़ने के काम में भी आ सकता है।

गौएँ प्रतिदिन झाड़ने तथा साफ़ रखने से निरोग रहती हैं और उनको जूँ, चिचड़ी, कलीली आदि भी नहीं सताती

हैं। छोटे-छोटे बच्चों को दो दिन में एक बार अवश्य झाड़ना चाहिए तथा उनके शरीर से चिचड़ियाँ आदि छुड़ा देनी चाहिए।

गौओं की हर प्रकार के कीड़ों से रक्षा करनी चाहिए। जूँ गौओं को बहुत सताती हैं। यदि इनसे गौओं की रक्षा नहीं की जावेगी तो वे उनके काटने से बीमार हो जावेंगी। जूँ इतनी छोटी होती हैं कि वे आसानी से दिखलाई नहीं पड़तीं। यदि गौएँ अपने शरीर को किसी चीज़ से रगड़ती व खुजलाती हों तो शरीर में जुओं को ढूँढ़ना चाहिए। बछड़ों व बछिरियों के जूँ अकसर पड़ जाती हैं। यदि उनका ध्यान नहीं रखा जावेगा तो वे मर जावेंगे।

तम्बाकू के पानी से नहलाने से जूँ मर जाती हैं। मिट्टी के तेल से भी वे मर जाती हैं पर उसका प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। जब जूँ पड़ जावें तब कैंची से पशु के बाल काट देने चाहिए।

चिचड़ियाँ भी गाय को बहुत सताती हैं। उनको छुड़ा देना चाहिए। वे बहुधा ऐन में चिपटी रहती हैं। पानी में शरीफ़े की पत्तियाँ छौटाकर नहलाने से वे मिट जाती हैं।

मक्खी मच्छर भी गौओं को बहुत सताते हैं। नीम का तेल लगाकर तीन दिन बाद गर्म पानी और साबुन से नहलाने से जूँ, चिचड़ियाँ आदि मर जाती हैं।

गौश्रों को नित्य व्यायाम की आवश्यकता होती है ।
उनको प्रतिदिन घण्टे आध घण्टे के लिए खुली हवा में फिरने
देना चाहिए । बराबर बँधी रखने से वे बीमार हो जाती हैं ।
बछड़ों और साँड़ों को भी कसरत को ज़रूरत होती है ।

दसवाँ प्रकरण

दूध और उसके गुण

दूध में मुख्यतया पाँच चीजें होती हैं—(१) जल, (२) घृत, (३) मांस पदार्थ, (४) शर्करा या शक्कर, (५) निरिन्द्रिय क्षार।

ये पाँचों चीजें सब प्राणियों के दूध में पाई जाती हैं। परन्तु उनका परिमाण प्रत्येक योनि के अनुसार न्यूनाधिक होता है। हम जानते हैं कि गौ का दूध भैंस के दूध की अपेक्षा पतला होता है अर्थात् गौ के दूध में भैंस के दूध की अपेक्षा अधिक पानी होता है। इसी प्रकार भैंस के दूध में घृत अधिक होता है। ऊँटनी का दूध बहुत मीठा होता है अर्थात् उसमें शर्करा या शक्कर अधिक होती है। रोगी पशु के दूध में सूक्ष्म रोगजन्तु भी आ जाते हैं। इनको हम सूक्ष्मदर्शक यन्त्र के द्वारा देख सकते हैं।

दूध में पानी के अतिरिक्त जो और घटक हैं उनमें से कुछ तो पानी में घुले रहते हैं और कुछ अति सूक्ष्म अणुरूप से पानी में तैरते रहते हैं। दूध में घृत अति सूक्ष्म बिन्दुओं के रूप में तैरता रहता है।

ये बिना सूक्ष्मदर्शक यन्त्र की सहायता के नहीं दिखलाई पड़ते। ये घृतबिन्दु पानी से बहुत हलके होते हैं, और दूध के कुछ समय तक स्थिर रहने पर उसके ऊपर एक तह में एकत्रित हो जाते हैं। इस तह को कच्ची मलाई कहते हैं। इसी कारण दूध देते समय उसको हिलाकर घृतबिन्दुओं को मिला लेते हैं।

दूध वायु तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की गन्ध को अपने में सोख लेता है। यदि दूध के निकट कोई ऐसा पदार्थ हो जिसमें से तीव्र गन्ध आती हो तो उस पदार्थ की गन्ध दूध में भी आ जाती है। यदि हम उपलों की आग पर दूध उबालते हैं, तो हमको दूध में उपलों के धुएँ की महक आने लगती है। दूध धुएँ की गन्ध सोख लेता है। इसी प्रकार दूध में हमको कभी-कभी किसी और पदार्थ की भी गन्ध आने लगती है। कभी-कभी गन्ध के कारण उबालते समय दूध फट जाता है।

अतएव दूध को गन्दी जगह व गन्दे पात्र में नहीं रखना चाहिए। अन्यथा वह खराब हो जाता है।

यह सब जानते हैं कि सील की जगह, कूड़े में, सड़ती हुई चीज़ों और नाली आदि में कीड़े पड़ जाते हैं। इनमें से कुछ कीड़े तो बड़े होते हैं और कुछ इतने छोटे होते हैं कि वे आँखों से दिखलाई भी नहीं पड़ते। यदि हम ऐसे स्थानों को सूक्ष्मदर्शक यन्त्र द्वारा देखें तो हमें मालूम होगा कि गन्दी

जगह की हवा में लाखों ऐसे सूक्ष्म कीड़े (कीटाणु) उड़ा करते हैं । बस्तियों में सड़ती हुई चीजों से, मकानों के मोरी-पाखानों से तथा कूड़े आदि से असंख्य कीड़े पैदा होते हैं; और वे हवा के द्वारा आसपास की जगह में फैल जाते हैं ।

ये कीटाणु सड़ी-गली गन्दी चीजों तथा रेत मिट्टी में बहुतायत से पाये जाते हैं । रेत मिट्टी तो इनका जन्मस्थान ही समझना चाहिए । यहाँ ये बहुत बढ़ते हैं । इसी लिए मिट्टी खाने से बालकों के पेट में कीड़े पड़ जाते हैं ।

यदि कीटाणुओं से भरी हवा दूध से टकराती है तो दूध हवा के साथ कीटाणुओं को भी अपने में सोख लेता है । रेत मिट्टी के द्वारा भी कीटाणु दूध में प्रवेश कर जाते हैं ।

जिस तरह दूध मनुष्य के लिए अत्यन्त उपयुक्त और पौष्टिक आहार है, उसी प्रकार यह सूक्ष्म और लुद्र कीटाणुओं तथा कार्ब, फूँई आदि वनस्पतियों के लिए भी वर्द्धक और उपयोगी है । इसलिए दूध में इनकी वृद्धि अति शीघ्रता से होती है और दूध दूषित हो जाता है । यही कारण है कि कच्चा दूध बहुत जल्द खराब हो जाता है । यदि वह शाम तक रखा रहे तो रखा-रखा ही फट जाता है । दूध के खट्टे हो जाने का कारण भी ये सूक्ष्म जन्तु ही हैं । यदि हम दूध को उबाल लेते हैं तो यह सूक्ष्म जन्तु मर जाते हैं और दूध देर तक अच्छी अवस्था में रह सकता है ।

न्दो जगहों में और गन्दे बर्तनों में ये सूक्ष्म जन्तु

बहुतायत से होते हैं। इसी लिए गन्दी जगह व गन्दे बर्तनों में रखा हुआ दूध जल्द खराब हो जाता है। कभी-कभी तो गन्दे बर्तनों में दूध उबालते ही फट जाता है। गर्मी में कीड़े-मकोड़े बहुत संख्या में पैदा होते हैं। परन्तु जाड़ों में ठण्ड के कारण वे बहुत कम हो जाते हैं। ठीक यही हाल दूध के कीटाणुओं का है। ठण्डे दूध में कीटाणु बहुत कम बढ़ते व पैदा होते हैं। इसी कारण जाड़ों में दूध बहुत देर तक खराब नहीं होता।

जहाँ तक हो, हमें इन कीटाणुओं को दूध में प्रवेश नहीं करने देना चाहिए। दूध को स्वच्छ स्थान में स्वच्छता से रखने से ही हम उसको कीटाणुओं से बचा सकते हैं। एक बार जब ये कीटाणु दूध में प्रवेश कर जाते हैं तो बहुत जल्द बढ़ने लगते हैं और दूध को दूषित कर डालते हैं। गन्दी जगहों का दूध मनुष्यों के लिए हानिकारक तथा कभी-कभी विषैला तक हो जाता है। दूध को जितना साफ़ तथा ठण्डी जगह और साफ़ बर्तनों में रखा जावेगा उतना ही वह अच्छा तथा गुणकारी रहेगा।

गन्दी जगह व गन्दी तरह व गर्म स्थानों में रखने से दूध खराब हो जाता है, और मनुष्यों के पीने के योग्य नहीं रहता।

कालरा, प्लेग और चय रोग आदि के कीटाणु हवा या रेत मिट्टी के द्वारा दूध में प्रवेश कर जाते हैं और दूध को

दूषित कर देते हैं। इसलिए दूध को बहुत सावधानी से रखना चाहिए।

दूध के बर्तन—दूध सर्वदा बहुत साफ़ बर्तनों में रखना चाहिए। दूध के बर्तन सदैव बेजोड़ होने चाहिए। उनमें दर्ज या कोने नहीं होने चाहिए। इनके होने से वे भली भाँति साफ़ नहीं किये जा सकते और उनमें दूध का अंश लगा रह जाता है, जिसके सड़ने पर बहुत से सूक्ष्म कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं और बर्तन का दूध बिगड़ने लगता है। बेजोड़, गोल तथा चौड़े मुँह के बर्तन अच्छी तरह से साफ़ किये जा सकते हैं।

लोटा या टोकनी दूध रखने के लिए बहुत उपयुक्त हैं। यद्यपि मिट्टी के बर्तनों में दूध देर तक खराब नहीं होता तथापि वे दूध रखने के लिए बहुत अच्छे नहीं होते क्योंकि वे अच्छी तरह साफ़ नहीं किये जा सकते। उनके छेदों में दूध का भाग रह जाता है और वह सड़कर दूध को दूषित कर देता है।

दूध के लिए बर्तन जस्ते, क़लई, काँच या चीनी के होने चाहिए। ये अच्छी तरह साफ़ किये जा सकते हैं, इसलिए इनमें दूध जल्दो नहीं बिगड़ता। दूध को हमेशा साफ़ जगह ढककर रखना चाहिए। खुला दूध कूड़ा-करकट या रेत मिट्टी के पड़ जाने से जल्द बिगड़ जाता है। इसलिए जहाँ

कहीं दूध ले जाना हो, ढककर ले जाना चाहिए । सड़क पर घोड़े-गाड़ी के चलने से धूल उड़ा करती है । इसलिए सड़क पर खुला हुआ दूध कभी नहीं ले जाना चाहिए ।

ग्यारहवाँ प्रकरण

गौश्रों को दुहना

गौश्रों की धार स्वच्छता से काढ़नी चाहिए । दूध काढ़ने के पहिले पशु को, विशेषकर उसके पीछे के भाग और पूँछ को, किसी मोटे कपड़े या ब्रुश से रगड़कर साफ़ कर लेना चाहिए । ऐसा करने से पूँछ हिलाने पर दूध में कूड़ा-करकट नहीं पड़ेगा ।

ऐन और थन धोकर अँगोछ लेना चाहिए । गीले थनों में हवा लगने से उनके फटने की सम्भावना रहती है । दूध दुहने-वाले को दुहने के पहिले अपने हाथ भी अच्छी तरह धो लेने चाहिएँ । दूध काढ़ते समय दुहनेवाले को अपना या गौ का शरीर नहीं खुजाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से हाथ मैले हो जाते हैं ।

जिस मनुष्य को छूत का रोग हो उसे दूध कभी नहीं दुहने देना चाहिए । दूध भिन्न-भिन्न प्रकार की वायु तथा गन्ध को सोख लेता है । इसलिए दूध स्वच्छ स्थान में काढ़ना चाहिए । गन्दे घरों में दूध दुहने से मल-मूत्र द्वारा दुर्गन्धित वायु दूध को ख़राब कर देती है । दूध बड़ी नाज़ुक चीज़ है और यदि दुर्गन्ध, मैले व कूड़े-करकट से उसकी रक्षा साव-

धानी से नहीं की जाती है तो वह बड़ी जल्दी दूषित हो जाता है ।

दूध दुहने के पहिले गौ के थन बच्चे के मुँह में देने चाहिएँ तथा हाथ से उसी प्रकार (जिस प्रकार दुहते समय थनों को खींचते हैं) आहिस्ते-आहिस्ते ऊपर से नीचे को खींचना चाहिए ।

ऐसा करने से गौ के दूध उतरने लगता है । थोड़ी ही देर में गौ का ऐन बड़ा तथा दूध से भरा हुआ मालूम होने लगता है । जब गौ के दूध उतरने लगता है तब हम साधारण बोलचाल में कहते हैं कि गौ पिन्हा गई । जब गौ पिन्हा जाती है तब दूध दुहने में बहुत आसानी होती है ।

दूध सर्वदा चुपचाप नियत समय पर शीघ्रता से दुहना चाहिए । जहाँ तक हो सके दुहते समय गौओं को मारना या डाटना-डपटना नहीं चाहिए । कुछ गौएँ डाटने-डपटने से दूध चढ़ा लेती हैं ।

जब बछड़ा थन चूसता है तो गौ के मातृस्नेह के कारण दूध उतरने लगता है । जब हम बछड़े को पकड़ लेते हैं और दूध दुहने लगते हैं तो थोड़ी देर बाद गौ के दूध उतरना बन्द हो जाता है । इसलिए गौ की धार जल्दी-जल्दी काढ़नी चाहिए । दुहने में देर करने से गौ चञ्चल हो जाती है । जल्दी-जल्दी धार काढ़ने से गौ चुपचाप खड़ी रहती है, और उसको एक प्रकार का आराम सा मालूम होता है, जिससे

उसके अधिक दूध उतरने लगता है। गौ का सारा दूध दुह लेना चाहिए। ऐन में दूध रह जाने से वह शरीर में सूख जावेगा और फिर कम परिमाण में उत्पन्न होने लगेगा। ऐन में बूँद भर भी दूध नहीं छोड़ना चाहिए।

गौएँ सब काम नियत समय पर करना चाहती हैं, वे नियत समय पर जङ्गल जाना व खाना चाहती हैं। यदि उनको सानी देने में या जङ्गल भेजने में देर हो जाती है, तो वे रँभाने लगती हैं। गौएँ परिवर्त्तन बिलकुल नहीं पसन्द करती हैं। वे ज़रा से परिवर्त्तन से ही बहुत चञ्चल हो जाती हैं। यदि उनके दैनिक क्रम में परिवर्त्तन न हो तो ठीक समय पर वे स्वयं काम करना सीख लेती हैं। वे शीघ्र ही अपना मकान और गली पहिचानने लगती हैं और समय पर जङ्गल से अपने आप ही नियत मार्ग से अपने घर आकर अपने स्थान पर खड़ी हो जाती हैं। यदि उनके बाँधने के स्थान को बदल दिया जावे तो वे चञ्चल हो जाती हैं।

जैसे वे नियत समय पर चरने जाना चाहती हैं वैसे ही वे नियत समय पर दुहाना भी चाहती हैं। नियत समय पर दुहने से उनके आप ही आप दूध उतरने लगता है।

यदि गौ दुहाते समय मचला करती हो तो दुहनेवाले को बदल देना चाहिए। अच्छे दुहनेवाले के सामने गौ आरम्भ में शायद कुछ मचले परन्तु अन्त में वह कभी नहीं मचलेगी।

गौओं की अवस्था के अनुसार दो या तीन बार धार काढ़नी चाहिए । (१) दो बार की अपेक्षा तीन बार धार काढ़ने से गौओं के दूध अधिक मात्रा में पैदा होता है । (२) उन अच्छी दुधार गौओं को जिनको पर्याप्त पौष्टिक चारा मिलता है बियाने के कुछ काल बाद तक तीन बार दुहना चाहिए क्योंकि इस समय उनके दूध बहुत पैदा होता है और तीन बार धार काढ़ने से उनके थन अधिक तनने नहीं पाते । इससे उनको आराम मिलता है और ऐन भी सुरक्षित रहते हैं । कभी-कभी दुधार गौओं के ऐन दूध के भार के कारण खराब हो जाते हैं । (३) कम अन्तर से दुहने से गौओं का दूध गाढ़ा और स्वादिष्ट हो जाता है ।

तीन बार दुहने से गौ पर अधिक ज़ोर पड़ता है । अतः-एव गौ को अधिक मात्रा में पौष्टिक आहार देने ही से तीन बार दुहने में स्थायी लाभ होगा । गाय को जितनी अच्छी खूराक दी जावेगी उतना ही तीन बार धार काढ़ना उपयोगी होगा । केवल बहुत दुधार तथा नई बियान की गौओं ही को तीन बार दुहना लाभदायक हो सकता है ।

थन के सिरे का छेद जिसमें से दूध निकलता है यदि छोटा होता है तो दूध आसानी से नहीं निकलता । ऐसी दशा में दूध निकालने के लिए थनों को ज़ोर से दबाना बर्खास्त करना पड़ता है और थन कड़े मालूम होते हैं । बहुत सी गौओं के थन कड़े होते हैं । ऐसी गौओं को दुहने में बड़ी

असुविधा होती है। इन गौओं का सारा दूध दुह लेना बड़ा कठिन है। थन में दूध रह जाने के कारण वह सूख जाता है और शीघ्र ही कम उत्पन्न होने लगता है।



थन में डाट लगी हुई है

यदि हम हाथीदाँत, हड्डी या कड़ी लकड़ी की चार डाट जैसी कि चित्र में बनी हुई है बनवा लें और उनको घी या मक्खन से चिकना करके दूध दुह लेने के बाद प्रति दिन चारों थनों में लगा दिया करें तो कुछ समय के बाद थनों के छेद बड़े हो जावेंगे और धार आसानी से निकलने लगेगी। डाट पैनी या खुर्दरी नहीं होनी चाहिए।

बियाने के बाद तीन-चार महीने तक और दिनों की अपेक्षा गौ बहुत कम वयस से अधिक दूध देती है। इस समय मौएँ इतना दूध देती हैं और उन पर इतना जोर पड़ता है कि उनका वजन तक कम होने लगता है। तीन महीने के बाद उनका वजन घटना बन्द हो जाता है और

फिर वह धीरे-धीरे बढ़कर अपनी असली हालत पर आ जाता है। “फोड्ज़ ऐंड फीडिंग” नाम की पुस्तक में लिखा है कि “पन्द्रह गौओं का औसत लेने से मालूम हुआ कि पहिले सात सप्ताहों में प्रत्येक गौ का $18\frac{1}{2}$ सेर वज़न प्रति सप्ताह कम हो जाता है।”

अतएव यदि गौएँ बियाते समय स्वस्थ तथा बलिष्ठ अवस्था में नहीं होंगी तो वे अधिक मात्रा में दूध नहीं दे सकेंगी।

जब बच्चा पेट में बड़ा हो जाता है तो उसके पोषण के लिए गौ को अधिक शक्ति व्यय करने की ज़रूरत होती है और यदि इस समय गौ दूध भी देती है तो वह बच्चे का अच्छो तरह पोषण नहीं कर सकेगी और स्वयं भी शरीर पर बहुत ज़ोर पड़ने के कारण कमज़ोर हो जावेगी। इसका फल यह होगा कि बियाने पर गौ दुर्बल होने के कारण अधिक दूध नहीं दे पावेगी और बच्चा भी कमज़ोर पैदा होगा।

इसलिए बियाने के तीन-चार महीने पहिले गाय को दुहना बन्द कर देना चाहिए। कुछ लोग गाभिन गाय को दूध बन्द करने पर बहुत कम आहार देते हैं और इस तरह उसे दुबली हो जाने देते हैं। पर यह भी बड़ी भूल है। हमको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि गौ बियाने के समय हृष्ट-पुष्ट हो ताकि वह बाद में दूध देने का भार आसानी से सहन कर सके।

कुछ गौएँ अपने या दूसरी गौओं के दूध को पी लेती हैं। उनकी नाक में कागज़ का पट्टा या लकड़ी का टुकड़ा जैसा कि चित्र में दिखलाया गया है लगा देना चाहिए। यह टुकड़ा आठ इंच लम्बा, पाँच इंच चौड़ा तथा $\frac{1}{2}$ इंच मोटा होना



चाहिए। इसके दोनों सिरों बहुत दूर-दूर नहीं होने चाहिए वरना वह ढीला होने के कारण नाक में से गिर जावेगा। दोनों सिरों के बीच की दूरी $\frac{1}{2}$ इंच के लगभग होनी चाहिए। सिरों गोल तथा चिकने होने चाहिए ताकि गौ की नाक में चुभें नहीं।

जब गौ दूध पीने की कोशिश करती है तो यह टुकड़ा उसके मुँह और थनों के बीच में आ जाता है। इस टुकड़े से गौ को चरने या खाने में कोई कठिनाई नहीं होती क्योंकि वह चारे के ऊपर रहता है।

बारहवाँ प्रकरण

प्रजनन

अब हम गोपालन में सबसे अधिक महत्त्व के विषय पर आते हैं। यह वह विषय है जिसके द्वारा पाश्चात्यों ने अपनी गौओं की आश्चर्यजनक उन्नति की है। वैज्ञानिक प्रजनन द्वारा उनकी गौएँ ५० सेर तक दूध देने लगी हैं। यदि हम भी पशु-पालन और प्रजनन की नई पद्धतियाँ काम में लावेंगे तो इसमें सन्देह नहीं कि हमारी गौएँ भी ५० सेर तक दूध देने लगेंगी।

पूसा में गोवंश की उन्नति सङ्कर और प्रगतिक पद्धतियों से की जा रही है। गत पन्द्रह वर्षों में मोटगुमरी जाति की गौएँ प्रगतिक पद्धति से पूसा कालिज में दुगुना दूध देने लगी हैं। एशायर और मोटगुमरी की सङ्कर सन्तान एक ब्यान में मोटगुमरी की सबमें अच्छी और दुधार गौ से पचास प्रतिशत अधिक दूध देती हैं। इनमें से कोई-कोई गाय एक ब्यान में ६००० सेर दूध देती है। मोटगुमरी की अच्छी गौएँ साधारणतः एक ब्यान में केवल २००० सेर दूध देती हैं और हिन्दुस्तान में औसत दर्जे की गाय ४०० सेर से अधिक दूध नहीं देती है। १५ वर्ष के अन्दर ही

सन्तानोत्पत्ति की नई विधि से पूसा कालिज में कितनी उन्नति हुई है !

ईश्वर का यह नियम है कि जैसे माता-पिता होते हैं वैसी ही उनकी सन्तान भी होती है । भिन्न-भिन्न जातियों की गौओं के वर्णन में हम देख चुके हैं कि प्रत्येक जाति की गौओं में कुछ विशेष गुण पाये जाते हैं । ये विशेषताएँ उनकी सन्तति में भी आ जाती हैं । हिसार की गौ और साँड़ से उत्पन्न बछिया में भी हिसार की गौओं के गुण होंगे । उसके शरीर की बनावट, रङ्ग, रूप, स्वभाव और गुण सब हिसार की गौओं तथा अपने माता-पिता से मिलते-जुलते होते हैं ।

इसी प्रकार संयुक्त प्रान्त के पूर्वी जिलों की गौएँ कभी बड़े शरीरवाली तथा दुधार गाय नहीं उत्पन्न कर सकतीं । वे सदा छोटी तथा कम दूध देनेवाली बछिया उत्पन्न करेंगी ।

यही नियम सब जीवधारियों पर लागू है । हमारे यहाँ कहावत भी है कि 'माँ पर पूत पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा ।' इसी कारण प्रत्येक जाति रङ्ग, रूप, शरीर की बनावट और स्वभाव में एक दूसरे से भिन्न है ।

अब पाठकगण समझ गये होंगे कि सन्तान माता पिता पर ही होती है । हम यह भी जानते हैं कि किसी दम्पति की सन्तान में माता के गुण अधिक मात्रा में आते हैं और किसी की सन्तान में पिता के । इसका क्या कारण है ?

हमें मालूम है कि यदि माता-पिता में से कोई पीले रंग और ठिंगने कदवाली नैपाली जाति का हो और दूसरा हमारे प्रान्त का हो तो उनसे जो सन्तान होगी वह रङ्ग, रूप तथा शरीर की बनावट में बहुत कुछ नैपाली से मिलती-जुलती होगी। इसका कारण यह है कि पीलापन तथा छोटा कद नैपालियों का विशेष गुण हो गया है। नैपालियों ने किसी अन्य जाति की स्त्री व पुरुष से विवाह नहीं किया है। अतएव उनके विशेष गुण तथा शरीर की बनावट उनके बच्चों में बिना किसी अन्तर के इतने समय से उत्पन्न होती आई हैं कि अब वे उनके खून में स्थिर हो गई हैं। ये गुण अब उनमें इतने प्रबल हो गए हैं कि अब नैपाली लोग चाहे किसी भी जाति की स्त्री या पुरुष से सन्तान उत्पन्न करें, उनकी सन्तान में उनके विशेष गुण अधिक मात्रा में अवश्य आ जावेंगे।

इसी प्रकार श्वेत रङ्ग अँगरेजों में इतना स्थिर हो गया है कि यदि माता पिता में से एक भी अँगरेज होगा तो बच्चे अवश्य गोरे होंगे। हमारे देश में यूरेशियन लोग हमेशा गोरे होते हैं।

केवल शुद्ध रक्तवाली जातियों में उनके विशेष गुण ऐसी दृढ़ता से स्थिर हो जाते हैं कि जब ये लोग दूसरी जाति के लोगों से सन्तान उत्पन्न करते हैं तो इनके स्थिर गुण ही सन्तान में अधिक मात्रा में आते हैं।

यही हाल गौओं का है। शुद्ध जाति की गौओं में उनके गुण बड़ो दृढ़ता से स्थिर हो जाते हैं। जब शुद्ध जाति के साँड़

या गौएँ विजाति की गौ या साँड़ से सन्तान उत्पन्न करते हैं तो ऐसी सन्तान में शुद्ध जाति के गुण विशेष रूप से आ जाते हैं ।

सन्तान में माता-पिता के कुछ गुण तो अधिक मात्रा में आते हैं और कुछ कम मात्रा में । अधिक मात्रा में आनेवाले गुण तो स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं, परन्तु कम मात्रा में आनेवाले गुण अदृश्य या गुप्त रहते हैं । कभी-कभी ये गुप्त गुण एक या दो पीढ़ियों तक अदृश्य रहते हैं और फिर किसी भावी सन्तान में बढ़कर प्रकट हो जाते हैं । इस प्रकार माता-पिता के वे अदृश्य गुण जो कि उनके पूर्वजों में स्पष्ट थे कभी-कभी उनकी सन्तान में प्रकट हो जाते हैं ।

इसलिए प्रजनन के लिए शुद्ध रक्तवाले पशु जिनके पूर्वजों में भी किसी अनिच्छित गुणयुक्त पशुओं का रक्त न मिला हो चुनने चाहिएँ ।

ऊपर के नियमों के आधार पर प्रजनन की निम्नलिखित तीन रीतियाँ काम में लाई जाती हैं—

(१) प्रगतिक पद्धति

(२) संकर पद्धति

(३) सगोत्र पद्धति

(१) प्रगतिक पद्धति—प्रत्येक पशु में भिन्नता होती है । इसलिए हम अपने इच्छानुसार इष्ट गुण-सम्पन्न पशु प्रजनन के लिए चुन सकते हैं । हमारा इच्छित गुण यदि किसी

प्राणी में अधिक हो तो उसके द्वारा सन्तान उत्पन्न करने से वह गुण सन्तान में आ जावेगा । लगातार कई पीढ़ियों तक ऐसा करने से वह गुण बढ़ता ही जावेगा । इस पद्धति में केवल इच्छित गुण-सम्पन्न पशु ही प्रजनन के लिए रखे जाते हैं और सबको बेच डालते हैं । इस प्रकार पशुओं में बहुत परिवर्तन तथा उन्नति कर सकते हैं । इस पद्धति में तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए—(१) इस बात का निर्णय कर लेना चाहिए कि हम अपने पशुओं में कौन से गुण चाहते हैं । (२) फिर उन पशुओं को चुनना चाहिए जिनमें इष्ट गुण सबसे अधिक हों । (३) जब तक इच्छित गुण-सम्पन्न सन्तान न पैदा हो जावे तब तक कार्य धैर्यपूर्वक किये जावें । एक-दो पीढ़ी बाद अपना उद्देश्य कभी नहीं बदलना चाहिए । ऐसा करने से बड़ी हानि होती है । इस प्रकार कोई छः पीढ़ियों में सन्तोषजनक सफलता प्राप्त हो सकती है ।

सङ्कर पद्धति—इस पद्धति के अनुसार भिन्न-भिन्न जातियों के पशुओं का आपस में मेल कराया जाता है । नर या मादा में से एक उस जाति का होता है जिसके गुण हम अपनी गो-सन्तान में उत्पन्न करना चाहते हैं ।

उदाहरणार्थ यदि हम स्थानीय गौओं में हिसार का गौओं के गुण उत्पन्न करना चाहते हैं तो हम हिसार के साँड़ का स्थानीय गौओं से मेल करावेंगे । इस मेल से जो बछिया उत्पन्न होगी उसमें हिसार की जाति का आधा रक्त होगा ।

यह बछिया बड़ी होने पर अपनी माँ से अधिक दूध देगी और उससे उत्तम होगी। इस बछिया का मेल फिर हिसार के साँड़ से करावेंगे। इनके सम्बन्ध से जो सन्तान उत्पन्न होगी उसमें हिसार की गौओं का तीन चौथाई रक्त होगा।

इनका मेल फिर हिसार के साँड़ से करावेंगे। इस प्रकार चार-पाँच पीढ़ियों तक ऐसा करने से गो-सन्तान में हिसार की गौओं के गुण उत्पन्न तथा स्थिर हो जावेंगे। पहिली बार के मेल से जो सन्तान उत्पन्न होगी उसमें हिसार की जाति का आधा रक्त होगा, दूसरी बार में तीन चौथाई, तीसरी बार में $\frac{2}{3}$ और चौथी बार में $\frac{3}{4}$ ।

माता और पिता दोनों के ही गुण उनकी सन्तान में बराबर मात्रा में आते हैं। परन्तु प्रजनन में साँड़ गाय की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली तथा महत्त्वपूर्ण है क्योंकि साँड़ के गाय की अपेक्षा उतने ही समय में अधिक सन्तान उत्पन्न होती है। एक साँड़ तीस या चालीस गौओं के लिए काफी होता है, अर्थात् उसका प्रत्येक गौ की अपेक्षा तीस चालीस गुना सन्तान पर अधिक प्रभाव पड़ता है। नर का प्रभाव गौओं पर इतना पड़ता है कि कुछ ही पीढ़ियों में वह गौओं के समूह के समूह को बदल सकता है। वे सब नर की जाति के सदृश ही हो जाती हैं।

इस प्रकार नर का प्रभाव गौओं पर बहुत अधिक पड़ता ।

यदि साँड़ में कोई त्रुटि या दोष हो तो वह भी गौओं में आ जावेगा क्योंकि जिस प्रकार माता-पिता के उत्तम गुण सन्तान में आते हैं वैसे ही बुरे भी आते हैं ।

इसलिए साँड़ों के चुनने में बड़ी सावधानी की ज़रूरत है । साँड़ सदा उत्तम तथा स्थिर गुणों के और शुद्ध रक्त के होने चाहिए । यदि साँड़ों में गुण स्थिर नहीं हैं तो उनका सन्तान में न आना बहुत सम्भव है । बहुधा देखा जाता है कि रूपवान् पिता के कुरूप सन्तान पैदा हो जाती है । ऐसी अवस्था में माता की कुरूपता पिता की सुन्दरता की अपेक्षा अधिक स्थिर होती है और सन्तान माता का रूप ग्रहण कर लेती है ।

सङ्कर पद्धति से गौओं की उन्नति बहुत शीघ्र होती है । यदि हम विदेशों से या अपने यहाँ की उत्तम जाति के अच्छे साँड़ मँगाकर अपने यहाँ की गौओं से मेल करावें तो हम अपनी गौओं की उन्नति बहुत शीघ्र कर सकते हैं ।

परन्तु विदेशों से आये हुए साँड़ों में जल-वायु के परिवर्तन से कुछ अनिच्छित गुण आ जाते हैं या उनके गुणों में कुछ कमी आ जाती है ।

सगोत्र पद्धति—इस पद्धति में एक ही कुटुम्ब के इष्ट गुण-सम्पन्न निकट सम्बन्धी पशुओं का मेल कराया जाता है । उदाहरणार्थ भाई बहिन में सम्बन्ध कराते हैं । भाई बहिन में एक से गुण होने के कारण उनकी सन्तान में उनके गुण अधिक मात्रा में आ जाते हैं तथा दृढ़ता के साथ स्थिर हो जाते

हैं। इस प्रकार सन्तान में इच्छित गुण बड़ी जल्दी अच्छी मात्रा में आ जाते हैं।

इतने निकट सम्बन्ध में मेल कराने से किसी प्रकार की आपत्ति की आशङ्का नहीं करनी चाहिए; क्योंकि जङ्गली जानवर कभी भी निकट सम्बन्ध का खयाल नहीं करते। हर एक प्रकार के जङ्गली जानवर भुण्ड बनाकर फिरा करते हैं और आपस ही में सन्तान उत्पन्न कर लेते हैं। इस प्रकार निकट सम्बन्ध में सन्तान उत्पन्न करने का पशुओं में कोई दुष्परिणाम नहीं होता।

इस प्रकार पशु उत्पन्न करने में माता-पिता की निरोगता तथा उनकी त्रुटियों पर बड़ा ध्यान रखना चाहिए। यदि निकट सम्बन्धियों में कोई रोग या अवगुण होगा तो वह उनकी सन्तान में और भी बढ़ जावेगा और सन्तान में स्थिर हो जाने पर वह बड़ी मुश्किल से निकलेगा। रोगी पशुओं से सन्तान कभी उत्पन्न नहीं करानी चाहिए, क्योंकि रोगी पशुओं की सन्तान में रोग बढ़ता ही जायगा।

सगोत्र पद्धति से गो सन्तान उत्पन्न करने में ज़रा सी भी असावधानी से हानि हो जाने की बहुत सम्भावना रहती है। इसलिए केवल अनुभवी मनुष्यों ही को इस पद्धति का अवलम्बन करना चाहिए। इन लोगों को गौओं के अच्छे और बुरे गुणों का तथा उनके मिश्रण से इच्छित गुण कैसे उत्पन्न हो सकते हैं इसका पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए।

इस पद्धति में सबसे बड़ा गुण यह है कि इससे पशुओं में अच्छे गुण दृढ़ता से स्थिर हो जाते हैं अर्थात् जब ये पशु सन्तान उत्पन्न करते हैं तो इनकी सन्तति में वे गुण अधिक मात्रा में आ जाते हैं। सगोत्र पद्धति से उत्पन्न गो-सन्तान में यदि कभी भी बल या गुणों में कोई कमी पाई जावे तो हमको इस प्रकार गो-सन्तान उत्पन्न करना बन्द कर देना चाहिए और इच्छित गुण-सम्पन्न साँड़ बाहर से मँगवाकर सन्तान उत्पन्न करनी चाहिए।

अब आप भली भाँति समझ गये होंगे कि गो-सन्तान उत्पन्न करने के लिए केवल श्रेष्ठ, निरोग तथा गुण-सम्पन्न नर और मादा काम में लाने चाहिए और फिर क्रमशः उन्नति करते रहना चाहिए। कभी-कभी उत्तम गौएँ भी दुर्व्यवहार तथा आहार की कमी के कारण अवनत हो जाती हैं। इसलिए उनके पालन और आहार का भी बहुत ध्यान रखना चाहिए। ज्योंही पशु में कोई अवगुण दिखलाई दे त्योंही उस अवगुण को मिटाने का उपाय करना चाहिए। यदि उचित ध्यान नहीं रखा जावेगा तो पशु उसी प्रकार अवनति करता चला जावेगा जिस प्रकार ध्यानपूर्वक पालन करने से वह क्रमशः उन्नति करता चला जाता है। जो मनुष्य अपनी गौओं की उन्नति करना चाहता है उसे आगे लिखी बातों के अनुसार काम करना चाहिए—

(१) प्रजनन के लिए हृष्ट-पुष्ट तथा निरोग पशु चुन लेने चाहिए । उनमें किसी प्रकार का रोग व त्रुटि नहीं होनी चाहिए । पशु देखने में सुन्दर तथा सुडौल होना चाहिए ।

(२) उनमें इच्छित गुण स्पष्ट तथा विशेष रूप से होने चाहिए ।

(३) यदि गौएँ किसी विशेष जाति की हों तो उनका रक्त बिलकुल शुद्ध होना चाहिए । ऐसा न करने से कभी-कभी सन्तान में उस निकृष्ट जाति के (जिसका रक्त उसकी माता के शरीर में मिला हुआ है) अवगुण आ जाते हैं ।

(४) गौएँ सीधी तथा अच्छे स्वभाव की होनी चाहिए ।

इस प्रकार गौओं को चुनकर गोपालक को अच्छी सन्तान उत्पन्न करने के लिए (१) गौओं को पौष्टिक तथा पर्याप्त चारा नियत समय पर देना चाहिए ।

गौओं को उनके पेट से कभी कम व अधिक चारा न देना चाहिए; क्योंकि चारे का प्रभाव पशु पर सबसे अधिक पड़ता है । और किसी बात से उसकी उन्नति इतनी नहीं होती जितनी कि उचित आहार से । उत्तम और पर्याप्त आहार देने से निकृष्ट पशुओं के भी बड़ी तथा बलवान् सन्तान पैदा होती है ।

'(२) धूप, शीत और वर्षा से उनकी रक्षा करनी चाहिए ।

(३) उनके साथ अच्छा तथा दयालुता का बर्ताव करना चाहिए ताकि वे सीधी और अच्छे स्वभाव की हो जावे' ।

ऊपर के नियमों का पालन किये बिना पशु उन्नति नहीं कर सकते, बल्कि वे अवनति ही करते चले जावेंगे । इसलिए प्रजनन की चाहे किसी भी पद्धति से काम लिया जाय, इन नियमों का ध्यान रखना बड़ा आवश्यक है ।

प्रजनन की देशी विधि अत्यन्त असन्तोषजनक है । हमारे देश में इस विषय की ओर कोई भी ध्यान नहीं देता । प्रत्येक नगर तथा गाँव में अच्छे-बुरे सभी प्रकार के साँड़ फिरा करते हैं । ये साँड़ गौओं के झुण्ड के साथ चरने चले जाते हैं, और वहीं उनके साथ सम्भोग भी करते हैं । साँड़ चाहे रोगी हो चाहे निरोग, बलवान् हो चाहे निर्बल, अच्छी जाति का हो चाहे नीच जाति का, गौ रखनेवालों को इससे कुछ मतलब नहीं ।

गाय आखिर पशु ही है । उसमें मनुष्य की तरह बुद्धि तो होती नहीं । न उसे सुन्दरता और कुरूपता या गुण और अवगुण की परख होती है । इसलिए जब उसे सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा होती है तब उसे भला या बुरा, बलिष्ठ या रोगी, सुन्दर या कुरूप, युवा या वृद्ध जैसा साँड़ मिल जाता है उसी को वह स्वीकार कर लेती है । इसलिए यह कर्त्तव्य गायों के मालिकों का है कि उचित प्रकार के साँड़ का प्रबन्ध करें और उसी के साथ अपनी गाय का मेल होने दें ।

हमारे देश में बहुधा उत्तम और दुधार गौओं का मेल बूढ़े, निर्बल तथा कम दुधार जाति के साँड़ों से हो जाता है ।

यहाँ पर ऐसा प्रतिदिन ही हुआ करता है। गौओं का बुरे साँड़ों से मेल हो जाना बड़ा हानिकारक है। ऐसा होने से गौओं का दूध कम हो जाता है और जो बच्चा पैदा होता है वह भी बुरी नसल का होता है क्योंकि सन्तान में साँड़ के गुण आधे आ जाते हैं। यदि गौ का उत्तम जाति के साँड़ों से मेल होता है तो पहिले की अपेक्षा उनके दूध अधिक मात्रा में उत्पन्न होता है और सन्तान भी मूल्यवान् पैदा होती है।

हमारे देश में बहुत सी गौएँ रहो और बेकार साँड़ों के कारण बाँझ हो जाती हैं। योग्य साँड़ों के न चुनने के कारण ही बहुत सी अच्छी गौओं के गर्भ नहीं रहता। इससे बड़ी हानि होती है। अच्छे साँड़ न होने के कारण गौ की उपयोगिता बहुत कम हो जाती है। यदि वह गाभिन हुई तो उसके दूध कम होगा और उसकी सन्तान कम मूल्य की होगी जिससे आगे चलकर गोवंश का हास होगा और यदि गर्भ ही नहीं रहा तो गौ बिलकुल बेकार हो जायगी।

अतएव गौओं को सर्वदा हृष्टपुष्ट, निरोग तथा उत्तम जाति के साँड़ों ही से बर्धाना (गाभिन कराना) चाहिए।

तीन वर्ष से कम और आठ वर्ष से अधिक आयुवाले साँड़ को कभी काम में नहीं लाना चाहिए। छोटी उम्र के साँड़ की सन्तान निर्बल तथा अल्पायु होती है और माता का दूध भी कम हो जाता है।

उत्तरी भारत में सरकार ने जनता के लाभ के लिए उत्तम साँड़ कई स्थानों में रख छोड़े हैं। हर एक पुरुष इनका उपयोग मुफ़्त कर सकता है। यदि आसपास कोई अच्छा साँड़ न हो तो गौ बर्धाने के लिए बाहर से साँड़ मँगा लेना चाहिए, क्योंकि अच्छे साँड़ के मँगाने में जो कुछ व्यय होगा उसके बदले में पर्याप्त लाभ हो जावेगा।

गौशालाओं में और उन लोगों को जो बहुत सी गौएँ पालते हैं निज के उत्तम साँड़ रखने चाहिएँ क्योंकि बिना उत्तम साँड़ों के गौओं से यथेष्ट लाभ नहीं हो सकता। तीस-चालीस गौओं के लिए एक साँड़ होना चाहिए।

यदि धनवान् मनुष्य तथा गौशालाएँ दो-एक अच्छे साँड़ मँगवाकर अपने यहाँ सर्वसाधारण के उपयोग के लिए रख छोड़ें तो बड़ा लाभ होगा। ऐसा करने से वे गोरक्षा में बहुत सहायता देंगे और साथ ही बहुत पुण्य भी कमावेंगे। बुरे या कम उम्र के साँड़ों को कभी न छोड़ना चाहिए। इनसे अत्यन्त हीन सन्तान पैदा होती है जो देश पर भार-रूप हो जाती है। यह दीन-हीन गौएँ या तो क़साई के हाथ बिककर काटी जाती हैं या गौशालाओं में अपना दुःखमय जीवन बिताती हैं। सैकड़ों हज़ारों गौशालाएँ इसी प्रकार की गौओं से भरी पड़ी हैं। इनमें हमारी मूर्खता के कारण ही व्यर्थ इतना रुपया खर्च होता है। इनसे गौओं का कुछ लाभ नहीं पहुँचता। यदि हम बुद्धिमानी से काम लें तो इसी रुपये से हम आदर्श

गौशालाएँ खोलकर वास्तव में गोसेवा तथा गोरक्षा कर सकते हैं जिससे गौश्रां का और हमारा दोनों का लाभ हो । इस प्रकार बुरे साँड़ छोड़नेवाले गोवंश का वध या अवनति करने के पाप के भागी होते हैं । उनको ऐसा करने से पुण्य कुछ नहीं मिल सकता ।

अच्छे साँड़ों के लक्षण—साँड़ जितना बड़ा होगा उतना ही अच्छा होगा, यद्यपि साँड़ की ऊँचाई उसकी जाति पर बहुत कुछ निर्भर है । साँड़ का हन चौड़ा तथा गहरा होना चाहिए, धड़ लम्बा तथा गोल, नस और पट्टे मज़बूत, विशेषकर कन्धे और हाथ-पैरों के जोड़ । पैर बड़े तथा भरे हुए होने चाहिए । यदि वे बहुत लम्बे न हों तो अच्छा है । घुटने बड़े होने चाहिए और पैर एक दूसरे से दूर; ताकि वे बड़े शरीर का भार उठा सकें । शरीर गठा हुआ, मुँह छोटा, आँखें बड़ी तथा आकर्षक, माथा और नथने बड़े, गर्दन छोटी तथा मज़बूत होनी चाहिए और कूबड़ (hump) बड़ा । अच्छा साँड़ सदा अपना सिर सीधा रखता है । उसके कान बहुत बड़े नहीं होते । छूँछी बड़ी तथा लटकी हुई नहीं होनी चाहिए ।

तेरहवाँ प्रकरण

गौश्रों को बर्धाना

गौ को बर्धाने में बड़ी सावधानी की ज़रूरत है क्योंकि यदि इसमें कुछ ग़लती हो जाय तो उससे बड़े दुष्परिणाम हो सकते हैं और गौ की उपयोगिता बहुत कम हो जाती है ।

सबसे पहिले इस बात का निश्चय कर लेना चाहिए कि गौ गाभिन है या नहीं । यदि गाभिन गौ का साँड़ के साथ समागम हो जाय तो सम्भव है कि उसका गर्भपात हो जाय और उसके स्वास्थ्य पर भी बड़ा बुरा प्रभाव पड़े । कुछ लोगों का ख़्याल है कि गाभिन गौ गर्मायगी ही नहीं और साँड़ भी उसके साथ समागम नहीं करेगा । परन्तु यह ठीक नहीं है । कभी-कभी बहुत दिन की गाभिन गौएँ भी गर्माने के लक्षण प्रकट करती हैं और साँड़ भी उनको सताते हैं ।

गौ गाभिन है या नहीं, इसका आरम्भ में निश्चय करना बड़ा कठिन है । परन्तु इसका ज्ञान होना बहुत आवश्यक है क्योंकि यदि वह समय पर गाभिन नहीं हुई है तो उसका

साँड़ से समागम कराना आवश्यक है और यदि गाभिन हो गई है तो उसकी साँड़ों से रक्षा करनी चाहिए। बियाने के बाद तीन मास तक गौ को साँड़ के पास नहीं जाने देना चाहिए क्योंकि इस समय उसके गर्भाशय का मुँह खुला होता है और वह वीर्य को नहीं रोक सकता। अतएव यदि तीन मास के अन्दर ही गौ का साँड़ से समागम होगा तो गर्भ नहीं रहेगा। यदि तीन मास के अन्दर गौ के गर्माने पर भी उसका साँड़ के साथ समागम न होने दिया जावेगा तो कोई हानि नहीं होगी। इस काल के अन्दर यदि गौ गर्माये तो उसे प्रातःकाल थोड़ा सा मक्खन निकला हुआ ताज़ा दूध देना चाहिए और दोपहर को ठण्डे जल से स्नान कराना चाहिए। इससे वह शान्त हो जावेगी। पौष्टिक तथा अधिक आहार देने से गौ समय के पहिले ही गरमा जाती है।

बियाने के दो-तीन महीने बाद गौ प्रति बार २१ दिन के अन्तर पर साधारणतया गर्माया करती है। कुछ गौएँ न्यूनाधिक काल में भी गर्माती हैं। गौ २४ घण्टे तक गर्म रहती है। गर्माने पर वह बहुत उछलती-कूदती है। पेशाब और गोबर बार-बार करती है और बहुत रँभाती है। (कुछ गौएँ नहीं भी रँभातीं।) वे अपनी छ बराबर हिलाती रहती हैं और उनकी भूख कम हो जाती है। वे दूसरे पशुओं पर चढ़ने लगती हैं। इस समय योनि अन्य समय की अपेक्षा लाल हो जाती है और उसमें से पानी के समान द्रव पदार्थ

बहने लगता है। इस समय गौएँ, उस रस्सी को जिससे वे बँधी होती हैं, पैर के नीचे दबाकर खींचने लगती हैं। कभी-कभी गौएँ मरखनी भी हो जाती हैं और सिर आगे करके मारती हैं। परन्तु कुछ गौएँ अपनी दशा बहुत कम प्रकट होने देती हैं।

इन लक्षणों को देखकर समझ लेना चाहिए कि गाय गर्मा गई है और साँड़ को छोड़ना चाहिए।

यदि इस समय गौ का साँड़ से समागम न होने दिया जावेगा तो बड़ी हानि होगी। सम्भव है, गौ बाँझ हो जावे या गाभिन होने पर उसका गर्भपात हो जावे।

यदि बर्धाने पर भी गौ के गर्भ न रहे तो उसे फिर से गर्माने पर बर्धाना चाहिए।

गौएँ साधारणतः २८० दिन तक गर्भावस्था में रहती हैं। गर्भिणी हो जाने पर गाय का स्वभाव शान्त हो जाता है। ऐन फूलने लगता है और गति मन्द हो जाती है। जैसे-जैसे गर्भ बढ़ता जाता है, गाय में तेज दिखलाई पड़ने लगता है।

चौथे-पाँचवें महीने गौ का गर्भ प्रत्यक्ष मालूम होने लगता है। जब वह ठण्डा पानी पीती है तब गर्भ हिलता-डुलता दिखलाई पड़ता है। गौ की दाहिनी तरफ़ की जाँघ के पास, उँगलियों से पेट को दबाने से एक कड़ी सी वस्तु उछलती सी मालूम होती है।

बलिष्ठ तथा अधिक खानेवाली गौएँ कठिनाई से गाभिन होती हैं। इनको कई बार बर्धाने की आवश्यकता होती है।

ऐसी गौओं को थोड़ा सा दुबला करने से वे शीघ्र ही गाभिन हो जाती हैं ।

यदि कोई गौ एक वर्ष के अन्दर गाभिन न हो तो उसे और गौओं के साथ जंगल में रहने तथा चरने के लिए भेज देना चाहिए । जल-वायु तथा आहार में अन्तर होने के कारण सम्भव है वह गाभिन हो जावे । यदि गौ समय पर गाभिन न हो तो उसे थोड़ा सा महुआ दे देना चाहिए । इससे वह शीघ्र ही गाभिन हो जावेगी । परन्तु दुधार गौओं को महुआ कभी नहीं देना चाहिए, क्योंकि यह बहुत गर्म होता है । इससे दूध सूख जाता है । गुड़ देने से भी गौएँ गर्माने लगती हैं ।

गौ को बर्धाने के बाद बाँधकर चुपचाप छोड़ देना चाहिए । इस दशा में वह घण्टों चुप बैठी रहेगी । उस दिन उसे केवल हरी घास या भूसा और पानी देना चाहिए । थोड़ा सा भीगा हुआ कुथली का गोद भी देना चाहिए ।

गाभिन गौ को अच्छी तरह रखना चाहिए । बियाने से तीन महीने पहिले गौ को दुहना बन्द कर देना चाहिए । इसके बाद दूध दुहने से गौ और बच्चे दोनों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है । दूध दुहना बन्द कर देने पर उसके बछड़े को छोड़े रखना चाहिए ताकि वह गौ का थोड़ा-थोड़ा दूध पीता रहे । थोड़े दिनों में गौ का दूध बिलकुल सूख जावेगा । यदि बछड़े को भी दूध नहीं पीने दिया जावेगा

और दूध दुहना भी एकदम बन्द कर दिया जावेगा तो गौ के ऐन सूज जावेंगे और उसको बड़ो पीड़ा होगी ।

दूध बन्द करने पर गौ को केवल हरा चारा या भूसा ही देना चाहिए । थोड़ा सा चोकर और नमक भी लाभदायक होता है । अनाज, खली या और कोई गर्म चीज़ नहीं देनी चाहिए । परन्तु गौ को भूखा कभी नहीं रखना चाहिए । उसको हरा चारा या भूसा भरपेट मिलना चाहिए ।

दूध काढ़ना बन्द कर देने पर भी यदि गौओं को अनाज, खली आदि पौष्टिक आहार दिया जावेगा तो वे मोटी हो जावेंगी । क्योंकि इस समय दूध न उत्पन्न होने के कारण पौष्टिक आहार से चर्बी बनने लगेगी । यदि एक बार भी आहार से चर्बी बनने लगेगी तो सदैव ऐसा ही होता रहेगा और बियाने पर भी गौ दूध कम देगी । उसका सारा आहार चर्बी में परिणत हो जाया करेगा । यदि बियाने के पहिले गौ मोटी हो जावेगी तो उसके बच्चा भी बहुत निर्बल पैदा होगा ।

अनाज और खली आदि गर्म चीज़ें देने से गौ गर्मा जाती हैं और गर्भपात हो जाता है । उसको साँड़ से सम्भोग करने की इच्छा हो जाती है ।

परन्तु इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं है कि गाय को कमज़ोर हो जाने दिया जाय । यदि गाय कमज़ोर होगी तो वह पेट के बच्चे का पोषण अच्छी तरह नहीं कर सकेगी

और बियाने पर दुर्बलता के कारण अधिक दूध भी नहीं पावेगी ।

गाभिन गौओं को काफ़ी कसरत करानी चाहिए । परन्तु उनको दौड़ाना या कुदाना कभी नहीं चाहिए । ऐसा करने से गर्भपात की सम्भावना रहती है । उन्हें साफ़ और सुथरा रखना चाहिए ।

बच्चा पैदा होने के कुछ दिन पहिले गौ की देख-रेख बहुत रखनी चाहिए । उसके ऐन की परीक्षा करके देखना चाहिए कि दूध की अधिकता के कारण कहीं वह सूज तो नहीं गये हैं । एक-दो बियान की कुछ गौओं के इतना दूध उतरता है कि ऐन सूजने न देने के लिए बियाने के पहिले ही उनकी धार काढ़नी पड़ती है ।

इच्छानुसार गौ के नर या मादा सन्तान उत्पन्न करना असम्भव है । बहुत से विख्यात गोपालकों की सम्मति है कि यदि गौ के गर्माते ही उसका समागम साँड़ के साथ हो जावेगा और गर्भ रह जावेगा तो उसके मादा उत्पन्न होगी अन्यथा नर ।

लेकिन यह नियम केवल कुछ हद तक ही ठीक है । सर्वदा इस नियम के अनुसार फल प्राप्त नहीं होता ।

चौदहवाँ प्रकरण

बाँझ गौएँ

कभी-कभी ऐसा होता है कि हृष्ट-पुष्ट और मोटी गौएँ भी गाभिन नहीं होतीं, यद्यपि वे नियत समय पर बराबर गर्माती हैं और उचित रीति से उनका साँड़ से मेल भी होता है। ऐसी गौओं को कसरत खूब करानी चाहिए और चारा थोड़ा देना चाहिए। उन्हें अनाज का दलिया या खली आदि कुछ नहीं देना चाहिए। केवल हरी घास या भूसा ही देना चाहिए। इससे वे दुबली हो जावेंगी और गर्माने पर शीघ्र ही गाभिन हो जावेंगी।

बहुत सी गौएँ गर्मे तथा बहुत बलवर्द्धक चारा खाने से या कसरत न करने से बाँझ हो जाती हैं। इसी कारण बहुत सी उत्तम गौएँ बाँझ हो जाती हैं। ऐसी गौओं को आहार बहुत कम देना चाहिए और उन्हें कसरत खूब करानी चाहिए।

एक बार एक मनुष्य ने एक बहुमूल्य गौ बाँझ होने के कारण बहुत कम दामों में खरीद ली। फिर वह उसे अपने घर, जो कि खरीदने की जगह से लगभग सौ मील था, पैदल ले गया। घर पहुँचने के कुछ ही समय बाद गाय गाभिन हो गई। रास्ते में गौ को चलाने में परिश्रम करना पड़ा था इस

कारण उसका बाँझपन जाता रहा । एक महाशय का अनुभव है कि बाँझ गौओं से बोझा ढुवाने से या हल जुतवाने से वे गाभिन होने के योग्य हो जाती हैं ।

महात्मा गान्धो ने गौ-महासभा में एक बार सभापति के आसन से कहा था—“बाँझ गौओं को क़साई के हाथ कभी न बेचना चाहिए । बाँझ तथा दूध न देनेवाली गौओं को माल ढोने या हल चलाने के काम में लाया जावेगा तो वे शीघ्र ही गाभिन होने के योग्य हो जावेंगी । यदि वे गाभिन न भी होंगी तो भी उन्हें क़साइयों के हाथ बेचने की अपेक्षा अच्छी तरह रखने तथा माल ढुवाने में कोई हानि नहीं है । शास्त्र भी गौओं से बोझा ढुवाने को मना नहीं करते । यदि कोई मनुष्य इस तरह गौ की रक्षा करना चाहता है तो हमें उसकी निन्दा नहीं करनी चाहिए ।”

मोटी गौओं की चर्बी बढ़ जाती है जिससे उनके गर्भाशय को जानेवाली नस या नली का रास्ता चर्बी से रुक सा जाता है और वीर्य गर्भाशय तक नहीं पहुँचने पाता । इस कारण गौ के गर्भ नहीं रहने पाता ।

गौओं से कठिन परिश्रम लेने से यह चर्बी पिघल जाती है और गौएँ गर्भ धारण के योग्य हो जाती हैं ।

कभी-कभी पाँच-छः दिन तक बाँझ गौ को सुहागा देने से भी वह ठीक हो जाती है ।

अमलिखित कारणों से गौएँ बहुधा बाँझ हो जाती हैं—

(१) चर्बी बढ़ जाने से पशु बाँझ हो जाते हैं । इसका उपाय पशु को परिश्रम कराकर तथा चारा कम देकर दुबला करना है ।

(२) बहुत दुबले तथा निर्बल पशु भी बाँझ हो जाते हैं । इस दशा में पशु कठिनाई से जीवन भर ही को चारा पाता है । उसमें सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति नहीं रहती । इसका उपाय भी प्रत्यक्ष ही है । गौ को आहार अधिक तथा पौष्टिक देने से उसमें फिर सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति आ जावेगी और वह गाम्भिन हो जावेगी । पशु को भूखा रखना बहुत बुरा है । ऐसा करने से केवल पशु ही को पीड़ा नहीं होती किन्तु उसके मालिक को भी आर्थिक हानि होती है । कम से कम पशु को इतना आहार तो देना ही चाहिए कि वह स्वस्थ रह सके ।

(३) गौएँ ईख, गन्ना, गुड़ तथा और मीठे पदार्थ अधिक खाने से भी बाँझ हो जाती हैं । इसलिए गौओं को गुड़ आदि कभी अधिक मात्रा में नहीं देना चाहिए ।

(४) कभी-कभी गौ की पेशाब की जगह अन्दर की ओर से फट और सूज सी जाती है । इस रोग से भी गौएँ बाँझ हो जाती हैं । यह बीमारी लगनी (छूत की) है और गौओं में फैल जाती है ।

आधी छटाँक पोटेसियम बाई कारबोनेट (Pottassium-by-carbonate) को तीन पाव गुनगुने पानी में घोलकर

समागम के एक घण्टे पहिले पिचकारी लगाने से सम्भव है गर्भ रह जावे ।

(५) कुछ पशु शरीर की बनावट के कारण बाँझ होते हैं । इनका कोई इलाज नहीं हो सकता ।

शरीर की बनावट में कोई त्रुटि होने के कारण भी कुछ पशु बाँझ हो जाते हैं । यह ओपरेसन कराने, अथवा चीरा लगवाने, से जाता रहता है । इसलिए जब पशु ऊपर बताये हुए उपायों से भली भाँति ठीक न हो तो उसे पशुचिकित्सक को दिखलाना चाहिए ।

पन्द्रहवाँ प्रकरण

बच्चे का जन्म तथा पालन

गाय जिस दिन गाभिन होती है उससे लगभग २८४ दिन बाद बियाती है। परन्तु कभी-कभी इससे कुछ कम या अधिक दिन भी लग जाते हैं। इसलिए पहिले से यह निश्चित रूप से नहीं मालूम होता कि गाय अमुक दिन बच्चा देगी। इसलिए गाभिन गाय पर पूरी तरह से नज़र रखनी चाहिए।

जब प्रसव के कुछ दिन रह जाते हैं तब गाय की सूरत-शक्त में कुछ अन्तर आ जाता है। कोख में गढ़ा पड़ जाता है। पेट नीचे को झुक जाता है। यदि गाय बूढ़ी होती है तो गर्भस्थित बालक के स्थान में और भी स्पष्ट परिवर्तन दिखाई पड़ता है। बहुत सी गायों को बेचैनी भी होने लगती है, और उनके मलाशय तथा मूत्राशय में भी शायद उत्तेजना होती है जिसके कारण वे दुम को बहुत हिलाती हैं और बार-बार गोबर करने की चेष्टा करती हैं परन्तु गोबर होता नहीं। योनि ढीली और बड़ी हो जाती है और बियाने से दो-तीन सप्ताह पहिले उसमें से सफ़ेद या पोले रंग का एक लसदार द्रव पदार्थ रिस-रिसकर बाहर निकलने लगता है।

जब गाय में ये परिवर्तन दिखलाई पड़ें तभी समझ लेना चाहिए कि उसका प्रसव-काल बहुत निकट आ गया है और उसे चरने के लिए बाहर भेजना बन्द कर देना चाहिए और घर ही पर बाँधकर रखना चाहिए। बाहर भेजने में यह डर रहता है कि अचानक कोई असाधारण बात हो जाने से बच्चे का समय से पहिले ही जन्म न हो जाय। बहुत सी गौएँ तो ऊपर कहे हुए परिवर्तन के प्रकट होने पर एक या दो ही दिन में बिया जाती हैं, परन्तु बहुतों को एक हफ़ता या हफ़ते से भी अधिक दिन लग जाते हैं। इन दिनों गाय को शान्त रखना बहुत अच्छा होता है।

बियाने से दस-पन्द्रह दिन पहिले ऐन फूल जाता है और किसी-किसी गाय के ऐन में तो दूध भर जाता है।

ऐसी अवस्था में गाय को ठण्ड लग जाने का बहुत डर रहता है। इसलिए उसे नहलाना नहीं चाहिए, सूखे स्थान में रखना चाहिए और हवा के झोंकों से बचाना चाहिए।

यदि ऐन बहुत बढ़ गया हो तो उसे गुनगुने पानी से धोते रहना चाहिए। धोने के बाद ऐन को अँगोछकर सुखा लेना चाहिए नहीं तो उनके फट जाने का डर रहता है। सुबह-शाम गाय को दुह भी लेना चाहिए। यदि ऐसी न किया जायगा तो सम्भव है कि ऐन सूज जाय और गाय बीमार हो जाय। इस रोग को डाक्टर दुग्ध-ज्वर कहते हैं और उससे गाय तथा बच्चे दोनों ही को बहुत कष्ट

होता है। परन्तु यह ध्यान रहे कि एक बार दूध दुहना आरम्भ कर देने पर फिर नियमपूर्वक नित्य दुहना ज़रूरी है। दूध दुहते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि थनों में एक बूँद दूध भी न रह जाय। दूध दुह लेने के बाद थनों पर कपूर मिला हुआ अरंडी का तेल मल देना चाहिए। गुनगुने पानी में ज़रा सा फ़नील मिलाकर उससे गाय की योनि को भी धोना चाहिए। धोने के बाद उसे भली भाँति अँगोछ देना चाहिए। इसके सिवा गाय के रहने के स्थान को साफ़-सुथरा और सील से रहित रखना चाहिए।

जब बियाने में घंटे दो घंटे की देर रह जाती है तब गाय के मुख पर चिन्ता सी छा जाती है। आँखें बैठी सी जाती हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि गाय को पीड़ा हो रही है। इन लक्षणों के प्रकट होते ही गाय को उसके स्थान पर ले जाकर चुपचाप छोड़ देना चाहिए। उसके पास ज़्यादा आवे जावे या गुल न करे। फ़र्श पर कुछ पयाल बिछा देना चाहिए और गाय के सामने नरम-नरम हरी घास रख देनी चाहिए; इसके खाने में वह लगी रहेगी और ज़्यादा पीड़ा अनुभव नहीं करेगी।

जब बच्चा जनने का समय आता है तो पहिले तो मुँतलेंड़ी निकलती है। इसके बाद वह फट जाती है। अब गाय लेट जाती है और कुछ समय बाद करवट—प्रायः बाईं करवट—

ले लेती है। अब बच्चे के अगले पैर योनि से बाहर निकले हुए स्पष्ट दिखलाई पड़ने लगते हैं। अगले पैरों से लगा हुआ सिर भी दिखलाई पड़ने लगता है। धीरे-धीरे बच्चा बाहर निकल आता है।

बच्चे के पैदा होते ही गाय उसे चाटने लगती है। उसे मन भरकर चाट लेने देना चाहिए। बच्चा एक प्रकार के द्रव पदार्थ से सना रहता है, परन्तु गाय के चाटने से उसका शरीर साफ हो जाता है। तब वह खड़ा हो जाता है और थनों को ढूँढ़ने लगता है। अगर जेर भी उसी समय गिर जाय तो उसे फौरन वहाँ से हटा देना चाहिए और उसे या तो ज़मीन में गाड़ देना चाहिए या खाद के ढेर में दबा देना चाहिए।

फिर पाव भर गुड़, पाव भर सोंठ और छटाँक भर हल्दी मँगानी चाहिए। सोंठ और हल्दी को कूट-पीसकर और गुड़ में मिलाकर उसमें कुछ गेहूँ का चोकर मिलाना चाहिए। इसमें से आधा गाय को उसी समय खिला देना चाहिए। ऐसा करने से जेर जल्द गिर जाता है और प्रसव के पश्चात् की पीड़ा भी कम हो जाती है। अच्छी नसल की अधिक दूध देनेवाली गायों को प्रसव के पश्चात् बहुत पीड़ा होती है जिससे वे दुर्बल भी हो जाती हैं। गुड़, सोंठ आदि का बचा हुआ भाग, कोई छः घंटे बाद, खिला देना चाहिए। और अधिक खिलाने से हानि होगी।

गाय को इस समय पीने की कोई वस्तु न देनी चाहिए, क्योंकि प्रसव-काल के बाद कुछ घंटे तक ठण्ड लग जाने का बहुत डर रहता है।

प्रसव-काल के कई घंटे बाद गाय को दुहना चाहिए और बच्चे को भी माँ का दूध पीने देना चाहिए। ऐसा करना गाय के स्वास्थ्य की दृष्टि से आवश्यक है, क्योंकि उसके पेट में बच्चे का पोषणकारी जो पदार्थ रह जाता है वह दूध के रूप में निकल आता है। उसका शरीर हलका हो जाता है और उसमें शक्ति आ जाती है। जब बच्चा दूध पीना शुरू करता है तो गाय की पीड़ा घट जाती है। दूध ठोक तौर पर बनने और उतरने लगता है। बच्चे के जन्म के पश्चात् गाय को नित्य नियम से नियत समय पर दुहना चाहिए और उसके ऐन में एक बूँद भी दूध न छोड़ना चाहिए। गौ के बच्चों का आरम्भ में अच्छे प्रकार से लालन-पालन करना चाहिए। यदि आरम्भ में वे हृष्ट-पुष्ट होंगे तो जल्दी-जल्दी बढ़ेंगे और शीघ्र ही काम के योग्य पशु हो जावेंगे। वह बछिया जिसे भर पेट खाना मिलता है एक अध-पेट भोजन मिलनेवाली बछिया की अपेक्षा कम उमर ही में बियाने लगती है और बियाने पर दूध भी अधिक देती है।

इस प्रकार बछियाओं को कम दूध या चारा देने से यद्यपि आरम्भ में थोड़ा सा लाभ अवश्य होता है परन्तु आगे

चलकर बहुत भारी हानि होती है और बहुत सी उत्तम गौओं की सन्तान भी निकम्मी हो जाती है ।

बहुधा बाँधने के स्थान की गन्दगी के कारण ही गौ के बच्चे बीमार हो जाते हैं । बाँधने का स्थान साफ़ तथा हवादार होना चाहिए । यदि बछड़े-बछियाओं को साफ़ और हवादार मकान में रखा जावे, पर्याप्त मात्रा में भोजन दिया जावे, गर्मी-सर्दी से बचाया जावे और साफ़ रखा जावे तो उनके रोगी होने की आशङ्का बहुत कम हो जाती है ।

यदि सम्भव हो तो बच्चों को खुला रखना चाहिए । इनको कसरत की भी ज़रूरत है ।

बच्चे को गौ के थनों से दूध पीने देना ही सर्वोत्तम है । बच्चे की आयु तथा गौ की दूध देने की शक्ति के अनुसार गौ जितना दूध देती है उसके आधे से चौथाई तक की बच्चे को आवश्यकता होती है । छः महीने के बाद बच्चे को गौ के दूध की आवश्यकता नहीं रहती । वह हरी घास, अनाज तथा खली पर रह सकता है । दूसरे तीसरे महीने से बच्चे को थोड़ी-थोड़ी हरी घास और अनाज देना चाहिए । क्रमशः दूध कम देते रहना चाहिए और अनाज तथा घास अधिक । बच्चों को चावल नहीं देना चाहिए । इसमें पोषण शक्ति नहीं होती । मटर, चना, गेहूँ और जौ देने चाहिए ।

गौ के मालिक को जितना हो सके बछड़े को कम दूध देने ही में लाभ है । तथापि यदि बच्चे को पन्द्रह दिन तक

माता के थनों से पर्याप्त मात्रा में दूध नहीं दिया जावेगा तो वह बहुत निर्बल हो जावेगा और उसका शरीर अच्छी तरह बढ़ नहीं पावेगा ।

कम से कम पन्द्रह दिन तक तो बछड़े को पर्याप्त दूध मिलना ही चाहिए । पन्द्रह दिन के बाद गौ के थनों में बछड़े के लिए कम दूध छोड़ सकते हैं और उसकी कमी मक्खन निकले हुए ताज़े दूध या मट्ठे से पूरी कर सकते हैं । धीरे-धीरे एक-दो सप्ताह में मक्खन निकले हुए दूध की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए और गौ के थनों के दूध को कम करते-करते बिलकुल बन्द कर देना चाहिए । केवल गौ को पिन्हाने के लिए बछड़ा छोड़ना चाहिए और सारा दूध दुह लेने के बाद आध घंटे तक बछड़ा गौ के पास छोड़े रखना चाहिए ताकि मातृप्रेम के कारण अधिक दूध उतरा करे ।

मक्खन निकले हुए दूध में उबली हुई अलसी (तीसी), उबला हुआ गेहूँ या जई का दलिया, चोकर आदि मिला देना चाहिए । ऐसा करने से दूध में मक्खन की कमी पूरी हो जाती है और वह थनों से निकले हुए दूध की भाँति ही पौष्टिक हो जाता है । इस मक्खन निकले हुए दूध को उतना ही गर्म करके देना चाहिए जितना कि थन से निकला हुआ दूध होता है, क्योंकि जहाँ तक हो हमको स्वाभाविक ही रहना चाहिए । इस प्रकार बछड़े और बछियाओं को चार बार आहार देना चाहिए । कुछ हरी घास तथा दला हुआ

अनाज भी देना चाहिए। पहिले-पहिल तो वे उसे नहीं खावेंगे पर कुछ समय बाद खाने लगेंगे। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता-जावे वैसे ही आहार की मात्रा भी बढ़ाते रहना चाहिए।

तीन-चार महीने की उम्र के बाद मक्खन निकले हुए दूध की भी उन्हें कोई आवश्यकता नहीं रहती। वे केवल हरी घास, भूसा, अनाज का दलिया तथा खली खाकर बड़ी अच्छी तरह रह सकते हैं। बछड़े-बछियाओं को कभी बहुत अधिक या कम आहार न देना चाहिए। केवल पेटभराऊ आहार ही देना चाहिए।

बछड़ों को साफ़ पानी काफ़ी देना चाहिए, क्योंकि उन्हें प्यास बहुत लगती है। जाड़े में बहुत ठण्डा पानी न देना चाहिए। इससे उनको ठण्ड लग जावेगी। या तो कुएँ का ताज़ा पानी या गुनगुना पानी देना चाहिए।

बछड़ों को पैदाइश ही से नमक देना चाहिए। इससे उनकी अँतड़ियाँ साफ़ रहेंगी।

बछड़ों को गर्मी-सर्दी तथा वर्षा के पानी से सुरक्षित रखना चाहिए। वे बहुत नाजुक होते हैं। असावधानी से उनकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है।

बछड़ों को चिचड़ियों, जुओं तथा मक्खियों आदि से बचाना चाहिए। उन्हें ब्रुश या कपड़े से झाड़ते रहना चाहिए। छोटे बच्चों को बहुत स्नान नहीं कराना चाहिए।

बहुत से बच्चे असावधानी तथा दुर्व्यवहार के कारण मर जाते हैं । ग्वाले उनको पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक तथा गुणकारी आहार नहीं देते । वे उनकी गर्मी तथा सर्दी से रक्षा भी नहीं करते । जूँ, चिचड़ियों आदि तथा गन्दे मकानों के कारण बछड़ों को बड़ा कष्ट होता है । इन कारणों से असंख्य बछड़े मर जाते हैं ।

सोलहवाँ प्रकरण

अन्य देशों से शिक्षा

हमारे देश के राजों महाराजों तथा धनी पुरुषों की तरह अन्य देशों के धनी पुरुष अपना समय व्यर्थ नष्ट नहीं करते। वे लोग कुछ न कुछ कार्य करते रहते हैं। यह सच है कि वे लोग धन कमाने की चिन्ता में नहां रहते। वे मनोविनोद के लिए कोई न कोई रुचिकर काम किया करते हैं। पाश्चात्य देशों में अमीर आदमी हर प्रकार के काम में लगे रहते हैं। कोई खेती करता है, कोई गौएँ पालता है, तो कोई देश-देशान्तरों में भ्रमण करके अपना ज्ञान बढ़ाता है। कोई अन्वेषण करता है, तो कोई साहित्य-सेवा करता है। तात्पर्य यह कि कोई खाली नहीं पड़ा रहता। उनको बेकार पड़े रहने में कोई आनन्द नहीं मिलता।

जो लोग अमीर होते हैं उन्हें जीविका कमाने की कोई चिन्ता नहीं होती। अतएव अपना सारा समय वे अपने रुचिकर काम में लगा सकते हैं। उनको नये-नये प्रयोग करने के लिए रुपया खर्च करने में भी कोई सङ्कोच नहीं होता। इसलिए नाना प्रकार के प्रयोग करके ये लोग उन्नति के नये-नये साधन ढूँढ़ा करते हैं। इन्हीं लोगों की बदैलत योरप और

अमेरिकावालों ने मनुष्य से सम्बन्ध रखनेवाले हर एक कला-कौशल में आश्चर्यजनक उन्नति कर ली है और करते जा रहे हैं ।

हमारे देश में जितने कला-कौशल हैं, मूर्ख तथा निर्धन मनुष्यों के हाथों में हैं । उन्हें पेट ही से अवकाश नहीं मिलता, वे उन्नति के नये-नये साधन कैसे ढूँढ़ सकते हैं ? इसी लिए आज भी हम उन्हीं औजारों का और काम करने की विधि का प्रयोग करते हैं जो हमारे पूर्वज सहस्रों वर्ष पहिले काम में लाते थे । हमारे पढ़े-लिखे और धनी आदमी तो हाथ से काम करना अपनी शान के खिलाफ़ समझते हैं ।

पूर्व काल में जब हम उन्नति के शिखर पर आरूढ़ थे तो हमारे यहाँ के राजे-महाराजे तथा धनी मनुष्य भी कला-कौशल के नये-नये साधन ढूँढ़ने में लगे रहते थे । राजा जनक स्वयं हल चलाते थे । नल अश्वविद्या में अद्वितीय थे । नकुल गौओं के पालन में बड़े चतुर थे । भीम पाकशास्त्र में तथा अर्जुन नाचने-गाने में बहुत निपुण थे । उस समय कोई काम नीच नहीं समझा जाता था । ये लोग इन कामों को रुपया कमाने के लिए नहीं सीखते थे किन्तु मनोविनोद तथा देश के हित के लिए ।

गोपालन का कार्य जितना लाभदायक है उतना ही आनन्ददायक भी है । जो लोग गाय रखते हैं उनके

चित्त में सदा गाय के प्रति सहानुभूति, अनुराग, उत्सुकता, रोचकता और आशा बनी ही रहती है, क्योंकि वे अपने प्रयोगों का परिणाम जानने के लिए उतावले रहते हैं। इंग्लिस्तान तथा योरप के अन्य देशों में बड़े-बड़े रईस, व्यापारी और जमींदार गो-पालन से अनुराग रखते हैं। उनके बड़े-बड़े बागों में अब हिरन के स्थान पर सुन्दर तथा विशेष-गुण-सम्पन्न गायों का अधिकार होता जा रहा है। वे लोग बड़े गर्व के साथ अपने मित्रों को अपनी गौएँ दिखलाते हैं और उनके गुण बताते हैं। इन गौओं से इनके उद्यानों की शोभा तथा उपयोगिता दोनों बहुत बढ़ गई हैं। मृगों से उद्यानों की कुछ शोभा ही बढ़ जाती थी। इसके अतिरिक्त और कुछ भी लाभ नहीं था। गौओं से इन लोगों का चित्त भी बहलता है और साथ ही लाभ भी होता है। गायों, भेड़ों तथा दूसरे पशुओं की नसल बहुधा इन धनी पुरुषों ही ने बहुत कुछ सुधारी है और सुधारने में लिप्त तथा प्रस्तुत रहते हैं। जिस मार्ग से बड़े लोग चलते हैं उसी का साधारण जनता भी अनुगमन करने की चेष्टा किया करती है। इसलिए साधारण गृहस्थ और किसान लोग भी नई-नई बातों तथा नई नसल के पशुओं को पसन्द करने लगे; और ये नये ढंग तथा पशुओं की नई नसलें सारी जनता में फैल गईं। इस प्रकार बाबा आदम के समय के ढंगों और पशुओं की उन्नति हो गई और हो रही है।

योरप और अमेरिका में अब बुद्धिमान् ग्वालों तथा उन धनी पुरुषों को, जिनके पास समय है, अच्छी-अच्छी नसलों के पशु पालने तथा उनकी नसलों को सुधारने की लगन है। व्यवसायी लोग भी इस कार्य की उपयोगिता को भली भाँति समझ गये हैं। वे लोग इस आवश्यक मनो-विनोद के कार्य में भाग लेना अपना सौभाग्य समझते हैं। अमेरिका के बड़े-बड़े धनी-मानी तथा उच्च पदाधिकारियों ने अन्य देशों से उच्च वंश के पशु मँगवाकर उनका अपने देश में प्रचार किया है। इन लोगों ने अपने देश में उपयोगी पशुओं के वंश की वृद्धि तथा प्रचार में धन और समय की परवा बिल्कुल नहीं की। इन लोगों ने अन्य देशों के उपयोगी और लाभदायक ढंगों का भी अपने देश में प्रचार किया।

उनके इस परिश्रम तथा उद्योग से देश की साधारण जनता ने प्रचुर लाभ उठाया। यदि ये धनी लोग इस कार्य से अनुराग न दिखलाते तो कृषि तथा पशु-पालन के कार्य में योरप तथा अमेरिका इतनी उन्नति न कर पाते। वास्तव में इन सज्जनों ने मनुष्यजाति तथा गोवंश का बड़ा उपकार किया है।

क्या हमारे राजा-महाराजा, धनी, सेठ, साहूकार, व्यापारी तथा विद्वान् योरप और अमेरिकावालों का अनुकरण करके देश तथा गौ माता का उद्धार न करेंगे ? जब हम योरप-वालों का ऊपरी बातों में—जैसे खाने-पीने, कपड़े, चाल-ढाल

आदि में—अनुकरण कर रहे हैं, तो हमें उनकी इन उपयोगी बातों का भी अनुकरण करना चाहिए।

हमारे देश में समय का अभाव नहीं है। बेकारी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। बी० ए० और एम० ए० को साठ-सत्तर रुपये की नौकरी बड़ी कोशिश करने पर भी नहीं मिलती। राजा-महाराजा और धनकुबेर लाखों रुपया शराब और वेश्यागमन में खर्च कर देते हैं। लाखों का दान मोटे-ताजे फकीरों तथा लँगड़ी-लूली गौओं की रक्षा के लिए दिया जाता है। क्या गौओं को दीन-हीन तथा लँगड़ी-लूली होने से बचाने और गौ की असली रक्षा के लिए हम लोग कुछ धन और समय नहीं निकाल सकते ?

जैसे बड़े-बड़े शहरों में प्रतिवर्ष फूलों की प्रदर्शिनियाँ होती हैं वैसे ही गौओं की प्रदर्शिनियों का भी प्रबन्ध करना चाहिए। इनमें विदेशों के उत्तम पशु तथा उपयोगी औज़ार भी दिखलाने चाहिए। प्रत्येक गौ और बैल पर मालिक के नाम का टिकट लगा देना चाहिए। जिनके पशु सर्वोत्तम हों उनको पारितोषिक देना चाहिए। एक सभा करके पारितोषिक पानेवालों की प्रशंसा करनी चाहिए तथा उनके नाम समाचारपत्रों में छपवा देने चाहिए। इन प्रदर्शिनियों में बड़े-बड़े धनी-मानी तथा सरकारी उच्च पदाधिकारियों को अवश्य भाग लेना चाहिए।

ऐसी प्रदर्शिनियों से बहुत लाभ होगा—

(१) इनसे सर्वसाधारण में गौ-सम्बन्धी बहुत सी बातों का प्रचार हो जावेगा ।

(२) जनता उत्तम तथा दुधार गौओं में विशेष अनुरक्त हो जावेगी ।

(३) उत्तम पशु रखने तथा उनकी नसल की उन्नति करने में लोगों को प्रोत्साहन मिलेगा ।

सत्रहवाँ प्रकरण

पशु-चिकित्सा

स्वाभाविक अवस्था में रहने तथा मनुष्य की बुद्धि और अनुभव से रक्षित होने के कारण पशु को बिल्कुल निरोग रहना चाहिए। पशुओं के आहार को भी हम उनकी आवश्यकता के अनुसार न्यूनाधिक कर सकते हैं जो मनुष्यों के लिए करना प्रायः असम्भव है।

पशुओं को रोग केवल हमारी असावधानी या ग़लत इलाज से होता है। बहुधा गोरुओं को रोग गर्मी, सर्दी या सील लग जाने के कारण, आहार कम या बुरा मिलने के कारण या एकदम कम और बुरा आहार पानेवाले पशु को पौष्टिक और अधिक आहार देने से होते हैं। जब पशु बुरे आहार, बुढ़ापे या और किसी कारण से निर्बल हो जाता है तो उसे गर्मी, सर्दी या सील अधिक दुःखदायी हो जाती है। ऋतुओं की अत्यन्तता से सुरक्षित तथा आराम से रखा जानेवाला पशु थोड़ी सी गर्मी, सर्दी या सील से बीमार हो जाता है। अधिक या बुरे आहार या गन्दगी से भी पशु रोगी हो जाता है। यही पशुओं के रोगी होने के मुख्य कारण हैं।

पशु के रोगी होने पर उसकी चिकित्सा में धन और समय व्यय करने की अपेक्षा उसको निरोग रखने का यत्न करना श्रेयस्कर है ।

जब पशु सावधानी के साथ अच्छी तरह रखा जाता है तो वह रोगी बहुत कम होता है ।

पशुओं के रोग दो प्रकार के होते हैं—(१) छूत की बीमारियाँ । ये रोगी पशुओं से मिलने से हो जाती हैं । (२) रोग जो आहार तथा देख-रेख की असावधानी से हो जाते हैं ।

अब हम पशुओं के वे रोग जिनसे वे बहुधा पीड़ित रहते हैं, उनके कारण तथा उनकी चिकित्सा बतावेंगे ।

(१) आँखों में से पानी जाना—ठण्डे पानी में थोड़ी सी फिटकरी घोलकर आँखों को दिन में तीन या चार बार अच्छी तरह धोना चाहिए ।

(२) आँखों का दुखनी आना—आँख में लकड़ी या और किसी चीज़ के आघात से, रेत या कीड़े-मकोड़े के पड़ जाने से अथवा सर्दी, गर्मी या सील से आँखें दुखनी आ जाती हैं ।

लक्षण—आँखें सूज जाती हैं, लाल हो जाती हैं, पानी बहने लगता है, रोशनी और चमक बुरी लगने लगती है और मैल बहुत आता है ।

चिकित्सा—आँखों को गुलाब-जल और फिटकरी से दिन में चार बार खूब अच्छी तरह धोना चाहिए। मैल और गरद सब सावधानी से हटा देना चाहिए। आँख पर पट्टी बाँध देनी चाहिए ताकि आँखों को चौंधा न लगे।

बहुधा ग्वाले आँखों के दुखने की परवा ही नहीं करते हैं। ऐसा करने से पशु को बहुत कष्ट होता है।

(३) **सींग का टूट जाना**—कभी-कभी पशुओं के सींग, आपस में लड़ने से, गिर जाने से या आघात से टूट जाते हैं। टूटे हुए भाग में से खून बहुत निकलता है और यदि वह तुरन्त ही नहीं रुक जाता तो पशु के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है।

चिकित्सा—जब सींग को थोड़ी सी ही चोट लगे तो नीम का तेल या फनील और पानी लगाकर, तख्ते के टुकड़े का सहारा देकर, उसे कपड़े से बाँध देना चाहिए।

यदि सींग बीच में से टूट जावे या बिलकुल टूट जावे और खून निकलने लगे तो घाव को ठण्डे पानी और फिटकरी से धोकर पट्टी से बाँध देना चाहिए और नीम के तेल या फनील और पानी से पट्टी को भिगो देना चाहिए।

(४) **घाव**—चोट लगने से या तो शरीर सूज जाता है या उसमें घाव पड़ जाता है। यदि पशुओं के घाव धोकर साफ रखे जावें और उन पर मक्खियाँ न बैठने दी जावें तो वे शीघ्र ही अच्छे हो जाते हैं। मवाद और मट्टी हटा देनी

चाहिए। साधारण घावों को धोकर गीली पट्टी से बाँध देने से ही बड़ी जल्दी आराम हो जाता है। पट्टी को हमेशा गीला रखना चाहिए। घाव की जलन को पानी कम कर देता है, और वह स्वाभाविक रूप से भरने लगता है। सूजन पर भी ठण्डे पानी की पट्टी बाँधने से बड़ी जल्दी आराम हो जाता है।

यदि घाव बड़ा हो, और मवाद पड़ गया हो तो उसको नीम के पानी से (नीम की पत्तियों को पानी में खूब औटाकर) धोना चाहिए और मोम, नारियल का तेल या धोया घी और नीला थोथा मिलाकर लगाना चाहिए। घाव पर केवल नीम का तेल लगाना भी अच्छा होता है। इससे घाव पर मक्खियाँ नहीं बैठती हैं और वह अपने आप ही भरने लगता है।

(५) **खुजली** (Mange)—खुजली बहुधा बच्चों को होती है।

चिकित्सा—पशु को साबुन और तारपीन से निल्हाकर गन्धक और नीला थोथा लगा देना चाहिए।

(६) **दाद**—गौ के बच्चों को बहुधा दाद हो जाते हैं। इससे उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

चिकित्सा—ऊपर के खुण्ड उतारकर तारपीन और नीला थोथा दिन में तीन-चार बार लगा देना चाहिए।

(७) **खाँसी**—इसमें पशु को बाँस के हरे पत्ते देने चाहिए। तारपीन की दस से बीस बूँद तक दो छटाँक

गुनगुने अलसी के तेल में मिलाकर देनी चाहिए। थोड़ा सा रेचक चूरण भी लाभकारी होता है।

(८) बिलकी पड़ जाना (अनछरा रोग)—जुगाली करनेवाले पशुओं की जीभ पर तथा गाल के अन्दर की तरफ छोटे-छोटे काँटे से होते हैं।

यह काँटे कभी-कभी लम्बे और सख्त हो जाते हैं और गाल, होठ और जिह्वा मुलायम। ऐसी दशा में पशु को खाने में बहुत कठिनाई होती है। कुछ काल के बाद मुँह पीला तथा जिह्वा मैली हो जाती है और मुँह में से दुर्गन्ध आने लगती है। जिह्वा पर एक मांस का लोथड़ा सा पैदा हो जाता है।

दुधार गौओं का दूध सूख जाता है। यदि इलाज तुरन्त नहीं किया जावेगा तो पशु भूखी मर जावेगा।

चिकित्सा—काला जीरा, काली मिर्च, आँबा हल्दी को बराबर लेकर कूट, पीस और कपड़छान करके जीभ पर कई बार मलना चाहिए। अथवा दो तोले धावे के फूलों को रात को पानी में भिगो देवे और सबेरे एक तोला सेंधा नमक, ६ माशे रसौत, १ तोला कलमी शोरा, १ तोला समुद्रफेन कूट-पीसकर जीभ पर मलने से रोग जाता रहता है।

यह बीमारी पेट की खराबी से होती है। सबेरे पशु को आध सेर अलसी (तीसी) का तेल देना चाहिए और सबेरे-शाम आधी छटाँक रेचक चूर्ण।

गेहूँ के दलिये में आधी छटाँक नमक डालकर खाने को देना चाहिए ताकि पशु निर्बल न होने पावे ।

यदि बिलकी बहुत बड़ी हो और इससे आराम न हो तो लोहा गर्म करके उनको और मांस के लोथड़े को जला देना चाहिए और हल्दी को पानी में पीसकर लुगदी सी बनाकर जलाये हुए भाग पर लगा देना चाहिए ।

(८) मादा रुक जाना—बच्चे के पैदा होने के बाद तुरन्त पानी दे देने से या दुर्बलता के कारण मादा रुक जाता है ।

बच्चे के पैदा होने के बाद गौ को बाँस के पत्ते और थोड़ा सा पुराना गुड़ देना चाहिए । दो सेर पुराना गुड़, दो छटाँक अजवायन और दो छटाँक सोंठ को उबालकर ठण्डा होने पर देना चाहिए । २४ घंटे के अन्दर सब मादा खारिज हो जाना चाहिए । यदि २४ घंटे में मादा खारिज नहीं होता है तो बड़ी गड़बड़ हो जाती है । गौ को ज्वर आ जाता है और दूध बहुत कम हो जाता है । जब मादा स्वाभाविक रीति से न निकले तो किसी चतुर ग्वाले को बुलाकर हाथ से निकलवा देना चाहिए । जब मादा अन्दर रह जाता है तो दुर्गन्ध सी आने लगती है । हलका सा जुल्लाव भी देना चाहिए ।

(१०) गर्भपात या बच्चे का जल्दी पैदा हो जाना—गर्भपात के पहिले गौ बहुत बेचैन हो जाती है । हल

मारती है। योनि में से खून आने लगता है। बुखार आने लगता है; सुस्त हो जाती है। भूख नहीं लगती है। जुगाली नहीं करती। बगल (पेटका) में गढ़ा पड़ जाता है। चलना-फिरना नहीं चाहती है। पेट बड़ा हो जाता है। पीला द्रव पदार्थ निकलने लगता है। पेट नीचे को झुक जाता है। अन्त में बच्चा निकलता है। या तो वह मरा निकलता है या थोड़ी देर बाद मर जाता है।

गर्भपात के कारण—चेट लगने से, कूदने से, भागने से, गन्दा पानी पीने से गाभिन होने के बाद साँड़ से मेल हो जाने से, गर्मी, सर्दी लग जाने से, अथवा कमजोरी के कारण गर्भपात हो जाता है।

चिकित्सा—२ सेर पुराना गुड़, २ छटाँक अजवाइन, २ छटाँक सोंठ, ८ माशे पीपल, १६ माशे पीपलामूँड गौ को देना चाहिए। इससे पेट साफ हो जावेगा। माँहे को जहाँ तक हो तुरन्त निकलवाना चाहिए।

गर्भपात होने पर गौ को और गौओं से नहीं मिलने देना चाहिए; क्योंकि गर्भपात देखकर करुणा तथा सहानुभूति से और गौओं का भी गर्भपात हो जाता है।

(११) **ऐन का सूजना**—कभी-कभी दुधार गौओं के ऐन सूज जाते हैं। यदि इसका इलाज ठीक समय पर नहीं किया जाता है तो यह बड़ा आपत्तिजनक हो जाता है क्योंकि इससे गौ का दूध सूख जाता है।

कारण—ठण्ड या चोट लग जाने से या और किसी कारण बच्चा पैदा होने के पहिले या बाद में ऐन में विकार हो जाने से अथवा बच्चा पैदा होने के पहिले अधिक आहार देने से ऐन सूज जाते हैं। यदि गौ को नहलाने के या ऐन को धोने के बाद, उसको अच्छी तरह पोछकर सुखा नहीं लिया जाता है तो सम्भव है वह सूज जावे। यदि बियाने के पहिले दूध अधिक उतरता हो और उस समय धार न काढ़ी जावे तो भी दूध के जमने या ऐन के सूजने की सम्भावना है। यदि गौ कासारा दूध नहीं काढ़ा जाता है और ऐन में कुछ रह जाता है तो ऐन के सूज जाने का डर रहता है। कभी-कभी बियाते ही गौ को ठण्डा पानी पिला देने से भी ऐन सूज जाता है। दूध पीते समय बच्चे के सिर मार देने से या थन फट जाने से ऐन सूज जाता है।

इससे गौओं की रक्षा तथा इलाज तुरन्त करना चाहिए अन्यथा बड़ी हानि होती है।

लक्षण—ऐन सूज जाते हैं, कड़े हो जाते हैं तथा दर्द करने लगते हैं। ऊपर की खाल लाल हो जाती है। दूध कम हो जाता है तथा जम जाता है। कभी-कभी दूध के साथ खून भी आने लगता है। गौ बच्चे को दूध नहीं पीने देती तथा दूध दुहते समय भी उछलती है।

दूध चढ़ जाने से गौ को ज्वर भी आ जाता है। गौ लंगड़ी हो जाती है और ऐन में मवाद पड़ जाता है।

चिकित्सा—किसी बर्तन में नीम के पत्ते उबालकर उसको ऐन के नीचे रख देना चाहिए ताकि नीम की भाप ऐन के लगे । अच्छी तरह नीम की भाप लग जाने के बाद ऐन को कपड़े से पोछकर सुखा लेना चाहिए । फिर हल्दी चूने को पानी में पीसकर ऐन पर लेप करना चाहिए । तीन-चार दिन तक पशु को गर्म पानी में सेर सवा सेर अण्डी का तेल देना चाहिए । तुरन्त इलाज करने से बहुत सी विपत्ति से बच सकते हैं ।

गौ को हलका तथा सादा खाना देना चाहिए जैसे चोकर, हरी घास आदि । आहार के साथ नमक भी देना चाहिए । पानी बहुत ठण्डा न होना चाहिए । ऐसी दशा में गौओं को गरिष्ठ आहार नहीं देना चाहिए ।

(१२) **थनों का फटना**—चोट लगने, बच्चे के काटने या बुरी तरह दूध दुहने से थन फट जाते हैं । ऐन या थनों में खीस (colostrum) के लगे रहने से भी वे फट जाते हैं । ठण्ड, तेज़ हवा या गन्दगी के कारण भी थन फट जाते हैं ।

चिकित्सा—दिन में कई बार गर्म अण्डी का तेल ऐन और थनों पर लगाना चाहिए । पानी में नीम की पत्तियाँ उबालकर उठती हुई भाप थनों पर लगानी चाहिए । गौ को जुल्लाव देना चाहिए । सेर भर अण्डी का तेल या सवा सेर

घी और दो छटाँक काला ज़ीरा देना विशेष लाभदायक होता है ।

यदि थन कुछ सूज जावें तो एक तवा खूब लाल गर्म करके थनों के पास रखकर दूध काढ़ना चाहिए । थनों में भाप लगने से बहुत लाभ होगा ।

(१३) **पेट का दर्द** (colic pain)---ठण्डे, सड़े-गले चारे, कड़ी घासों, गन्दे पानी से, अधिक खाने से, आहार को एकदम बदल देने से या खाते ही ठण्डा पानी पीने से पेट में दर्द हो जाता है ।

लक्षण—पैर से भूमि खोदना, सींग या पीछे के पैरों से पेट को खुजाना या मारना, दाँत पोसना, कराहना तथा बार-बार उठना-बैठना । यदि पेट में वायु रुक जाती है तो पेट फूल जाता है और बहुधा पाद या डकारें आने लगती हैं ।

चिकित्सा—२ छटाँक बरेण्डो, १ छटाँक काला नमक, ३ छटाँक पिसी हुई सोंठ, १ छटाँक अजवायन, १० रस्ती का फूर और पाव भर से आध सेर तक अलसी का तेल लेकर अच्छी तरह मिलाकर देना चाहिए । इस दवा के देने के दस मिनट बाद सेर सवा सेर गर्म पानी पीने को देना चाहिए । अथवा करञ्ज की गरी और तम्बाकू के पत्ते को पीसकर आटे के लड्डू के साथ देना चाहिए ।

गौ को हलका भोजन देना चाहिए और दर्द की जगह को मलना चाहिए ।

(१४) **पेट फूलना**—यह रोग अपाचन से होता है। कब्ज, अधिक खाने, दलदल या गीली जगह में चरने से हो जाता है। भूखे मरते पशुओं को अधिक आहार या अच्छी घास चरने को मिलाने से वे अधिक खा लेते हैं और पेट फूल जाता है।

लक्षण—इस रोग में पशु का पेट फूल जाता है। बाँई बगल अधिक फूली हुई मालूम होती है। फूली हुई जगह पर उँगली मारने पर वह पोली चीज़ की तरह शब्द करती है। ऐसी अवस्था में पशु न तो खाता है और न जुगाली करता है। फेन गिरने लगते हैं। जिह्वा बाहर को लटकाये रखता है। आँखें लाल हो जाती हैं तथा निकली सी पड़ती हैं। पशु बहुत बेचैन हो जाता है। साँस कठिनाई से आती है। रोग के बहुत बढ़ जाने से मुँह और नथनों से पानी और खाना निकलने लगता है। फिर पशु तड़पकर मर जाता है। यह रोग तीव्र अवस्था में तीन घंटे तक रहता है, परन्तु साधारण अवस्था में १२ घंटे तक।

चिकित्सा—पशु को थोड़ा सा इधर-उधर घुमाना चाहिए। एक बातल राई या सरसों के तेल में होंग, काली मिर्च, सोंठ पीसकर और मिलाकर देने से शीघ्र आराम मालूम पड़ेगा। पशु को जुल्लाव भी देना चाहिए। एनिमा (पानी की पिचकारी) भी लगाना चाहिए।

आराम हो जाने पर गौ को केवल थोड़ी-थोड़ी हरी घास देनी चाहिए। कुछ दिन बाद तक नमक और थोड़ा सा रेचक चूर्ण भी देना चाहिए।

(१५) अजीर्ण—कड़ी अथवा गरिष्ठ वस्तु खा लेने से या गन्दा पानी पी लेने से गौओं को अजीर्ण हो जाता है।

लक्षण—सुस्ती, दर्द, नाड़ी का वेग से चलना, अधिक चारा खा लेने से पेट फूल जाता है विशेष कर बाईं तरफ़ का। परन्तु उँगली मारने से भरी हुई जगह का सा शब्द होता है। दबाने से फूली हुई जगह दब जाती है। कब्ज हो जाता है। साँस रुक-रुककर आती है। दाँत पीसने लगता है। दर्द के कारण पशु बैठता नहीं है। गर्दन आगे को किये खड़ा रहता है। बाईं तरफ़ को दबाने से तकलीफ़ होती है। पशु दहिनी करवट सोना चाहता है पर सो नहीं सकता।

चिकित्सा—सरसों के तेल में थोड़ा सा नमक डालकर शरीर पर मलना चाहिए, विशेष कर पेट के भाग पर। देसी शराब की एक बोतल देनी चाहिए। फिर १३ सेर घी, ३ छटाँक काली मिर्च पीसकर देना चाहिए। दिन में दो बार २ सेर पुराना गुड़ और दो छटाँक अजवायन देनी चाहिए। कभी-कभी पशु को पानी में डाल देने से भी आराम हो जाता है। क्योंकि इससे पशु को उलटी आने लगती है। इस रोग में शीघ्र चिकित्सा न करने से पशु मर जाता है।

(१६) **संग्रहणी** (Diarrhoea)—यह बीमारी बद-हजमी से होती है । इसमें बहुत पतले दस्त आते हैं । बहुधा उबर या और कोई विकार शरीर में नहीं होता है । जब रोग पुराना हो जाता है तो अँतड़ियाँ सूज जाती हैं और रोग आँव खून के सदृश मालूम होता है । इस रोग से पीड़ित पशु बहुत कम खाता है और न जुगाली ही ठीक समय पर करता है । मूत्र कम आता है और पशु अलग खड़ा रहना पसन्द करता है ।

कारण—यह रोग खराब, सड़ा-गला भूसा, घास या गर्म और तीते पौधे खाने या गन्दा पानी पीने से होता है । अधिक चारा खाने से, आहार के एकदम बदल देने से, रेचक अधिक मात्रा में देने से भी यह रोग हो जाता है । अधिक गर्मी से भी यह रोग हो जाता है ।

लक्षण—पतले दस्त बहुधा आते हैं । दस्त आने में न तो तकलीफ़ होती है और न ज़ोर ही लगाना पड़ता है ।

चिकित्सा— $\frac{1}{2}$ छटाँक चाक, $\frac{1}{2}$ छटाँक कत्था, $\frac{1}{2}$ माशे अफीम, $\frac{1}{2}$ छटाँक गोंद को मिलाकर जौ के आटे की लोई के साथ देना चाहिए ।

दिन में एक-दो बार पकी हुई बेल को थोड़े से पानी में घोलकर एक या दो तोले रेचक चूर्ण के साथ देने से भी फ़ायदा होता है ।

जौ का सत्तू गर्म पानी में घोल कर ठण्डा हो जाने पर देना चाहिए। आराम हो जाने पर जौ का दलिया, मुलायम दूब और दोनों समय एक माशे रेचक चूर्ण देना चाहिए।

(१७) **आँव-खून के दस्त**—यह रोग ठण्ड या सील के लग जाने से, गन्दा पानी पीने से, ज्यादा गर्मी से, ज्यादा परिश्रम से, एकदम दूध के बन्द हो जाने से या दस्तों के बढ़ जाने से हो जाता है।

लक्षण—इसमें मरोड़ा बहुत होता है और बहुत ज़ोर करने पर थोड़ा सा दस्त होता है। दस्त पतला होता तथा गोबर के साथ आँव-खून भी आती है।

चिकित्सा—अलसी, जौ का आटा और पिसी हुई काली मिर्च को उबालकर देना चाहिए। मक्खन निकले दूध में भुने हुए जौ के आटे को मिलाकर खाने को देना चाहिए।

(१८) **पशु को विष चढ़ जाना**—कभी-कभी पशु आहार के साथ विष खा जाता है या चमार खाल के लालच से गौ को विष दे देते हैं।

लक्षण—विष के चढ़ जाने पर पशु एकदम बीमार पड़ जाता है। वह काँपने लगता है। पेट में दर्द होने लगता है। मुँह में फेन आने लगते हैं। प्यास बहुत लगती है। पेट फूल जाता है। दस्त पानी सा पतला आने लगता है। गोबर

बहुधा करने लगता है। चिकित्सा ठोक और तुरन्त न होने से पशु दो-चार घंटे में मर जाता है।

चिकित्सा— $1\frac{1}{2}$ सेर घी या ख़ालिस अलसी का तेल प्रत्येक घंटे के बाद देना चाहिए।

(१६) बच्चों को दस्त आना—यह रोग बच्चों को दूध न पचने तथा दूध पेट में जम जाने के कारण होता है रोग के आरम्भ में कब्ज़ होता है और फिर दस्त आने लगते हैं। यदि इसका तुरन्त इलाज नहीं किया जाता है तो सम्भवतः बच्चा मर जावेगा।

चिकित्सा—बच्चे की आयु तथा स्वास्थ्य के अनुसार पिसी हुई सोंठ को एक चम्चा भर से दो चम्चे भर तक दूध के साथ देना चाहिए। आहार एक तिहाई से आधे तक कम कर देना चाहिए। सोंठ आरम्भ में कम देनी चाहिए। बच्चे को अलसी, काली मिर्च और भुने हुए जौ के आटे को पानी में उबालकर और नमक डालकर देना चाहिए।

(२०) सीतला (Rinderpest) बहुत भयानक रोग है। इसी रोग से प्रतिवर्ष लाखों पशु मर जाते हैं। यह केवल बड़े यज्ञ से ही दबाया जा सकता है। यह लगनी बीमारी है और शीघ्र ही उड़कर आस-पास रहनेवाले अन्य पशुओं को लग जाती है। यह भेड़ और बकरियों को भी हो जाती है। इसका जोर चार से चौदह दिन तक रहता है। यह जाड़े गर्मी सब ऋतुओं में होती है। इस रोग की तीन

अवस्था हैं। इस रोग में सबसे पहिले शरीर गर्म हो जाता है (शरीर का ताप बढ़ जाता है)। शरीर का ताप बढ़ने के २४ घंटे बाद और लक्षण प्रकट होने लगते हैं। पहले-पहल पशु को कब्ज हो जाता है और गोबर बहुत थोड़ी-थोड़ी मात्रा में करता है। इस समय केवल अनुभवी मनुष्य ही बिना थर्मामीटर लगाये रोग को पहिचान सकते हैं क्योंकि इस समय तक पशु स्वाभाविक रीति से आहार खाता है।

एक या दोनों आँखों में से आँसुओं का अधिक बहना इस रोग का निश्चित लक्षण है, विशेष कर यदि उनके बहने के स्थान से एक बहुत पतली सी खाल हट जावे। ये आँसू स्वाभाविक आँसुओं से भिन्न होते हैं। उस भाग को, जहाँ ये बहते हैं, मलने से पतली सी खाल उतर आती है।

उन भागों में जहाँ सीतला फैल रही हो, इस प्रकार के आँसू आते ही पशुओं की विशेष देख-रेख करनी चाहिए। सम्भव है, आँसू और किसी कारण से हों; पर सावधान रहना सर्वदा अच्छा है।

यदि एक-दो दिन के बाद रोग के और कोई लक्षण न प्रकट हों तो समझना चाहिए कि पशु निरोग है। जब रोग फैला होता है तो रोग के पहिचानने में आँसुओं से बहुत सहायता मिलती है।

किसी पशु के रोगी होने की शङ्का होते ही उसे और पशुओं से अलग कर देना चाहिए क्योंकि यह बहुत लगनी

बीमारी है। सब पशुओं को तीन श्रेणियों में विभाजित कर देना चाहिए—(१) रोगी पशु, (२) शङ्कित पशु, और निरोगी पशु। ऐसा न करने से रोग सब पशुओं में फैल जाता है और बड़ी हानि होती है।

इस अवस्था के बाद दूसरी अवस्था में पशु सुस्त मालूम होता है, निर्बल हो जाता है, जुगाली ठीक नहीं करता और खाना भी नहीं खाता है। दुधार गौओं का दूध कम हो जाता है; खाल कड़ी हो जाती है और पशु काँपने लगता है। योनि का रङ्ग हलका गुलाबी हो जाता है। पशु अकड़ई लेता है। सूखी खाँसी आती है, नाड़ी वेग से चलने लगती है। साँस ठीक नहीं आती है। पशु पीड़ा के कारण कराहता है। साँस में से दुर्गन्ध आने लगती है और शरीर के कुछ भाग ठण्डे हो जाते हैं।

रोग की अन्तिम अवस्था में पानी से पतले तथा मटमैले पोले दस्त आने लगते हैं। गोबर लसलसा तथा रक्तयुक्त होता है और उसमें दुर्गन्ध आने लगती है। पहिले तो दस्त बहुत जोर लगाने से आता है पर बाद में रोग के बहुत बढ़ जाने पर वह अपने आप ही टपक पड़ता है। खाल सूख जाती है और कमर तथा गर्दन सूज जाती है। फेन बहुत आते हैं। होठ, तालू और मसूड़ों में घाव पड़ जाते हैं। नाक में से हलके गुलाबी रङ्ग का पानी निकलने लगता है। यदि शरीर पर दाने निकल आवें तो समझना चाहिए कि पशु सम्भवतः बच जावेगा।

सीतला यदि ज़ोर से निकलती हो तो पिछली दशा में पशु दो-चार दिन में मर जाता है ।

कारण—खुश्क ऋतु, पानी का न बरसना, आहार का अभाव होना, गर्मी या सर्दी का लग जाना या दूसरे पशुओं से बीमारी का लग जाना ।

चिकित्सा—एक छटाँक चिर्चैरी की हरी जड़, एक छटाँक जोखा के हरे पत्ते और एक छटाँक सेंभल रुई के पेड़ के काँटों को खूब बारीक पीसकर दिन में तीन बार १० रत्ती से २० रत्ती तक देना चाहिए ।

दस्त लगने से पहिले पशु जितना ठण्डा पानी पीवे देना चाहिए, परन्तु जब दस्त आरम्भ हो जावें तब बहुत थोड़ा ठण्डा पानी देना चाहिए । गेहूँ या जौ के दलिये में नमक और काली मिर्च डालकर खाने को देना चाहिए । कोई चीज़ गर्म नहीं देनी चाहिए । सबको ठण्डा करके देना चाहिए । जब पशु अच्छा होने लगे तब उसे दलिये के अतिरिक्त थोड़ी सी हरी घास भी देनी चाहिए । कड़ा, सूखा और भारी आहार अच्छा होने के कुछ दिन तक नहीं देना चाहिए ।

पशु के मुँह को नमक के गर्म पानी से धोना चाहिए और उसको साफ़ हवा में रखना चाहिए । यदि खाल में बहुत पोड़ा होती हो तो नीम के पानी में थोड़ी सी हल्दी मिलाकर पशु के शरीर पर डालना चाहिए । रोगी गौ का

दूध बच्चे को कभी नहीं पीने देना चाहिए, जहाँ तो बच्चे को भी यही रोग हो जावेगा।

रोगी गौ का दूध नित्य निकालकर गाड़ देना चाहिए। यदि दूध नहीं निकाला जावेगा तो गौ का ऐन तन जावेगा और उसको बड़ी पीड़ा होगी।

गौ का मकान साफ रखना चाहिए और गोबर को तुरन्त जला या गाड़ देना चाहिए। गन्धक मकान में जलानी चाहिए और रात को धुआँ भी कर देना चाहिए। फनील और गर्म पानी से मकान धोना चाहिए।

जब सीतला आपके ज़िले में फैल रही हो तब सब पशुओं को ऊपर बताई हुई दवा तीन दिन तक देनी चाहिए। यदि इस रोग का उचित प्रबन्ध नहीं किया जावेगा तो सम्भव है गाँव की सारी गौएँ मर जावेंगी।

(२१) फुन्सी, खुरहा और जीभी—यह बहुत लगनी बीमारी है। इसमें तेज़ ज्वर आता है और मुँह, ऐन और पैरों में एक तरह की फुन्सियाँ हो जातो हैं। यह फुन्सी फटकर घाव पड़ जाता है।

यह रोग छूत या गन्दगी से होता है। जहाँ पशु सफ़ाई से रखे जाते हैं वहाँ यह रोग नहीं पाया जाता है।

हिन्दुस्तान के किसी न किसी भाग में यह रोग हुआ ही करता है। इस रोग से पीड़ित पशु का दूध पीने से मनुष्य रोगी हो जाता है।

लक्षण—सर्दी लगकर ज्वर आता है। मुँह और सींग के सिरे गर्म हो जाते हैं। होठों से शब्द करने लगता है और फेन गिरने लगते हैं।

इन लक्षणों के प्रकट होने के बाद बैल के मुँह और पैरों पर और गौओं के ऐन पर भी मटर के बराबर छाले पड़ जाते हैं। ये अठारह या चौबीस घंटे में फूट जाते हैं और लाल घाव पड़ जाते हैं जो या तो शीघ्र ही भर जाते हैं या पक जाते हैं।

पैर और मुँह में घाव होने के कारण पशु कुछ नहीं खाता है। रोगी बैलों से काम नहीं लेना चाहिए।

इस रोग से पीड़ित गौओं को दुहकर साबुन से हाथ अच्छी तरह धो लेने चाहिएँ नहीं तो और पशुओं को भी रोग लग जावेगा।

इस रोग को कभी-कभी लोग ग़लती से सीतला समझ जाते हैं। इसमें दस्त नहीं आते। इसके विपरीत सीतला में आँव-खून के दस्त अवश्य आते हैं।

यदि पशु की देख-रेख उचित प्रकार से होगी तो ज्वर तीन-चार दिन में जाता रहेगा और पशु दस-पन्द्रह दिन में अच्छा हो जावेगा।

चिकित्सा—कोई २० सेर गर्म पानी में १ छटाँक नमक घोलकर मुँह को दिन में तीन बार धोना चाहिए। फ़नील,

गर्म पानी और साबुन से या गरम पानी में फिटकिरी घोलकर पैर और खुर अच्छी तरह धोने चाहिए ।

४ छटाँक सरसों का तेल, २ छटाँक तारपीन, २ छटाँक काफूर और २ छटाँक फनील को मिलाकर घावों पर लगाना चाहिए ।

इसको ऐन और थनों के घावों पर भी लगाना चाहिए । यदि मुँह पर मक्खियाँ बैठती हैं तो तेल में काफूर मिलाकर लगा देना चाहिए ।

जब ज्वर जोर का हो तो निम्नलिखित दवाई देनी चाहिए—

खारी नमक १ छटाँक, चिरायता दो तोले, कलमी शोरा ६ माशे, सेर भर जल में घोलकर कई बार थोड़ा-थोड़ा पिलाना चाहिए ।

जितने दिन तक आराम न हो उतने दिन तक दूब खाने को और माँड़ में नमक मिलाकर ठण्डा करके पीने को देना चाहिए ।

(२२) गर्मी—यह बीमारी लगनी है । आरम्भ में शरीर के कुछ भाग लाल हो जाते हैं । फिर ऐन और थनों पर कुछ लाल-लाल दाने हो जाते हैं, ज्वर तेज़ हो जाता है; मुँह से फेन गिरने लगते हैं ।

चिकित्सा—पशु को अलग रखना चाहिए, नीम के गर्म पानी से लाल हिस्सों को धोना चाहिए और घी या

मक्खन में नीम का तेल डालकर लगाना चाहिए । सारा दूध दुह लेना चाहिए ।

थनों के नीचे भाप निकलता हुआ एक पानी का बर्तन रख देना चाहिए । फिर ऐन और थनों को गुनगुने पानी से धोकर कपड़े से सुखा लेना चाहिए । अब उन पर थोड़ा सा मक्खन या घी लगा देना चाहिए । ऐसा करने से दूध दुहने में आसानी होगी ।

(२३) दूध का कम होना—यदि बिना किसी कारण गौ का दूध कम होने लगे तो पपीते के पत्ते या फल और उबला हुआ सीताफल (कद्दू) देना चाहिए ।

गौ को जुल्लाब भी देना चाहिए ।

रेचक चूर्ण या गोरुओं के लिए टैनिक्स

काला नमक	}	१ सेर
गन्धक		
सांठ		
चिरायता		
काफूर	}	१/३ सेर
अजवायन		
सरसों		
मेथी		
हल्दी	}	

को पीसकर मिला लो । १½ या दो तोले सबेरे-शाम देना चाहिए ।

इसको सत्तू, गुड़ या खाने के साथ देना चाहिए ।

गौश्रो को दवाई, रोटी के टुकड़े पर रखकर देनी चाहिए या छोंगे (बाँस की एक नली) से देनी चाहिए ।
